हजारीमल [illegible] ग्रंथमाला—प्रथम पुष्प

* श्री बीतरागाय नमः *

मंगल प्रकाश

प्रकाशक :—

मंगलचन्द मालू

HAZARIMULL MANGALCHAND.

4, Raja Woodmunt St., Calcutta.

मुद्रक :—

विश्वमित्र प्रेस

११५, हरिसन रोड, कलकत्ता।

वीर सं० २४५६ | वि० सं० १९८६
श्रीलाल सं० ९ | प्रथम वार २०००

मूल्य—वीरधर्म प्रचार।

स्वर्गीय श्रीमान पूज्य पिताजी हजारीमलजी सा

जन्म सं० [illegible] निर्वाण सं० १९८३

निवेदन।

——:o:——

उस सर्व शक्तिमान पारब्रह्म परमात्मा जिनेश्वर भगवानको अनेकानेक धन्यवाद है, जिसकी असीम कृपासे आज "हजारीमलमाल्हू ग्रन्थमाला"का प्रथम पुष्प आपके कर कमलोंमें भेंट किया जा रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ स्वर्गीय श्रीमान् पूज्य पिताजी हजारीमल जी माल्हूके संग्रहीत पद्योंका कुछ भाग है। हमारा प्रयास केवल उन्हीं पद्योंको क्रमबद्धकर प्रकाशित करना ही मात्र है। हां अन्तमें कुछ पद्य स्वरचित गुरुस्तवन आजकलके राग-रागिनियोंके रूपमें गुंथ दिया गया है। ग्रन्थमालाका यह प्रथम पुष्प जो आपके सामने विकसित है इसका रस, सौरभ भ्रमर मन-भक्त पाठक ही जान सकते हैं। मुझसे जहां तक हो सका है वहां तक सरस, हृदयग्राही और शिक्षापूर्ण पदोंको ही प्रकाशित करनेका प्रयत्न किया है। इस

कार्यमें मैं कहां तक सफल हुआ हूं यह आप लोगों की रुचिपर निर्भर है किन्तु अपना उद्देश शिक्षापूर्ण पद्योंका प्रचार करना ही मात्र है।

यह बात हर एक जिज्ञासु तथा ज्ञानी पुरुषोंको ज्ञात है कि आत्मकल्याणार्थी महात्माओं, सतियों एवं जगदुद्धारक तीर्थंकरोंका जीवन चरित्र तथा उनके दया धर्म युक्त तात्विक विचारको पढ़ सुनकर दयाधर्म रहित हीन चरितवाला पुरुष भी अपना चरित सुधार तथा दया धर्मका पालन कर सकता है। हमने भी इसी उद्देश्य तथा भावनासे भावित होकर, दयाधर्मके प्रचारार्थ यह ग्रंथ प्रकाशित करनेका साहस किया है। यदि इसके द्वारा जैन धर्म-अनुयायी अपने सहधर्मि-योंका कुछ उपकार हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

मैं कोई विद्वान या लेखक नहीं हूं और न ऐसी कुछ कुशाग्र बुद्धि ही है जिसके बल कुछ मान कर सकूं परन्तु सन्त महात्माओंका सेवक किसी अंशमें

अवश्य हूं। ऐसी अवस्थामें यदि कुछ भूल हुई हो तो सज्जन वृन्द सुधारकर पढ़ेंगे और हमें उदारता पूर्वक क्षमा करेंगे।

विनीत—
मंगलचन्द मालू।

सूचीपत्र ।

—※—

नं०	विषय	पृष्ठ

ॐ

॥ श्री महावीरायनमः ॥

॥ अथ चौबीसी पद ॥

दो०—कर्म्म कलंक निवारिने, थया सिद्ध महाराज ॥ मन बचन काये करी, वंदु तेने आज ॥

॥ ढाल ॥ उमादे भटियाणी ॥ ऐ देशी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो। प्रणमू सिरनामी तुम भणी ॥ प्रभू अंतर जामी आप। मोपर म्हैर करीजै हो। मेटी जै चिन्ता मनतणी। म्हारा काटो पुरङ्कित पाप ॥ श्री आदीश्वर स्वामी हो ॥ टेर ॥ १ ॥ आदि धरमकी कीधी हो। भर्तक्षेत्र सर्पणी काल मैं। प्रभु जुगला धरम निवार। पहिला नरवर १ मुनिवर हो २। तिर्थंकर ३ जिनहूवा ४ केवली ५। प्रभु तीरथ थाप्या चार ॥ श्री० ॥ २ ॥ सामरु दिव्या धारी हो। गज होदे मुक्ति पधारिया।

जनम्या ही परमाण । पिता नाभ म्हाराजा हो। भव देव तणो कर नर थया । प्रभू पाम्यां पद निरवाण ॥ श्री ॥ ३ ॥ भरतादिक सौ नंदन हो । वे पुत्री ब्राह्मी सुंदरी ॥ प्रभू ए थारा अंग जात । सगला केवल पाया हो । समाया अविचल जोत में । केइ त्रिभुवन में विख्यात ॥ श्री ॥ ४ ॥ इत्यादिक बहू तारया हो । जिन कुलमें प्रभु तुम ऊपना । केइ आगममें अधि-कार । और असंख्या तारया हो । ऊधारया सेवक आपरा । प्रभू सरणा ही आधार ॥ श्री ॥ ५ ॥ अशरण शरण कहीजै हो । प्रभू विरद विचारो सायबा । केइ अहो गरीब निवाज । शरण तुम्हारी आयो हो । हूं चाकर निज च-रना तणो । म्हारी सुणिये अरज अवाज ॥ ॥ श्री ॥ ६ ॥ तू करुणा कर ठाकुर हो ॥ प्रभु धरम दिवा कर जग गुरू । कैइ भव दुषदुक्कत टाल । विनयचंद नें आपो हो । प्रभू निजगुण

शुद्धि-पत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
३६	१	आनवकार	ओनवकार
४९	४	न०	व०
६२	१२	सेबी	सेवी
६६	३	ैराग	वैराग
६४	१३	समाणार	समाणीरे
६५	१३	सुपन्ने पा०	[सुपन्ने पा०]
६७	१५	सविसाहइत्ता	सविसोहइत्ता
६८	२	सूरिपन्ने	सूतिपन्ने
७७	७	नण	नेण
८३	६	जाणा	जाणी
८५	११	स्वासो	स्वामी
८८	७	ताह्यारी	ताह्यरी
९२	१५	साडियार	साडियारे
९६	१७	जायके	जोयके

पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द
१०७	१	*पडिवज्जिति	पडिवज्जति
१०७	१	*पडिवज्जता	पडिवज्जिता
१११	१	भहावीरं	महावीरं
११७	३	*अरहम	अरह
११९	२	*सारायं	साएयं
१२१	१२	झाड़	झोड़
१२२	२	चौवोसा	चौबीसी
१२८	९	पूरव्र	पूरब
१२८	१४	*धन्यात्रो	धन्याश्रो
१२९	१५	वला	बली
१३४	१६	पहत्यो	पहुल्यो
१३७	५	प्रणम्	प्रणमू
१३९	६	समद्रविजय	समुद्रविजय
१४१	४	दौपदा	द्रौपदी

*किन्हीं पुस्तकोंमें ये शब्द ठीक करवा दिये गये हैं, परन्तु जिन पुस्तकोंमें ये अशुद्धियां हों उसे सहृदय पाठक सुधार कर पढ़नेका कष्ट करेंगे।

संपंतसास्वती । प्रभू दीनानाथदयाल ॥ श्री ॥
७ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ ढाल कुविसन मारग माथे रे धिग ॥ ए देशी ॥

श्री जिन अजित नमौ जयकारी । तुम देवन को
देवजी । जय शत्रु राजा ने विजिया राणी
कौ । आतम जात तुमेवजी । श्री जिन अजित
नमौ जयकारी ॥ टेर ॥ १ ॥ दूजा देव अनेरा
जगमें, ते मुझ दाय न आवेजी ॥ तह मन तह
चित्त हमनैं एक, तुहीज अधिक सुहावैजी ॥
॥ श्री ॥ २ ॥ सेव्या देव घणा भव २ में । तो
पिण गरज न सारी जी ॥ अवकै श्री जिनराज
मिल्यौ तूं । पूरण पर उपकारी जी ॥ श्री ॥
३ ॥ त्रिभुवनमें जस उज्वल तेरौ, फैल रह
जग जानें जी ॥ वंदनीक पूजनीक सकल लो
को । आगम एम वखानें जी ॥ ॥ श्री ॥ ४ ॥
तू जग जीवन अंतरजामी । प्राण आधार पि-
यारो जी ॥ सव विधिलायक संत सहायक ।

भग्त वछल वृध थारो जी ॥ श्री ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि को दाता । तो सम अवर न कोई जी ॥ बधै तेज सेवकको दिन २, जेथ तेथ जिम होई जी ॥ श्री ॥ ६ ॥ अनंत ग्यान दर्शण संपति ले । ईश भयो अविकारी जी ॥ अविचल भक्ति विनयचंद कूं देवो । तौ जाणू रिझवारीजी ॥ श्री ॥ ७ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ आज म्हारा पारसजी नै चालो वंदन जइए ॥ ऐ दैशी ॥

आज म्हारा संभव जिनके । हित चितसूं गुण-गास्यां । मधुर २ स्वर राग अलापी । गहरे शब्द गुंजास्यां राज ॥ आज म्हारा संभव जिनके । हित चितसूं गुण गास्यां ॥ आ ॥१॥ नृप जितारथ सेन्या राणी । तासुत सेवकथा-स्यां ॥ नवधा भक्त भावसौं करने । प्रेम मगन हुई जास्यां राज ॥ आ० ॥ २ ॥ मन वच कायलाय प्रभू सेती । निसदिन सास उसास्यां॥ संभव जिनकी मोहनी मूरति । हिये निरन्तर

ध्यास्यां राज ॥ आ० ॥ ३ ॥ दीन दयाल दीन बंधव कै। खाना जाद कहास्यां॥ तनधन प्रान समरपी प्रभू को।इन पर वेग रिझास्यां राज ॥ आ० ॥ ४ ॥ अष्ट कर्म दल अति जोरावर ते जीत्या सुख पास्यां ॥ जालम मोंहमार कै जगसे। साहस करी भगास्यां राज ॥ आ० ॥ ५ ॥ ऊबट पंथ तजी दुरगति को। शुभगति पंथ समास्यां ॥ आगम अरथ तणे अनुसारे। अनुभव दसा अभ्यास्यां राज ॥ आ० ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ कपट तजि। निज गुणसूं लवलास्यां॥ विनैचंद संभव जिन तूठौ। आवा गवन मिटास्यां राज ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥ आदर जीव क्षिम्या गुण आदर ॥ ऐ देशी ॥

श्री अभिनंदन, दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन योगजी ॥ श्री ॥ १ ॥ संवर राय सिधा राणी। जेहनों आतम जात जी। प्रान

थारो साहिब सांचो । तुही जो मातनें तातजी ॥ श्री ॥ २ ॥ कैइयक सेव करैं शङ्कर की । कैइयक भजै मुरारिजी ॥ गणपति सूर्य उमा कैई सुमरै । हूं सुमरू अविकारजी ॥ श्री ॥३॥ दैव कृपा सूं पामें लक्ष्मी । सो इन भव को सुक्ख जी ॥ तो तूठां इन भव पर भवमें। कदी न व्यापै दुःखजी ॥ श्री ॥ ४ ॥ जदपी इन्द्र नरिन्द्र निवाजें । तदपी करत निहालजी ॥ तूं पुजनीक नरिन्द्र इन्द्रको । दीन दयाल कृपाल जी ॥ श्री ॥ ५ ॥ जब लग आवागमन न छूटै । तब लग करूं अरदासजी ॥ सम्पति सहित ज्ञान समकित गुण । पाऊं दृढ विसवासजी ॥ ॥ श्री ॥ ६ ॥ अधम उधारन बृद्ध तिहारो । जोवो इण संसारजी ॥ लाज विनयचन्द की अब तोनें, भव निधि पार उतारजी ॥ श्री ॥ ॥ ७ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीसीतल जिन साहिबाजी ॥ ऐ देशी ॥

सुमति जिणेसर साहिबाजी । मगरथ नृप नौ नंद ॥ सुमंगला माता तणो जी । तनय सदां सुखकंद । प्रभू त्रिभुवन तिलोंजी ॥१॥ सुमति सुमति दातार ॥ महा महि मानिलोजी ॥ प्रणमूं वार हजार ॥ प्रभू त्रिभुवन तिलो जी ॥ २ ॥ मधुकर नौ मन मोहियौजी ॥ मालती कुसम सुवास ॥ त्यूं मुजमन मोह्यो सही ॥ जिन महिमा कहि न जाय ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ ज्यूं पङ्कज सूरज मुखी जी । बिकसै सूर्य्य प्रकाश । त्यूं मुज मनड़ो गह गहै ॥ कवि जिन चरित हुलास ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ पपइयो पीउ पीउ करेजी ॥ जान वर्षाऋतु जेह । त्यूं मोमन निस दिन रहै ॥ जिन सुमरन सूं नेह ॥ प्रभू ॥५॥ काम भोगनी लालसा जी ॥ थिरता न धरे मन्न ॥ पिण तुम भजन प्रतापथी ॥ मति वन्न ॥ प्रभु ॥ ६ ॥ भवनिधि

रियेजी । भग्त बच्छल भगवान ॥ बिनैचन्दकी वीनती मानो कृपानिधान ॥ प्रभु० ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥ स्याम कैसे गजका फन्द छुड़ायो ॥ ऐ देशी ॥

पद्म प्रभू पावन नाम तिहारो । प्रभू पतित उद्धारन हारो ॥ टेर ॥ जदपि धीमर भील कसाई । अति पापिष्ठ जमारो । तदपि जीव हिंसा तज प्रभू भज ॥ पावै भवदधि पारो ॥ पदम ॥ १ ॥ गौ ब्राह्मण प्रमदा बालककी ॥ मौटी हित्याच्यारो ॥ तेह नो करण हार प्रभू भजन ॥ होत हित्यासूं न्यारो ॥ पदम ॥ २ ॥ वेश्यां चुगल चंडाल जुवारी ॥ चोर महा भट मारो । जो इत्यादि भजै प्रभू तोने ॥ तो निवृतें संसारो ॥ पदम ॥ ३ ॥ पाप पराल को पुञ्ज वन्यौ अति ॥ मानो मेरू अकारो ॥ ते तुम नाम हुताशन सेती ॥ सहज्या प्रजलत सारो ॥ पदम ॥ ४ ॥ परम धर्म को मरम महारस ॥ सो तुम नाम उचारो या सम मंत्र

नहीं कोई दूजो ॥ त्रिभुवन मोहन गारो ॥
पदम ॥ ५ ॥ तो सुमरण विन इण कलयुगमें ।
अवर न को आधारो ॥ मैं बलि जाऊं तो
सुमरन पर ॥ दिन २ प्रीत बधारो ॥पदम ॥६॥
कुसमा राणी को अंग जात तूं ॥ श्रीधर राय
कुमारो ॥ बिनैचन्द कहे नाथ निरञ्जन । जी-
वन प्रान हमारो ॥ पदम० ॥ ७ ॥ इति ६ ॥

॥ ढाल ॥ प्रभुजी दीनदयाल सेवक सरण आयो ॥ एदेशी ॥

श्री जिनराज सुपास । पुरो आस हमारी॥टेर॥
प्रातष्ट सैन नरेश्वर कौ सुत । पृथवी तुम मह-
तारी ॥ सगुण सनेही साहिव सांचौ । सेवक ने
सुखकारी ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ धर्म काज धन
सुक्त इत्यादिक । मन वांछित सुखपूरो ॥ वार
वार मुझ विनती येही ॥ भव २ चिंता चूरो ॥
श्रीजिन० ॥२॥ जगत् शिरोमणि भगति [illegible]
कल्प वृक्ष सम जाणू ॥ पूरण ब्रह्म प्र
श्वर । भव भव तुम्हें पिछाणू ॥ श्रीजि

हूं सेवक तुं साहिब मेरो ॥ पावन पुरुष विज्ञानी जनम २ जित तिथ जाऊं तौ । पालो प्रीति पुरानी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ तारण तरण अरु असरण सरणको । बिरद इसो तुम सोहे ॥ तो सम दीन दयाल जगत में ॥ इन्द्र नरिन्द्रन को है ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ सम्भू रमण बड़ो समुद्रो में ॥ सेल सुमेर बिराजै ॥ तू ठाकुर त्रिभुवन में मोटो ॥ भगत् किया दुख भाजै ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ अगम अगोचर तू अविनाशी अलप अखंड अरूपी ॥ चाहत दरस बिनैचन्द तेरौ । सत चित आनन्द स्वरूपी ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौकनी देशी ॥

मुझ म्हेर करो । चंद प्रभूजग जीवन अन्तरजामी ॥ भव दुःख हरो ॥ सुणिये अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी ॥ टेर ॥ जय जय जगत् सिरोमणी । हूं सेवक ने तूं धणी ॥ अब तौसूं

गाढ़ी बणी ॥ प्रभू आशा पूरो हमतणी ॥
मुज० ॥ १ ॥ चन्द पुरी नगरी हती ॥ महा-
सैन नामा नरपति । तसु राणी श्री लषमा
सती ॥ तसु नन्दन तूं चढ़ती रती ॥ मुज० ॥
२॥ तूं सरवज्ञ महाज्ञाता ॥ आतम अनुभवको
दाता ॥ तो तूठां लहिये सुखसाता ॥ धन २
जे जग मे तुम ध्याता ॥ मुज० ॥ ३ ॥ सिव
सुख प्रार्थना करसूं । उज्वल ध्यान हिये धर
सूं ॥रसना तुम महिमा करसूं ॥ प्रभू इम
भवसागर से तिरसूं ॥ मुज० ॥ ४ ॥ चंद
चकोरनके मन मे ॥ गाज अवाज होवे घन
में ॥ पिय अभिलाषा ज्यों त्रियतन में ॥ त्यों
वसियो ते मो चित मनमें ॥ मुज० ॥ ५ ॥ जो
सू नजर साहिव तेरी ॥ तो मानो विनती मेरी
काटो भरम करम वेरी ॥ प्रभु पुनरपि नहिं
परूं भव फेरी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान
दसा जागी ॥ प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी ।

अन्य देव अमना भागी । बिनैचन्द तिहारो अनुरागी ॥ सुज० ॥७ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ बुढापो बेरी आवियो हो ॥ एदेशी ॥

श्री सुविध जिणेसर बंदिये हो ॥ टेर ॥ काकंदी नगरी भली हो । श्री सुग्रीव नृपाल । रामा-तसु पट रागनी हो ॥ तस सुत परम कृपाल ॥ ॥ श्री सु० ॥ १ ॥ त्यागी प्रभुता राजनी हो । लीधो संजम भार । निज आतम अनुभावथी हो ॥ पाम्या प्रभु पद अविकारी ॥ श्री० ॥२॥ अष्ट कर्म नोराजवी हो । मोह प्रथम क्षयकीन॥ सुध समकित चारित्रनो हो । परम क्षायक गुण-लीन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो । अन्तरायके अन्त ॥ ज्ञान दरशण बळ ये त्रिहूं हो । प्रगट्या अनन्ता अनन्त ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ अवा वाह सुख पामिया हो । वेदनी करम क्षपाय । अव गाहण अटल लही हो । आयु क्षै करनैं श्री जिन राय ॥ श्री० ॥ ५ ॥

नाम करम नौ क्षै करी हो। अमूर्तिक कहाय।
अगुर लघुपण अनुभव्यौ हो। गौत्र करम मु-
काय ॥ श्री० ॥ ६ ॥ आठ गुणा कर ओलष्या
हो। जात रूप भगवंत। विनैचंद के उरवसो
हो। अह निस प्रभु पुष्पदंत॥श्री०॥७॥इति ॥

॥ ढाल ॥ जिंदवारी देशी ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री हृढरथ नृपतो पिता ॥ नंदा थारी माय ॥
रोम रोम प्रभू मो भणी सीतल नाम सुहाय ॥
जय ॥ १ ॥ करुणा निध करतार ॥ सेव्यां सुर
तरु जेहवो ॥ बंछित सुख दातार ॥ जय ॥२॥
प्राण पियारो तू प्रभू पति भरता पति जैम ॥
लगन निरंतर लग रही ॥ दिन दिन अधिको
प्रेम ॥ जय ॥ ३ ॥ सीतल चंदन नी परें ज-
पता निस दिन जाप ॥ विषै कषाय ना ऊपनै
मेटो भव दुखताप ॥ जय ॥ ४ ॥ आरत
प्रणाम थी उपजै चिन्ता अनेक। ते दुख

मानसी । आपौ अचल विवेक ॥ जय ॥ ५ ॥ रोगादिक क्षुधा त्रिषा । सब शस्त्र अस्त्र प्रहार सकल सरीरी दुख हरौ ॥ दिलसूं बिरुद बिचार ॥ जय ॥ ६ ॥ सुप्रसन होय सीतल प्रभू तू आसा बिसराम ॥ बिनैचंद कहै मो भणी दीजै मुक्ति सुकाम ॥ जय ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ राग काफी देसी होरी की ॥

श्री अंस जिनन्द सुमररे ॥ टेर ॥

चेतन जाण कल्यांण करन को । आन मिल्यो अवसररे ॥ शास्त्र प्रमान पिछान प्रभू गुन ॥ मन चंचल थिर कररे ॥ श्री ॥ १ ॥ सास उसास विलास भजन को ॥ दृढ बिस्वास पकररे ॥ अजपा भ्यास प्रकाश हिये बिच ॥ सो सुमरन जिनवररे ॥ श्री ॥ २ ॥ कंद्रप क्रोध लोभ मद माया ॥ यह सबही पर हररे ॥ सम्यक दृष्टि सहज सुख प्रगटै ॥ ज्ञान दशा अनुसररे ॥ श्री ॥ ३ ॥ झूंठ प्रपंच जीवन तन धन अरु

॥ सजन सनेही घररे ॥ छिनमें छोड़ चले पर भव कूं ॥ बंध सुभासुभ थिररे ॥ श्री ॥ ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी ॥ आसा करत अमररे ॥ तें पूरब शुकृत कर पायो । धरम मरम दिल भररे ॥ श्री ॥ ५ ॥ बिश्नसैन नृप विस्नाराणी को । नंदन तू न विसररे ॥ सहज मिटै अज्ञान अविद्या । मुक्त पंथ पग धररे ॥ श्री ॥ ६ ॥ तू अविकार विचार आतम गुन ॥ जंजालमें न पररे ॥ पुद्गल चाय मिटाय विनैचंद॥तू जिनते न अवररे ॥श्री॥७॥इति ॥११॥

॥ ढाल ॥ फूलसी देह पलकमें पलटे ॥ एदेशी ॥

प्रणमूं बास पूज्य जिन नायक ॥ सदा सहायक तू मेरो ॥ विषमी वाट घाट भयथानक ॥ परमासय सरना तेरो ॥ प्रणमू० ॥ १ ॥ [illegible] दल प्रवल दुष्ट अति दारुण । चौत[illegible] [illegible] घेरो ॥ तौ पिण कृपा तुम्हारी प्र[illegible] ॥ अरि[illegible] प्रगटै चैरौ ॥ प्रणमूं ॥ [illegible] ॥ [illegible]

जार विचालै । चोर कुपात्र करै हेरौ । तिण बिरियां करिये तो सुमरण । कोई न छीन सकै डेरौ ॥ प्रणमू ॥ ३ ॥ राजा बादशाह कोइ कोपै अति । तकरार करै छेरौ । तदपी तू अनुकूल हूवै तो ॥ छिनमें छुट जाय केरौ ॥ प्रणमू ॥ ४ ॥ राक्षस भूत पिसाच डांकिनी ॥ संकनी भय न आवै नेरौ ॥ दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागै ॥ प्रभू तुम नाम भज्यां गहरौ ॥ प्रणमू ॥ ५ ॥ विस्फोटक कुष्टादिक सङ्कट । रोग असाध्य मिटै देहरौ ॥ विष प्यालो अमृत होय प्रगमें ॥ जो विस्वास जिनंद केरौ ॥ प्रणमू ॥ ६ ॥ मात जया वसु नृपके नंदन ॥ तत्व जथारथ बुध प्रेरौ । वे कर जोरि विनैचंद विनवे ॥ वेग मिटै मुझ भव फेरौ ॥ प्रणमू ॥७॥ इति॥१२॥

॥ ढाल । अहो शिवपुर नगर सुहावणो ॥ एदेशी ॥

विमल जिनेस्वर सेविये ॥ थारी बुध निर्मल हो जायरे ॥ जीवा ॥ विषय विकार विसार नै ॥

तूं मोहनी करम खपायरे ॥ जीवा विमल जि-
नेश्वर सेविये ॥ १ ॥ सूक्षम साधारण पणे ।
परतेक बनसपती मांयरे ॥ जीवा ॥ छेदन
भेदन तेसही ॥ मर मर ऊपज्यो तिण कायरे ॥
जीवा ॥ वि० ॥ २ ॥ काल अनंत तिहागम्यो॥
तेहना दुख आगम थी संभालरे ॥ जीवा ॥
पृथ्वी अप्प तेउ वायुमें ॥ रह्यो असंख्या २ तो
कालरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ३ ॥ एकेन्द्री सूं
बेंद्री थयो ॥ पुन्याई अनंती वृधरे ॥ जीवा ॥
सन्नीपच्चेंद्री लगें पुनवंध्या ॥ अनंता २ प्रसिद्ध
रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव नरक तिरयंच
में ॥ अथवा माणस भवनीचरे ॥ जीवा ॥ दीन
पणें दुख भोगव्या । इण पर चारों गति वीचरे
॥ जीवा ॥ वि० ॥ ५ ॥ अबके उत्तम कुल
मिल्यो ॥ भेट्या उत्तम गुरू साधुरे ॥ जीवा ॥
सुण जिन वचन सनेह से ॥ समकित व्रत
आराधरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ६ ॥ पृथ्-

कीरति भानु को ॥ सामाराणी को कुमाररे ॥ जीवा ॥ बिनैचंद कहै ते प्रभू ॥ सिर सेहरो हिवडारो हाररे ॥जीवा॥बि०॥७॥इति॥१३॥

॥ ढाल ॥ वेगा पधारोरे म्हेल थी ॥ एदेशी ॥

अनंत जिनेश्वर नित नमो ॥ अद्भुत जोत अलेष ॥ ना कहिये ना देखिये । जाके रूप न रेख ॥ अनंत ॥ १ ॥ सुक्षमथी सुक्षम प्रभू ॥ चिदानंद चिद्रूप । पवन शब्द आकाशथी ॥ सुक्ष्यम ज्ञान सरूप ॥ अनंत ॥ २ ॥ सकल पदारथ चितवूं ॥ जेजे सुक्षम जोय ॥ तिणथी तू सुक्षम महा ॥ तो सम अवर न कोय ॥ अनंत ॥ ३ ॥ कवि पंडित कह कह थके ॥ आगम अर्थ विचार । तौ पिण तुम अनुभव तिको॥ न सके रसनां उचार ॥ अनंत ॥ ४ ॥ प्रभूने श्रीमुख सरस्वती । देवी आपौ आप ॥ कहि न सके प्रभू तुम अस्तुती ॥ अलख अजपा जाप ॥ अनंत ॥ ५ ॥ मन बुध वाणी तो विषै ॥ प-

हुंचें नहीं लगार । साक्षी लोकालोकनी ।। निर्विकल्प निराकार ।। अनंत ।। ६ ।। मातु जसा सिंहरथ पिता ।। तसु सुत अनंत जिनंद ।। बिनैचंद अब ओलख्यो । साहिब सहजा नन्द ।। अनन्त ।। ७ ।। इति ।। १४ ।।

।। ढाल ।। आज नहैं जोरे दीसै नाहलौ ।। एदेशी ।।

धरम जिनेश्वर मुज हिवडै बसो । प्यारो प्राण समान ।। कबहूं न बिसरूं हो चितारूं सही । सदा अखंडित ध्यान ।। धरम० ।। १ ।। ज्यूं पनिहारी कुम्भ न वीसरै ।। नट वो चरित्र निदान ।। पलक न विसरै हो पदमनि पियु भणी । चकवी न विसरैरे भान ।। धरम० ।। २ ।। ज्यूं लोभी मन धनकी लालसा।।भोगीके मन भोग।। रोगी के मन माने औषधी ।। जोगीके मन जोग ।। धरम ।। ३ ।। इण पर लागी हो पूरण प्रीतडी ।। जाव जीव परियंत ।। भव भव चाहूं हो न पड़े आंतरो । भय भंजन भगवंत।।धरम०

॥ ४ ॥ काम क्रोध मद मच्छर लोभ थी ॥ कपटी कुटिल कठोर ॥ इत्यादिक अवगुण कर हूं भरचो ॥ उदै कर्म केरे जोर॥ धरम० ॥५॥ तेज प्रताप तुमारो प्रगटै ॥ मुज हिवड़ा मेंरे आय ॥ तौ हूं आतम निज गुण संभालनै अनंत बली कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सुब्रत्ता जननी तणो ॥ अङ्ग जात अभिराम ॥ विनैचंद नैरे वल्लभ तू प्रभू ॥ सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ प्रभूजी पधारो हो नगरी हमतणी ॥ एदेशी ॥

शांन्ति जिनेश्वर साहिब सोलमों । शान्ति दायक तुम नाम हो ॥ सोभागी॥ तन मन बचन सुध कर ध्यावता ॥ पूरै सघली आसहो ॥ सोभागी ॥ १ ॥ विश्व सैन नृप अचला पटरानी॥ तसु सुत कुल सिणगार हो ॥सोभागी॥ जन मति शान्ति करी निज देसमें ॥ मरी मार निवार हो ॥ सोभागी० ॥२॥ विघनन व्यापे

तुम सुमरन कियां । नासै दारिद्र दुःख हो ॥ सोभागी ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि मिलै॥प्रगटै सबला सुक्ख हो ॥ सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिनंद तूं ॥ तेहनैं कमीय न कायहो । सोभागी ॥ जे जे कारज मनमें बढै॥ ते ते सफला थाय हो ॥ सोभागी ॥ ४ ॥ दूर दिसावर देश प्रदेश में ॥ भटके भोला लोक हो ॥ सोभागी ॥ सानिधकारी सुमरन आपरो सहजे मिटै सहू सोक हो ॥ सोभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छौ एवही ॥ जो जिण सेवक होय हो ॥ सोभागी ॥ तेहनी आसा पूरै देवता ॥ चौसठ इन्द्रादिक सोय हो ।सोभागी। ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तुम प्रभू ॥ हमने छौ आधार हो ॥ सोभागी ॥ वेकर जोड़ विनैचन्द विनवै । आपो सुख श्री कार हो ॥ सोभागी ॥ शान्ति ॥७॥ इति ॥१६॥

—०:॥:०—

॥ ढाल ॥ रेखता ॥

कुंथ जिणराज तूं ऐसो ॥ नहीं कोई देवतूं जैसो ॥ त्रिलोकी नाथ तूं कहिये ॥ हमारी बांह दृढ़ गहिये ॥ कुंथ ॥१॥ भवोदधि डूबतो तारो ॥ कृपानिधि आसरो थारो ॥ भरोसा आपका भारी विचारो बिरध उपकारी ॥ कुंथ० ॥२॥ उमाहूं मिलन को तोसे ॥ न राखो आतरा मोसे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तेरी ॥ तैसी चेतन्यता मेरी ॥ कुंथ० ॥ ३ ॥ करम भ्रम जाल को दपट्यौ । विषै सुख ममत में लपट्यौ ॥ भ्रम्यौ हूं चिहूं गति माहीं ॥ उदैकर्म भ्रम की छांही ॥ कुंथ० ॥ ४ ॥ उदै को जोर है जोलूं न छूटै बिषै सुख तोलूं ॥ कृपा गुरुदेवकी पाई ॥ निजातम भावना आई ॥ कुंथ० ॥ ५ ॥ अजब अनुभूति उरजागी ॥ सुरति निज सूर्य में लागी ॥ तुम्हें हम एक तो जाणूं ॥ द्वितिय भ्रम कल्पना मानूं ॥ कुंथ० ॥ ६ ॥ श्री देवी सूर-

नृप नन्दा ॥ अहो सरवज्ञ सुख कन्दा ॥ बिनै-चन्द लीन तुम गुन में । न ब्यापै अविद्या उन में ॥ कुंथ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ ढाल अलगी गिरानी ॥ एदेशी॥

अरह नाथ अविनासी शिव सुख लीधौ ॥ बिमल विज्ञान बिलासी ॥ साहिब सीधौ० ॥१॥ तू चेतन भज अरह नाथने ते प्रभु त्रिभुवन राय ॥ तात श्रीधर सुदर्शण देवी माता ॥ तेहनों पुत्र कहाय ॥ साहिव सीधौ० ॥२॥ क्रोड़ जतन करता नहीं पामें ॥ एहवी मोटी माम ॥ तै जिन भक्ति करी नै लहिये ॥ मुक्ति अमोलक ठाम ॥ साहिव० ॥ ३॥ समकित सहित किया जिन भगती ॥ ज्ञान दरसन चारित्र ॥ तप वीरज उपयोग तिहारा प्रगटे परम पवित्र ॥ साहिव ॥ ४ ॥ सो उपयोगी सरूप चितानंद जिनवर ने तू एक । द्वैत अविद्या विभ्रम मेटो ॥ वाधै शुद्ध विवेक ॥ साहिव ॥ ५ ॥ ३८

रूप अखण्डित अविचल । अगम अगोचर आपे॥ निर विकल्प निकलंक निरंजन ॥ अदभुद जोति अमापै ॥ साहिब ॥ ६ ॥ ओलख अनुभव अमृत याकौ ॥ प्रेम सहित नित पीजै ॥ हूं तू छोड़ बिनैचन्द अंतस ॥ आतम राम रमीजै ॥ साहिब सीधौ ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ ढाल लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी ॥ कुम्भ पिता पर भावती मइया तिनकी कूंवारी ॥ टेर ॥ मानी कूंख कंदरा मांही उपना अवतारी । मालती कुसुम मालनी वांछा जननी उरधारी॥ म०॥१ । तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो ॥ त्रिभुवन प्रिय कारी ॥ अद्भुत चरित तुम्हारा प्रभुजी वेद धरयो नारी ॥ म० ॥ २ ॥ परणन काज जान सज आए । भूपति छै: भारी । मिहिला पुरी घेरि चौतरफा । सेना विस्तारी ॥म०॥३॥ राजा कुम्भ प्रकाशी तुमपै । वीतक विधिसारी

छहुं नृप जान सजी तो परनन आया अहंकारी ॥ म० ॥ ४ ॥ श्री मुख धीरप दीधि पिताने । राख्यौ हुशियारी ॥ पुतली एक रची निज आकृत । थोथी ढकवारी ॥ म० ॥ ५ ॥ भोजन सरस भरी सा पुतली ॥ श्रीजिण सिणगारी ॥ भूपति छहूं वुलाया मंदिर ॥ विच बहु दिना पारी ॥ म० ॥६॥ पुतली देख छहूं नृप मोह्या अवसर विचारी ॥ ढाक उघार लीनो पुतली को ॥ भवक्यो अतिभारी ॥ म० ॥ ७ ॥ दुसह दुगन्ध सही न जावे, ऊठ्या नृपहारी ॥ तव उपदेश दियो श्रीमुख सूं, मोह दसा टारी ॥ म० ॥८॥ महा असार उदारक देही ॥ पुतली इव प्यारी ॥ संग किया पटकै भव दुःखमें, नारि नरक वारी ॥ म० ॥ ९ ॥ नृप छहूं प्रति वोधे मुनि होय ॥ सिधगति संभारी ॥ विनैचन्द चाहत भव भव में ॥ भक्ति प्रभू थारी ॥ म० ॥ १० ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ ऐदेशी ॥

श्रीमुनिसुब्रत साहिबा । दीन दयाल देवाँ तणा देव कै ॥ तारण तरण प्रभू तो भणी । उज्वल चित्त सुमरूं नितमेवकै ॥ श्री मुनि सूब्रत साहिबा ॥ १ ॥ हूं अपराधी अनादिकौ ॥ जनम जनम गुना किया भरपूर कै ॥ लूटिया प्राण छै कायना ॥ सेविया पाप अठार करूंरकै ॥ श्रीमुनि० ॥ २ ॥ पूरब अशुभ करतब्यता ॥ ते हमना प्रभू तुम न बिचारकै ॥ अधम उधारण बिरुद छे ॥ सरण आयो अब कीजिये सारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किंचित पुन्य परभावथी ॥ इण भव ओळख्यो श्रीजिन धर्मकै ॥ निवृतूं नरक निगोद थी ॥ एहवो अनुग्रह करो परब्रह्मकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ साधुपणो नहिं संग्रह्यो ॥ श्रावक वृत न कीया अंगीकारकै ॥ आदरया तो न अराधिया ॥ तेहथी रुलियो अनंत संसारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब सम

कित ब्रत आदरयो ॥ तदपि अराधक उतरूं भव पारकै ॥ जनम जीतब सफलो हुवै । इण पर विनवूं बार हजारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तुम पिता ॥ धन २ श्री पदमावती मायकै ॥ तसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं । बंदत बिनैचंद सीस नवाय कै ॥ श्रीमुनि ॥७॥

॥ ढाल ॥ सुणियोरे बाबा कुटिल मंझारी तोता ले गई ॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इक बीसमों ॥टैर॥ विजय सैन नृप विप्राराणी । नेमी नाथ जिन जायो ॥ चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव । सुर नर आनंद पायोरे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ भजन किया भव भवना दुष्कृत । दुक्ख दुभाग मिट जावे ॥ काम क्रोध मद मच्छर त्रिसना ।दुरमत निकट न आवैरे ॥सु०॥२॥ जीवादिक नव तत्व हिये धर । ज्ञेय हेय समुझीजै ॥ तीजी उपादेय ओलखने । समकित निरमल कीजैरे ॥ सुज्ञा० ॥ ३ ॥ जीव अजीव बंध एतीनूं । ज्ञेय जथा-

रथ जानौ ॥ पुन्य पाप आश्रव पर हरिये । हेय पदारथ मानोंरे ॥ सुज्ञानी० ॥ ४ ॥ संबर मोक्ष निर्जरा निज गुण । उपादेय आदरिये ॥ कारण कारज समझ भली बिधि । भिन भिन निरणो करियेरे ॥ सुज्ञानी० ॥ ५ ॥ कारण ज्ञान सरूपी जियको । कारज क्रिया पसारो ॥ दोनूं की साखी सुध अनुभव ॥ आपो खोज निहारो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ ६ ॥ तू सो प्रभू प्रभू सो तू है । द्वैत कल्पना मेटो ॥ शुध चेतन आनंद विनैचंद । परमातम पद भेटोरे ॥ सुज्ञानी० ॥७॥ इति ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ नगरी खूब बणी छै जी ॥ एदेशी ॥

श्री जिनमोहन गारो छै । जीवन प्राण हमारा छै ॥ टेर ॥ समुद्र विजै सुत श्री नेमीश्वर । जादव कुलको टीको ॥ रतन कुक्ष धारनी सेवा देवी ॥ जेहनो नंदन नीको ॥ श्री० ॥१॥ सुन पुकार पशुकी करुणा करे ॥ जानिजगत् सुख

फीको ॥ नव भव नेह तज्यो जोबनमें ॥ उग्र-सैन नृप धीको ॥ श्री० ॥ २ ॥ सहस्र पुरुष सों संजम लीधो । प्रभुजी पर उपकारी ॥ धन धन नेम राजुलकी जोड़ी महा बालब्रह्मचारी ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बोधानंद सरुपानंद में ॥ चित एकाग्र लगायो॥आतम अनुभव दशा अभ्यासी। शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूर्णा-नंद केवली प्रगटे । परमानंद पद पायो ॥ अष्ट-कर्म छेदी अलवेसर । सहजानंद समायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नित्यानंद निराश्रय निश्चल । नि-र्विकार निर्वाणी ॥ निरांतक निरलेप निरामय । निराकार वरणानी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवो ज्ञान समाधि संयुक्तो । श्री नेमीश्वर स्वामी ॥ पूरण कृपा विनैचंद प्रभूकी । अबते ओलखपामी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २२ ॥

—:०:—

॥ ढाल जीवरे सील तणो कर संग ॥ एदेशी ॥

जीवरे तू पार्श्व जिनेश्वर बन्द ॥ टेर ॥ अस्व सैन नृप कुल तिलोरे ॥ बामा दे नौनंद ॥ चिंतामणि चित्तमें बसै तो दूर टले दुख द्वन्द ॥ जीवरे० ॥ १ ॥ जड़ चेतन मिश्रित पणौ रे ॥ करम शुभा शुभथाय ॥ ते बिभ्रम जग कलपनारे ॥ आतम अनुभव न्याय ॥ जीवरे० ॥२॥ वैहमी भय माने जथारे । सूने घर बैताल॥ त्यों मूरख आतम विषै रे। माड्यो जग भ्रम जाल ॥ जीवे रे० ॥ ३ ॥ सरप अंधारै रासडीरे । रूपो सीप मझार ॥ मृग तृषना अंबुज मृषारे । त्यू आतम संसार ॥ जी० ॥ ४ ॥ अग्नि विषै ज्यो मणि नहीं रे । सींग शशै सिर नाहिं । कुसुम न लागै व्योम में रे । ज्यू जग आतम मांहि॥जी०॥ ॥ ५ ॥ अमर अजौनी आतमारे । है निश्चै तिहुं काल ॥ विनैचंद अनुभव जगीरे । तू निज रूप सम्हाल ॥ जीवरे ॥ ६ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीनवकार जपो मन रंगे ॥ ऐदेशी ॥

धन २ जनक सिद्धारथ राजा । धन त्रसलादे मातरे प्राणी । ज्यां सुत जायो गोद खिलायो । वर्धमान विख्यातरे प्राणी ॥ श्री महावीर नमो वरनाणी । शासन जेहनो जाणरे ॥ प्रा० ॥१॥ प्रवचन सार विचार हियामें । कीजै अरथ प्रमाणरे ॥ प्रा० ॥श्री० ॥ २ ॥ सूत्र विनय आचार तपस्या । चार प्रकार समाधिरे ॥ प्रा० ॥ ते करिये भव सागर तरिये । आतम भाव अराधिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्यों कञ्चन तिहुं काल कहीजै । भूषण नाम अनेकरे ॥ प्रा० ॥ त्यों जगजीव चराचर जोनी । है चेतन गुन एकरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अपणो आप विषै थिर आतम सोहं हंस कहायरे ॥ प्रा० ॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय ॥ पुद्गल भरम मिटायरे ॥ ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शब्द रूप रस गंध न जामें, ना सपरस तप छांहिरे ॥ प्रा० ॥

उद्योत प्रभा कछु नाहीं ।आतम अनुभव माहिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख जीवन मरन अवस्था ॥ऐ दस प्राण संघातरे ॥ प्रा० ॥इनथी भिन्न बिनैचन्द रहिये ॥ ज्यौं जलमें जलजातरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

—०:*:०—

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
गावतांमन गह गहै ।
कुमट गोकुलचन्द नन्दन,
बिनैच्चन्द इणपर कहैं ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्व निज उरमें धरी ।
उगणीस सौ छै: के छमच्छर,
चतुर्विंशति स्तुति इम करी ॥

—*:०:*—

॥ अथस्तवन ॥

धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नहिं कोय। धर्म थकी नमें देवता, धर्मे शिव सुख होय ॥ ध० ॥१॥ जीव दया नित पालिये, संयम सतरे प्रकार। बारा भेदें तप तपे, धर्म तणोये सार ॥ ध० ॥ २ ॥ जिम तरुवरने फूलड़े, भ्रमरो रस ले जाय। तिम सन्तोषे आतमा, फूलने पीड़ा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ इण विध विचरे गोचरी, वहोरे सूजतो अहार। ऊंच नीच मध्यम कुले, धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥ ४ ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहिं तृष्णा नहिं लोभ। लाधो भाडो दिये देहने, अण लाधा संतोष ॥ ध० ॥५॥ अध्ययन पहले दुम्म पुप्फिए, सखरा अर्थ विचार ॥ पुण्य कलश शिष्य जेतर... जय जयकार ॥ ध० ॥ ६ ॥

॥ अथ सोले जिन स्तवन लिख्यते ॥

श्रीनवकार मन्त्रजीरो ध्यानधरो ॥ एहीज देसी ॥
श्रीरिखब आजीत सम्भव स्वामी, बन्दु अभिनन्दन अन्तरजामी । राग द्वेष दोय खय करणा, वन्दु सो लेइ जिन सोवन वरणा ॥ १ ॥ बन्दु० ॥ सुमत नाथजीने सू पासो, प्रभु मुगत गया मेट्यो गरभावासो । मेट दिया जनम ने मरणा ॥ वन्दु० ॥२॥ शीतल श्रीअंशजिन दोई, प्रभु चवदे राज रह्या जोई । विमल मत निरमल करणा ॥ वन्दु० ॥ ३ ॥ अनन्तनाथ अनन्त ज्ञानी, जासु मन डारी बात नहिं छानी ॥ धर्म नाथजीको ध्यान हृदय धरणा ॥ वन्दु ॥ ४ ॥ सन्तनाथ साताकारी, कुंथुनाथ स्वामीरी जाउं वलिहारी । अरियनाथ आतम उद्धरणा ॥व०॥ ५ ॥ महिमा घणी हो नमीनाथ तणी, महावीर जी हुवा सासणरा धणी ॥ मे धरिया प्रभु थारां चरणा ॥ वन्दु० ॥ ६ ॥ तीन लोकमें रूप प्रभु

पायो, एसो मायडी पुत्र बीजो नहिं जायो। चौसठ इन्द्र भेटे चरणा ॥ वन्दु० ॥७॥ शरीर संप्रदा सुन्दर सोहै, निरखंतारा नयन तुरन्त मोहे। चतुरारातो चित्त हरणा ॥ वन्दु० ॥८॥ जगमग दीप रही देही, ज्यांने सुरनर निरख रह्या केई ॥ ज्यांरी आंखाँ जाणे अमी ठरणा ॥ वन्दु० ॥९॥ पग नख सुं मस्तक ताईं, ज्यांरो शरीर वखाण्यो सूतर माही ॥ च्यारुइ संघ लेवे सरणा ॥ वन्दु० ॥ १० ॥ समचेई आरज सुणो सोले, रिख रायचन्दजी अणपरे बोले। म्हारी आवागमन दुःख दुर हरणा ॥ वन्दु० ॥ ११ ॥ संमत अठारे छत्तीसे वरसे, कियो नागोर चउमासो भाव सरसे ॥ भजन किया भव सागर तरणा ॥ वन्दु ० ॥ १२ ॥

इति ।

॥ अथ श्रीनवकार मन्त्र स्तवन लिख्यते ॥

प्रथम श्रीअरिहन्त देवा, ज्यांरी चउसट्

सेवा ॥ मारग ज्यांरो सुध खरो, श्रीनवकार मन्त्र जीरो ध्यान धरो ॥ १ ॥ चौतीस अतिसे पेंतीस वाणी, प्रभु सगलारा मनरी जाणी । कर जोड़ी ज्यांसु विनती करो ॥ श्री० ॥ २॥ भवजीवाने भगवन्त तारे, पछे आप मुगत माहे पाउधारे । सकल तीर्थंकरनो एकसिरो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पनरे भेद सिद्ध सिधा, ज्यां अष्टकर्माने खय किधा ॥ शिव रमणीने वेग वरो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चउदेई राजरे ऊपर सही, जठे जनम जरा कोई मरण नही ॥ ज्यांरो भजन कियां भवसागर तीरो ॥५॥ तीजे पद आचारज जाणी, जिणरी वल्लभ लागे अमृत वाणी ॥ तन मन सु ज्यांरी सेव करो ॥श्री०॥६॥ संघ माहे सोवे स्वामी, जिके मोक्ष तणा हुए रह्या कांमी ॥ ज्याने पुज्या म्हारो पाप झरो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ उपाध्यायजीरी वुद्धि भारी, ज्यां प्रति वुज्या वहु नर नारी । सूत्र अरथ जे करे सखरो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ गुण पंच-

वीसे कर दिपे, ज्यांसु पाखंडी कोई नहीं जीपे ॥ दूर कियो ज्यां पाप परो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पंचमें पद साधुजीने पुजो, यां सरीखो नजर न आवे दूजो ॥ मिटाय देवे ते जनम जरो ॥ श्री० ॥ १० ॥ जो आत्मारा सुख चावो, तो थें पांच पदाजीरा गुण गावो । क्रोड़ भवारा करम हरो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ पुज जेमल जीरे प्रसादे जोड़ी सुणतां तुटे करमारी कोडी । जीव छकायारा जतन करो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ शहेर विकानेर चउमासो, रिखरायचन्दजी इम भासो । मुक्ति चाहो तो धरम करो ॥ श्री० ॥ १३ ॥

॥ अथ भरत वाहुवलनी सज्झाय लिख्यते ॥

राज तणारे अति लोभिया, भरत वाहू वल झुंजेरे ॥ मूठ उपाडी मारवा, वाहुवल प्रति वुझेरे ॥ वीरा म्हारा गज-थकी उतरोरे, गज चढ्यां केवल न होसीरे ॥ वंधव गज थकी उतरोरे ॥ १ ॥ ब्राह्मी सुन्दरी इम भाषैरे । रिखव

जिणेश्वर मोकली, बाहुबल तुम पासे रे ॥ बी० ॥ २ ॥ लोच करी संजम लियो, आयो वली अभिमानो रे ॥ लघु बन्धव बान्दु नहीं, काउ सग्ग रह्या सुभ ध्यानो रे ॥ बी० ॥ ३ ॥ वरस दिवस काउ सग्ग रह्या, वेलड़ियां विटाणा रे ॥ पक्षीमाला मांडिया, सीत ताप सुकाणा रे ॥ बी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणीकरी, चमक्या चित्त मझारो रे । हय गय रथ पायक तज्या, पीण चडियो अहंकारो रे ॥ बी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे । चरण उठायो वांदवा । पाम्या केवल ज्ञानो रे ॥ बी० ॥ ६ ॥ पहुता केवली पर खदा, बाहूबल रिख रायो रे । अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर वंदे पायो रे ॥ बी० ॥ ७ ॥

॥ छ संवरगी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रीवीर जिणेश्वर गौतमने कहे, संवर धरतारे सहुजन सुख लहे ॥ त्रोटक छन्द ॥ सुख लहे

संवर, कहे जिनवर, जीव हिंसा टालिये । सुक्षम बादर त्रसथावर सर्व प्राणी पालिए ॥ मनवचन काया धरी समता ममता कछु न आणिए ॥ सुन वछ गोयम वीर जंपे, प्रथम संवर जाणिए ॥१॥ बीजे संवर जिणवर इम कहे, साचो बोल्यारे सहु जन सुख लहे ।त्रो० छ०। सुखलहे साचो सुजस संग ले, सत्य वचन संभारिये ॥ जहां होय हिंसा जीव केरी, तेह भाषा टालिए ॥ असत्य टाळी सत्य आगममन्त्र नवकार भाषिए ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, जीभ जतन कर राखिए ॥ २ ॥ तीजे संवर घर बाहेर सही, अदत्त परा-यांर लेतां गुण नहीं ॥ त्रो० छ० ॥ गुण नहीं लेतां अदत्त जोतां दूर परायो परिहरो । निज राज दण्डे लोक भण्डे, इसो भंडण काइ करोजी । इसो जाण मन विवेक आणो, संच्योज लाधे आपणो । सुण वछ गोयम वीर जंपे, नहीं लिजे पर थापणो ॥ ३ ॥ चउथसंवर चउथो व्रत

धरो, सियल सघ लेरे अंगे अलंकरो, ॥ त्रो० छ० ॥ आलंकरो अंगे सियल सघले, रंग राचो एसही ॥ जुग माहे जोतां एह जालम और उपमाको नही ॥ एसो जाण तुम नार पराई, रिखेज निरखो नेणसु ॥ सुन वछ गोयम बीर जंपे, कछु न कहिए बेणसु जी ॥ ४ ॥

पचमें संव्रर परिग्रह परिहरो, मूरख मायारे ममता मत करो ॥त्रो०छ०॥ मत करो ममता दिन रेण रुलतां, जोय तमासो एवडो ॥ मणी रत्न कंचन क्रोड़ हुवे तो, तृपत न थाए जीवडो । होय जहां तहां लाभ वहुलो, लोभ वादे अति बुरो ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, त्रसणा धेटी परिहरो ॥ ५ ॥

छट्ठे संबर छट्ठो ब्रत धरो, रात्रि भोजन भवियण परिहरो ॥ त्रो० छ० ॥ परिहरो भोजन रयणी केरो, प्रत्येक पातिक एहुनो । संसार रुलसी दुःख सहसी, सुख टलसी देहनो । इसो जाण संवेग श्रावक, मूल गुण ब्रत आदरो । सुण वछ गोयम वीर जंपै, शिव रमणी वेगी वरो ॥ ६ ॥

अथ कामदेव श्रावकनी सज्झाय लिख्यते ॥

श्रावक श्री वीरना चम्पानो वासीजी ॥ ए आं-
कड़ी ॥ एक दिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिये
सभारे माय ॥ दृढ़ताई कामदेवनीजी, कोई देव
न सके चलाय ॥ श्राव० ॥ १ ॥ सरघ्यो नहीं
एक देवताजी, रूप पिशाच बनाय ॥ कामदेव
श्रावककनेजी, आयो पोषद सालरे माय॥श्रा०॥
२ ॥ रूप पिशाचनो देखनेजी, डरचो नहीं रे
लिगार ॥ जाण्यो मिथ्याती देवताजी, लियो
शुद्ध मन ध्यान लगाय ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अंभोरे
कामदेवजी, तोने कलपे नहीं छे कोय ॥ थारो
धर्मना छोड़णोजी, पिणहूं छुड़ास्यु तोय ॥ श्रा०
४ ॥ हस्तीनो रूप वेकरे कियोजी, पिशाच पणो
कियो दूर ॥ पोषद शालामें आयनेजी, बोले
वचन करूर॥श्रा०॥५॥मन माहें नहिं कंपियोजी,
हस्ती सुण्डमें झाल ॥ पौषद शाला बार लईजी,
दियो अकाशे उछाल ॥ श्रा० ॥६॥ दन्त सूलमें

झेलने जी, काँबऱनीपरे रोल । उजल वेदना उपनी जी,नहिं चलियो ध्यान अडोल॥श्रा०॥७॥ गजपणो तज सर्प भयोजी, कालो महा विकराल ॥ डंक दियो कामदेवने जी, क्रोधी महा चण्डाल ॥ श्रा० ॥८॥ अतुल वेदना उपनीजी, चलियो नहीं तिल मात॥ सूर तहां प्रगट थयो जी, देवता रूप साक्षात ॥ श्रा० ॥ ॥ कर जोड़ीने इम कहेजी, थांरा सुरपति किया है वखाण ॥ म्हे नहिं सरदह्यो मूढ़ मतीजी, थांने उपसर्ग दीनो आण ॥ श्रा०॥१०॥ तन मन कर चलिया नहींजी, थे धर्म पायो परमाण ॥ खमजो अपराध ते माहरोजी, इम कहि गयो निज ठाण ॥ श्रा० ॥११॥ वीर जिणन्द समोसरचा जी, कामदेव वन्दण जाय ॥ वीर कहे उपसर्ग दियोजी, तोने देव मिथ्याती आय ॥श्रा०॥१२॥ हन्ता सामी सांच छे जी, तद समणा समणी बुलाय ॥ घर बेठ्यां उपसर्ग सह्योजी, इम परशं

से जिन राय ॥ श्रा० ॥१३॥ वीस वरस लग पालियोजी, श्रावक नाव्रत वार ॥ पहिले सरगे उपनोजी, चवजासी भव पार ॥ श्रा० ॥१४॥ आ दृढ़ताई देखनेजी, पालो श्रावक धर्म ॥ कामदेव श्रावकनी परेजी, थे पासो शिव सुख पर्म ॥ श्रा० ॥१५॥ मुरधर देश सुं आएनेजी, जैपुर कियो है चौमास॥ अष्टादश छियासीय जी, रिख षुसालचन्दजी कियो प्रकाश ॥श्रा०॥१६॥

॥ अथ पंच तीर्थनो स्तवन लिख्यते ॥

तुम तरण तारण, भव निवारण, भविकमन आनन्दनं ॥ श्रीनाभिनन्दन जगतवन्दन, श्रीआदि नाथ निरंजनं ॥ १ ॥ श्री आदि नाथ अनादि सेउं: भाव पद पूजा करूं ॥ कैलाश गिरि पर रिखव जिन वर, चरण कमल हिवडै धरूं ॥२॥ ध्यान धुपे मन पुष्पे, अष्ट करम विनाशनं ॥ क्षमा जाप सन्तोष सेवा, पूजूं देव निरंजनं॥३॥ तुम अजित नाथ अजीत जीते, अष्ट कर्म महा-

वली ॥ प्रभु विरद सुण कर शरण आयो, कृपा कीजे नाथजी ॥ ४ ॥ तुम चन्द्र पूरण चन्द्र लंछन, चन्द्रपुरी परमेश्वरं ॥ महासेन नन्दन जगत वन्दन, चन्द्रनाथ जिणेश्वरं ॥ ५ ॥ तुम बाल ब्रह्म विवेकसागर, भविक मन आनन्दनं ॥ श्री नेमिनाथ पवित्र जिन वर, तीमर पाप विनाशनं ॥ ६ ॥ जिन तजी राजुल राजकन्या, काम सेना वश करी ॥ चारित्र रथ पर चढ़े दूलह, शाम शिव सुन्दर वरी ॥ ७ ॥ कन्दर्प दर्प सुसर्प लंछन, कमठ संठ निरगल कियो ॥ श्री पार्श्वनाथ सपूज्य जिनवर, सकल शीघ्र मंगल कियो ॥ ८ ॥ तुम कर्म धाता मोक्षदाता, दीन जान दया करो ॥ सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन महावीर मया करो ॥ ९ ॥

॥ अथ चार सर्णाको स्तवन लिख्यते ॥

हिरदै धारो हो भवियण, मंगलीक सरणा च्यार ॥ ए टेक ॥ पो हो उठी नित समरीजे, हो

भवियण । मंगलीक शरणा चार, आपदा टले सम्पदा मिले, हो भवियण दौलतना दातार॥१ अरिहन्त सिद्ध साधु तणा ॥ हो भवि० ॥ केवली भाषित धरम, ए चांरु जपतां थकाँ ॥ हो भ० ॥ तुटे आठई करम ॥ हिरदै० २ ॥ ए सरणा सुखकारीया ॥ हो भ० ॥ ए सणी मंगलीक ॥ ए शर्णा उत्तम कह्या ॥ हो भ० ॥ ए सरणा तहतीक ॥ हिरदै० ३ ॥ सुखसाता वरते घणी ॥ हो भ० ॥ जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो आधार ॥हिरदै०॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी ॥ हो भ० ॥ सिंह चीताने सूर । वैरी दुश्मन चोरटा ॥ हो भ० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हिरदै०॥५॥ निशि दिन याने ध्यावतां ॥ हो भ० ॥ पामें परम आनन्द, कमी नहीं कीणी वातरी ॥ हो भ० ॥ सेव करै सुर इन्द्र ॥हि० ६ ॥ गेले घाटे चालंता ॥ हो भ० ॥ रात दि-

वस मझार ॥ गावां नगरां विचरतां ॥हो भ०॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥७॥ इन सरिसा सरणा नहीं ॥ हो भ० ॥ इण सरिसी नहि नाव ॥ इण सरिसो मन्त्र नहीं ॥ हो भ० ॥ जपतां बाधे आव ॥ हि०॥८॥ राखो सरणारी आसता ॥ हो भ० ॥ नेड़ो न आवे रोग ॥ वरते आणन्द जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो संयोग ॥ हि०॥९॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो भ० ॥ निश्चय फल निरवाण ॥ कुमी नहि देवलोकमें ॥ हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ हि०॥१०॥ संवत अठारे बावन्ने ॥हो भ० ॥ पाली सेखे काल ॥ रिख चौथमल जी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥११ ।

॥ अथ चित्त संभूत्तीकी सज्झाय लिख्यते ॥

चित्त कहै ब्रह्मरायने, कछु दिल माहि आणो ॥ पूरव भवरी प्रीतड़ी तुमे मूल न जाणो

हो ॥ वंधव वोल मानो हो ॥ १ ॥ कतवारी रा सूत ज्यों, सांधो दे आणो हो॥ जाती समरण ज्ञान थी, पूर्व भवजाणो हो ॥ वं० ॥ २ ॥ देश देशायण राजा घरे, पहले भव दासे हो ॥ वीजे भव कालिंजरे, थया मृग वन वासे हो ॥ वं ॥ ३ ॥ तीजे भव गंगा तटे, आपे हंसला हूता हो॥ चौथे भव चण्डाल रे, घर जन्म्यापूता हो ॥ वन्धव० ॥४॥ चित्त संभूत दोनो जिणा, गुण वहुला पाया हो ॥ शरणे आयो आपणे, तिण पंडित पढ़ाया हो ॥ वंध० ॥५॥ राजानगरी थी काढ़िया, आपे मरणा मंडिया हो ॥ वन माहें गुरु उपदेश थी, आपां घर छंड़िया हो ॥वं०॥६॥ संयमले तपश्या करी, लब्धधारी हूता हो । गावां नगरां विचरता, हस्तीनापुर पहूंता हो ॥वं०॥७॥ निमुचि ब्राह्मण ओलख्या नगरी थी काढाव्या हो ॥ कोप चढ्या वेहूं जिणा, संथारा ठाया हो ॥ वंधव ॥८॥ धर्मोथें

वस मझार ॥ गावां नगरां विचरतां ॥हो भ०॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥७॥ इन सरिसा सरणा नहीं ॥ हो भ० ॥ इण सरिसी नहि नाव ॥ इण सरिसो मन्त्र नहीं ॥ हो भ० ॥ जपतां वाधे आव ॥ हि०॥८॥ राखो सरणारी आसता ॥ हो भ० ॥ नेड़ोन आवे रोग ॥ व-रते आणन्द जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो संयोग ॥ हि०॥९॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो भ० ॥ निश्चय फल निरवाण ॥ कुमी नहि देवलोकमें ॥ हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ हि०॥१०॥ संवत अठारे बावन्ने ॥ हो भ० ॥ पाली सेखे काल ॥ रिख चौथमल जी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥११ ।

॥ अथ चित्त संभूत्तीकी सज्झाय लिख्यते ॥

चित्त कहै ब्रह्मरायने, कछु दिल माहि आणो ॥ पूरव भवरी प्रीतड़ी तुमे मूल न जाणो

हो ।। बंधव बोल मानो हो ।। १ ।। कतवारी
रा सूत ज्यों, सांधो दे आणो हो।। जाती सम-
रण ज्ञान थी, पूर्व भवजाणो हो ।। बं० ।। २ ।।
देश देशायण राजा घरे, पहले भव दासे हो ।।
बीजे भव कालिंजरे, थया मृग वन वासे हो ।।
बं ।। ३ ।। तीजे भव गंगा तटे, आपे हंसला
हूता हो।। चौथे भव चण्डाल रे, घर जन्म्यापूता
हो ।। बन्धव० ।।४।। चित्त संभूत दोनो जिणा,
गुण बहुला पाया हो ।। शरणे आयो आपणे,
तिण पंडित पढ़ाया हो ।। बंध० ।।५।। राजान-
गरी थी काढ़िया, आपे मरणा मंडिया हो ।।
बन माहें गुरू उपदेश थी, आपां घर छंड़िया
हो ।।बं०।।६।। संयमले तपश्या करी, लब्धधारी
हूता हो । गावां नगरां विचरता, हस्तीनापुर
पहूंता हो ।।बं०।।७।। निमुचि ब्राह्मण ओलख्या
नगरी थी काढाव्या हो ।। कोप चढ्या बेहूं
जिणा, संथारा ठाया हो ।। बंधव ।।८।। धवोथें

कीधो लब्ध थी, नगरी भय पाया हो ॥ चक्रवर्त्त निज परिवार सुं आवि तुरत खमाव्या हो ॥ वं०॥९॥ रत्ना राणी रायनी, आवी शीश नमायो हो । पग पुज्यां केसांथकी, थांरे मन भाया हो ॥ वं०॥१० ॥ निहाणे तुमे किया, तपनो फल हारचो हो । म्हें थांने वन्धव वरजियो, तुमे नाही विचारचो हो ॥ वं० ॥११॥ ललनी गुलनी वीमाणमें भव पाचमें थया हो । तिहां थी चवी करी, कपिलापुर आया हो ॥ वं०॥१२॥ हमे तिहां थी चवी करी, गाथापती थया हो । संयम भ र लेई करी॥ तोसु मिलणने आया हो ॥ वं० ॥ १३ ॥ चक्रवर्त्त पदवी थें लीवी, रिद्ध सगली पाइ हो ॥ किधो सोई पामियो हिवे कमीयन काइ हो ॥ वं० ॥ १४ ॥ समरथ पदवी पामिया, हिवे जनम सुधारो हो॥ संसारना सुख कारमा, विखिया रसवारो हो ॥ वं० ॥ १५ ॥ राय कहै सुण साधुजी, कछू और

मझारी हो ॥ कर जोड़े कवियण कहे, आवागमण निवारी हो ॥ वं० ॥ २३ ॥

॥ अथ जीवा पात्री सीरी सज्झाय लिख्यते ॥

जीवा तुं तो भोलोरे प्राणी, इम रुलियोरे संसार ॥ मोहो मिथ्यातकी नींदमें, जीवा सूतो काल अनन्त ॥ भव भव माहे तु भटकियो, जीवा ते साम्भल विरतंत ॥जी०॥ १ ॥ ऐसा केई अनन्त जिन हुआ, जीवा उतकृष्टो ज्ञान अगाध ॥ इण भव थी लेखो लियो, जीवा कुण वतावे थांरी याद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्निमें, जीवा चोथीवाऊ काय॥ एक एक काया मध्यें, जीवा काऊ असंख्याता जाय ॥जी०॥३॥ पंचमी काय वनस्पती, जीवा साधारण प्रत्येक॥ साधारणमे तुं वस्यो, जीवा ते सांभली सुविवेक ॥ जी० ॥ ४ ॥ सुई अग्र निगोदमें, जीवा श्रेण असंख्याती जाण । असंख्याता प्रतर एक श्रेणमें, जीवा ईम गोला असंख्याता प्रमाण ॥

जी० ॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये, जीवा श-
रीर असंख्याता जाण । एक एक शरीर में,
जीवा ॥ जीव अनन्ता प्रमाण ॥ जी० ॥६॥ ते
माँथी अनादी जीवड़ा , जीवा मोक्ष जावे धीग
चाल ॥ एक शरीर खाली न हुवे, जीवा न हुवे
अनन्ते काल ॥ जी० ॥ ७ ॥ एक २ अभवी
संगे, जीवा भव अनंता होय । वली विसेखे
जाणिये, जीवा जन्म मरण तू जोय ॥ जी० ॥
८ ॥ दोय घड़ी काची मध्ये, जीवा पैसठ सहेंस
सो पांच । वत्तीस अधिका जाणज्यो, जीवाए
कर्मानी खांच ॥ जीवा० ॥ ९ ॥ छेदन भेदन
वेदन वेदना, जीवा नरके सही बहु वार । तीण
सेती निगोदमें, जीवा अणन्त गुणी विचार ॥
जी० ॥ १० ॥ एकेन्द्री माह्य थी निकल्यो,
जीवा इन्द्री पाम्यो दोय । तव पुन्याई ताहारी,
जीव तेथी अनन्ती होय ॥ जी० ॥ ११ ॥ इम
तेरन्द्री चोरन्द्री जीवमा, जीवा वे वे लाख ए

जात । दुःख दिठा संसारमें, जीवा सुणता अचरज बात ॥ जी० ॥ १२ ॥ जलचर थळ-चर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर जात । शीत ताप तृषा सहि, जीवा दुःख सह्या दिन रात ॥ जी० ॥ १३ ॥ इम भमन्तो जीवड़ो, जीवा पाम्यो नर भव सार । गरभावासमें दुख सह्या, जीवा ते जाणे करतार ॥ जी० ॥ १४ ॥ म-स्तक तो हेठो हुवे, जीवा उपर रहे वहु पाय ॥ आंख्यां आडी मुष्टो बेहु, जीवा इम रह्या भिष्टा घर माय ॥ जी० ॥ १५ ॥ बाप वीरज माता रुद्र, जीवा इसडो लियो थे आहार । भूळ गयो जन्म्या पछे, जीवा सेवो करे अतिचार ॥जी०॥ ॥ १६ ॥ ऊंट कोड सुई लाल करे, जीवा चांपे रुं रुं माय । अष्ट गुणी हूवे वेदना, जीवा गर-भा वासारे माय ॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवे क्रोड गुणी; जीवा मरता क्रोड़ा क्रोड़ ॥ जनम मरणरा जीवडा, जीवा जाण जो मोटी खोड॥

जी० ॥ १८ ॥ देश आनारज ऊपनो, जीवा इन्द्री हीनी होय । आऊखो ओछो हुवे, जीवा धर्म किसी विध होय ॥ जी० ॥ १९ ॥ कदाचित नर भव पामियो, जीवा उत्तम कुल अवतार ॥ देही निरोगी पायने, जीवा यु खोईयो जमवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग फांसीगर चोरटा, जीवा धीवर कसाईरी न्यात । उपजीने मुईजीसी, जीवा एसी न रही काई जात ॥ जी० ॥२१ ॥ चवदेई राजलोकमें, जीवा जनम मरणरी जोड़ । खाली बालाग्र मात्राए, जीवा ऐसी न रही कोइ ठोड़ ॥ जी० ॥ २२ ॥ एही जीव राजा हुवो, जीवा हस्ती बांध्या बार । कबहीक करमा वसे, जीवा न मिले अन्न उधार ॥ जी० ॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थकों, जीवा पाम्यो समगत सार । आदरीने छिटकाय दीवी, जीवा ज्जाय जमारो हार ॥ जी० ॥ २४ ॥ खोटा देवज सर दिया, जीवा

लागो कुगुरु केड । खोटा धर्मज आदरी, जीवा किधा चीउ गति फेर ॥ जीवा० ॥ २५ ॥ कव हिक नरके गयो, जीवा कवही हुंवो तूं देव ॥ पुन्य पापना फळ थकी, जीवा लागी मिथ्या-तनी टेव ॥ जीवा० ॥ २६ ॥ ओगाने वले मु-मती, जीवा मेरु जेवड़ी लीध । एक ही सम-कित विना, जीवा कारज नहि हुवो सिद्ध ॥ जी० ॥ २७ ॥ चार ज्ञान तना धणी, जीवा नरक सातमी जाय । चवदे पुरब नो भाग्यो, जीवा पडे निगोदनी माय ॥ जी० ॥ २८ ॥ भगवन्तनो धर्म पाल्या पछे, जीवा करणी न जावे फोक । कदाचित पड़वाई हूवे, जीवाअर्ध पुदगल माहि मोक्ष ॥ जी० ॥ २९ ॥ सूक्षमने वादर पणे, जीवा मेली वर्गणा सात । एक पुदगल प्रावर्तनी, जीवा झीणी घणी छे वात ॥ जी० ॥ ३० ॥ अनन्त जीव मुक्ते गया, जीवा टाळी आतम दोष । नही गया नहि जावसी,

जीवा एक निगोदना मोख ॥ जी० ॥ ३१ ॥ पाप आलोई आपणा, जीवा अव्रत नाला रोक। तेथी देवलोक जावसो, जीवा पनरे भव माही मोक्ष ॥ जी० ॥ ३२ ॥ एहवा भाव सुणी करी, जीवा सर्धा आणी नाह। जिम आयो तिम ही ज गयो, जीवा लख चौरासी माँह ॥ जी० ॥ ३३ ॥ कोई उत्तम नर चिंतवे, जीवा जाणे अथीर संसार। साचो मारग सर्धीने, जीवा जाए मुक्त मझार ॥जी०॥३४॥ दान सियल तप भावना, जीवा इणसों राखो प्रेम। क्रोड़ कल्याण छे तेहने, जीवा रिख जेमलजी कहे एम ॥ जीवा० ॥ ३५ ॥

अथ म्रघापुत्रकी सज्झाय लिख्यते ॥

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा वलभद्र नाम ॥ तस घरराणी म्रघावती जी, तस नन्दन गुणधाम ॥ ए माता खीण लाखीणी रे जाय ॥ १ ॥ एक दिन बैठा गोखड़े जी, राण्या रे परि-

वार । सीसदाजेने रवि तपे जी, दीठा तब अण-
गार ॥ ए माता० ॥२॥ मुनि देखी भव सांभा-
ल्योजी, मन बसियोरे बैराग । हरख धरीने उ-
ठिया जी, लागा मातांजीरे पाय ॥ ए जननी
अनुमति दे मोरी माय ॥३॥ तूं सुख माल सु-
हामणो जी, भोगो संसार ना भोग । जोवन
वय पाछी पड़े जब, आदर जो तुम जोग । रे
जाया तुझ विन घड़ीरे छ मांस ॥४॥ पाव पल-
करी खबर नहीं ऐ मांय, करे कालकोजी साज॥
काल अजाण्यो झड़ पड़े जी, ज्यों तीतर पर
बाज ॥ ए माता खिण लाखिणी रे जाय ॥५॥
रत्न जड़ित घर आंगणाजी, तू सुन्दर अवतार ।
मोटा कुलरी उपनीजी, कांई छोडो निरधार ॥रे
जाया तू० ॥६॥ वांदी घरवादी रचिये एमाय,
खिणमें खेरु थाय, ज्युं संसारनी सम्प्रदाजी,
देखंता या विलजाय॥ ए मातां० ॥७॥ पिलंग
पथरणे पोढणोजी, तूं भोगीरे रसाल ॥ कनक

कच्चोले जीमणोजी, काछलडीमे आहार ॥ रे जाया ॥तू॥८॥ सांयर जल पिया घणाये माय, चुग्या मातारा थान । तृप्त न हुवो जीवडोजी, इधक अरोग्या धान ॥ए माता० ॥९॥ चारित्र छे जाया दोहिलो जी, चारित्र खांडानी धार । विन हथियारा झुंजणोजी, औषध नइहै लिगार ॥रे जाया ॥तु०॥ १० ॥ चारित्र छे माता सोह्यलोजी, चारित्र सुखनी जी खान ॥ चवदेई राज लोकनाजी, फेरा टालणहार ॥ एमाता ॥११॥ सियाले सी लागसी जी, उनाले लुरे बाय ॥ चौमासे मेलां कापड़ाजी ए दुःख सह्योह न जाय रे जाया० ॥१२॥ बनमाछे एक मृगलोजी, कुंण करे उणरिज सार ॥ मृगानी परे विचरसुं जी, एकलड़ो अणगार ॥ ए मांता०॥१३॥ मात बचन ले निसरयाजी, अघा पुत्र कुमार ॥ पञ्च महाव्रत आदरयाजी, लीधो संयम भार ॥ ए माता० ॥१४॥ एक मासनी सलेखनाजी, उप-

नो केवलज्ञान । कर्म खपाय मुक्ते गयाजी, ज्यां-
रालीजे नित प्रति नाम ॥ ए माता० ॥ १५ ॥

सोला सुपनचन्द्र गुप्त राजा दीठा लि० ॥

दोहा-पाडलिपुर नामे नगर, चन्द्रगुपति तिहां राय
सोले सुपना देखिया, पेखिया पोसा माय ॥१॥
तिण कालेने तिण समे, पांच सहे मुनि परि-
वार । भद्रबाहु स्वामी समोसरचा, पाडलि वाग
मझार ॥२॥ चन्द्रगुप्त बांदण गयो, वैठी पर्षदा
माय ॥ मुनिवर दीधी देसना, सगलाने हित
लाय ॥ ३ ॥ चन्द्र गुप्तराजा कहे, सांभल जो
मुनिराय ॥ मै सोले सुपना लह्या, ज्यांरो अर्थ
दीजो समलाय ॥ ४ ॥ बलता मुनिवर इम कहै
सांभल तू राजान । सोला सुपना नो अरथ,
इक चित राखो ध्यान ॥ ५ ॥

ढाल—रे जीव विषय न राचिये ॥ ए देशी ॥
दीटो सुपनो पेलड़ो, भांगि कल्पवृक्ष डालोरे ॥
राजा दीक्षा लेसी नहिं, इण दुषण पञ्चम का-

लोरे॥ चन्द्रगुप्त राजा सुणो ॥१॥ कहै भद्रबाहु स्वामी रे, चवदे पूर्वना धणी, चार ज्ञान अभिरामोरे ॥ चन्द्र० ॥२ ॥ सूर्य अकाले आथम्यो, दुजेए फळ जोयोरे ॥ जाया पांचवे कालमें, ज्याने केवल ज्ञान न होयोरे ॥ चं०॥३॥ त्रीजे चन्द्रज चालणी, तिणरो ए फल जोयोरे ॥ समाचारी जुइ जुइ, वारोव्या धर्म होसी रे ॥ चं० ४ ॥ भूत भूतनी दीठा नाचता, चौथे सुपनेराय जोसीरे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसीरे ॥चं०॥५॥ नाग दीठो बारै फणो, पांचमें सुपने भाली रे ॥ केतलाक वरसा पछे, पड़सी वार दुकाली रे ॥ चं० ॥६॥ देव विमाण बल्यो छठे, तिणरो सुणराय भेदोरे ॥ विध्याजंगा चारणी, जासी लबद विछेदोरे ॥चं० ॥७॥ उगो उकरडी मजे, सातमे काल विमासीरे ॥ चारूं ही वर्णा मजे, वाणया जैन धर्म थासीरे ॥चं०॥ ८ ॥ हेत कथाने चोपई, स्तवना सिजायने जो-

डोरे ॥ इणमे घणा प्रतिबोधिसी, सूत्रनी रुचि थोडीरे ॥ चं०॥९॥ एको न होसी सहु वाणिया जुदो २ मत जालोरे ॥ षांच करसी आप आपणी, विरला धर्म रसालोरे ॥चं०॥१०॥ दीठो सुपने आठमें, आगि आनु चमतकारोरे ॥ अल्प उ-दोत जिन धर्मनु, वहु मिथ्यात अंधकारोरे ॥चं० ॥ ११ ॥ तपस्या धर्म वखाणनो, राग करचा होसी भेलारे ॥ ईम कर्त्ता अजांणनी, छती अ-छती होसे हेलारे ॥ चं० ॥१२ ॥ समुद्र सुको तिनु दिसे, दषण दिसे डोहलु पाणीरे ॥ तीन दिस धर्म विछेदहुसी, दिषण दोहलो धर्म जांणी रे ॥ चं०१३॥ जिहार पांच कल्याण थया, तिहा धर्मरी हाणोरे ॥ अर्थ नवमां सुपना तणो, होसी एसा अहिनाणोरे ॥चं० ॥१४॥ सोनारी थाली मजे स्वान षातो दीठो रे । दसमा सुपनानु अर्थ, सुगराय तुरो धारोरे ॥ चं० ॥ १५ ॥ ऊंच तणी लछमितिका, नीच तणे घर जासीरे

बधसीरे ते चुगल चोरटा, साहुकार सीदासीरे ॥
चं०॥१६ ॥ हाथी ऊपर वानरो, सुपन अगियार
में दीठोरे ॥ मलेच्छराज ऊंचो होसी, असल
हिन्दू रहसी हेंठोरे ॥ चं० ॥१७॥ दीठो सुपने
बारमें । समुद्र लोपी कारोरे ॥ कोई छोर गुरु
वापना, हो जासी विकरालोरे ॥चं०॥ १८ ॥
क्षत्री लांच ग्रहासी, बचन कही नट जासीरे
दंगादंगी होसी घगा, विसासघात थासीरे ॥
चं० ॥१९॥ कितरा एक साध साधवी, ध्रवेले
सी भेषोरे ॥ आज्ञा थोड़ो मानसी, सिष दियां
करसी द्वेषोरे ॥ चं० ॥ २० ॥ अकल विहुणा
बांछसी, गुरुवादिकनी घातोरे ॥ सिख अवनीत
होसी घणा, थोड़ा उत्तम सुपात्रोरे ॥चं०२१॥
महारथ जुता वाछड़ा, नाने थी धर्म थासीरे ॥
कदाचित वूढ़ा करे तो, प्रमाद मांहि पड़जासीरे
॥चं० ॥ २२ ॥ वालक वय घर छोड़सी, आण
वैराग भावोरे ॥ लज्जा संयम पालसी, वूढ़ा धेठ

स्वभावोरे ॥चं० ॥२३॥ सहु सर्ल नहिं बालका धेठा नहिं छे बूढ़ा रे ॥ समचै ईम ए भाव छै, अर्थ विचारो उडारे ॥ चं० ॥२४ ॥

रतज जाषादिठा, चउदमें ते सुपनानो ए जोड़ो रे ॥ भरत खेत्रना साध साधवी, हेत मिळाप होसी थोड़ो रे ॥ चं०॥२५ ॥ कलहेकारी डंबर कारिया, असमादकारी विशेषोरे ॥ उदगकरा अवनीत ए, रहसी धेषा धेषोरे ॥ चं० ॥ २६॥ वैराग्य भाव थोड़ो होसी, ग्रव लंगना धारो रे ॥ भली सीष देतां थका, करसी क्रोध अपारो रे ॥ चं० ॥ २७ ॥ प्रशंसा करसी आप आपणी, कपट वचन बहु गेरी रे ॥ आचार अशुद्धो साधातणो, उळटा होसी बैरो रे ॥ चं० ॥ २८ ॥ सुद्धोमार्ग परुपतां, तिणसु मच्छर भावो रे ॥ नन्दकचहु साधातणा, होसी धेठा सभावो रे ॥ चं० ॥ २९ ॥ राय कुमार चढ़ियो पोठीये, सुपन पनरमें देखो रे ॥ गज

जिम जिन धर्म छंडने, तेज विजोइ धर्म विसे-
षोरे ॥ चं० ॥३०॥ न्याय मार्ग थोड़ा होसी,
नीची गमसी वातो रे ॥ कुबुद्धि घणा मानी
जसी, लालच ग्राही वरतो रे ॥ चं० ॥ ३१ ॥
वगर मावत हाथी लड़े, सुपन सोलमें एहो रे॥
काल पड़सी छोड आन्तरा, मांग्या मेहन होसी
रे ॥ चं ॥ ३२ ॥ अकाले बृक्षा होसी, काल-
वर ससि थोड़ो रे ॥ वाट धणी जो वड़सी,
तिण अननाहुसी तोलोरे ॥चं० ॥ ३३ ॥ बेटा
गुरु मावित्रना, करसी भगती थोड़ी रे ॥ मा
वित्रवात करतां थका, विच माहि लेसी तोड़ीरे
॥ चं० ॥ ३४ ॥ भाई भाइ माहोमाहमें, थोड़ो
होसी हेतोरे ॥ घणी लड़ाइने ईर्षा, वधसी एण
भर्त क्षेत्रोरे ॥चं० । ३५॥ कोण कायदो थोड़ो
होसी, उच्छो होसी तोळोरे॥ घणा राड झगड़ा
करे, ऊपर आणसी बोलोरे॥ चं ॥ ३६ ॥ अर्थ
सोल सपना तणु; कह्यो भद्रबाहुस्यामोरे॥ जिन

भाख्यो न हुवे अन्यथा, सूराजा तज कामोरे॥
॥चं०॥ ३७॥ एवा सोल सुपना सुणने, सिंह
जिम प्राक्रम करसीरे ॥ जिन वचन आरा-
धसी, ते शिव रमणी बरसीरे ॥ चं० ॥ ३८॥
एवा बचन सुणेराही, राय जोड़ा बेहु हाथोरे।
वैराग भाव आणी कहै, मैं तो सध्यां कृपा ना
थोरे ॥ चं०॥३९॥ राज थापी निज पुत्रने, हूं
लेसु संयम भारोरे ॥ बलता गुरु इसड़ी कहै,
मत करो ढील लगारोरे ॥ चं० ॥ ४० ॥ पुत्र
ने राज वेसाडने, चन्द्रगुप्त लीधो संयम भारोरे
छता भोग छटकायने, दीधो छकाय नेटारोरे ॥
चं० ॥ ४१ ॥ धन करणी साधांतणी, वाणी
अमिय समाणीरे ।। जेनु दरसन देखने, घणा
प्राणी आतरसीरे॥चं०॥४२॥चोखो चारित्र पा-
ळिने, सुर पदवी लहि सारोरे । जिन मारग आ-
राधने, करसी खेवो पारोरे ॥ चन्द्र ॥ ४३ ॥
अथिर माया संसारनी; आप कह्या जिन रायोरे

नंदणेय, जंसीरतिं वेदयंती महिन्दा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्द महप्पगासे, विरायती कंचण मट्ठ-
वन्ने ॥ अणुत्तरे गिरिसुय पव्वदुग्गे, गिरीवरेसे
जलिएव भोमे ॥ १२ ॥ महीइ मज्झंमि ठिते-
णगिंदे, पन्नायते सुरिय सुद्धलेसे ॥ एवं सि-
रीएउस भूरिवन्ने, मणोरमे जावइ अच्चिमाली
॥१३ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई
महतो पव्वयस्स ॥ एतोवमे समणेनायपुत्ते,
जातीजसो दंसणनाणसीले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा
निसहोययाणं, रुयएव सेट्ठे वलयायताणं ॥ तउ-
वमेसे जगभूइ पन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहुपन्ने
॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झा-
णवरं झियाइं ॥ सुसुक्कसुक्कं अपगंड सुक्कं,
संखिदु एगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं
परमं महेसी, असेस कम्मं सविसोहइत्ता ॥
सिद्धिंगते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दं-
सणेण ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाते जह सामलीवा,

जस्सि रतिं वेययंती सुवन्ना ॥ वणेसु वाणंदण माहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूरिपन्ने ॥१८॥ थणियंव सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दोव ताराण महाणुभावे ॥ गंधे सुवा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्न माहु ॥१९॥ जहा सयंभू उद-हीणसेट्ठे,नागेसु वा धरणिंद माहु सेट्ठे॥ खोउद ए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ ॥ २० ॥ हत्थीसु एरावण माहुणाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा । पक्खी सुवा गेरुले वेणु देवे, निव्वाणवादी णिहणाय पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसुवा जह अरविंद माहु ॥ खत्तीण सेट्ठे जह दंत वक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चे सुवा अणवज्जं व-यंति ॥ तवेसुवा उत्तम वंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नाय पुत्ते ॥ २३ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमावा, सभा सुहम्माव सभाण सेट्ठा ॥ निव्वाण सेट्ठा

जह सव्व धम्मा, णणायपुत्ता परमत्थीनाणी ॥ ॥ २४ ॥ पुढोवमे धुणइ विगय गेहि, न सण्णि-हिं कुव्वति आसुपन्ने ॥ तरिउं समुद्दं च महा-भवोघं, अभयंकरे वीर अणन्त चक्खू ॥ २५ ॥ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अ-ज्झत्थ दोसा ॥ ए आणिवंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया किरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ॥ से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं ॥ २७ ॥ से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ॥ लोगं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय सव्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरहंत भा-सियं, समाहितं अट्ठपदोपसुद्धं ॥ तं सद्दहाणाय जणा अणाऊ, इंदाव देवा हिव आगमिस्संति ॥ ॥ त्तिवेमि ॥ २९ ॥

इति श्रीवीरत्थुतीनाम पट्ठमध्ययनं ॥ सम्मत्तं ॥

॥ कलश ॥

—:-:*:-:—

पंच महव्वय सुव्वय मूलं ।
समणा मणाइल साहू सुचिन्नं ॥
वेर वेरामण पजवसाणं ।
सव्व समुद्द महोदधि तित्थं ॥१॥
तित्थं करेहिं सुदेसिय मग्गं ।
नरग तिरिख विवज्जिय मग्गं ॥
सव्व पवित्रं सुनिम्मिय सारं ।
सिद्धि विमाणं अवगुय दारं ॥२॥
देव नरिंद नमसिय पूयं ।
सव्व जुगुत्तम मंगल मग्गं ॥
दुधरी संगुण नायक मेगं ।
मोक्ख पहस्स वडिंसग भूयं ॥२॥
॥ इति श्रीवीर स्तुति समाप्तम् ॥

॥ अथ शान्तिनाथ स्वाध्याय लिख्यते ॥

प्रात उठ श्री संत जिणंदको, समरण कीजै घड़ी घड़ी ॥ संकट कोटि कटे भव संचित, जो ध्यावे मन भाव धरी ॥ प्रा० ॥ ए आंकड़ी ॥ जनमत पाण जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाधमरी॥घटघट अंतर आनंद प्रगट्यो,हुलस्यो हिवड़ो हरख धरी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आपद विंत्र विषम भय भांजे, जैसे पेखत मृगहरी ॥ एकण चितसूं सुध बुध ध्याता, प्रगटे परिचय परम-सिरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ गये बिलाय भरमके वादल, परमार्थ पद पवन करी ॥ अवर देव एरंड कुण रोपे, जो निज मंदिर केल फली ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तो सूं करीये करम अरी ॥ रतनचन्द शीतलता व्यापी, पापी लाय कषाय टली ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिनाथ स्तवन स्वाध्याय लिख्यते ॥

सांवरियो साहेब है मेरो, म्हें चाकर प्रभु तेरो॥ भव सागरमें बहु विध भटक्यो, अबतो करो निवेरो ॥ सांवरि० ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ अष्ट करम मोय निपट धकायो, दियो झपट घन घेरो॥ साहेब मेहर नजर कर मोपर, वेगो आण विखेरो ॥ सां० ॥ २ ॥ चौरासीकी फांसी गालो, टालो भवो भव फेरो ॥ सेवकने साहेब हिवे दिजे, मुगत महलमें डेरो॥ सां० ॥ ३ ॥ भोलो हंसराज नहि समझे, देत है करम दरेरो ॥ इभ चल सुखनी चाय हुवे तो, लेस्यां सरणो जिन केरो ॥ सां० ॥ ४ ॥ जुगमें नाम चिंतामणि तेरो, सो म्हे काढ्यो हीरो । रतनचन्दजी कहै, निज उठ जिनजीको, लीजे नाम सवेरो ॥ सांवरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शान्तिनाथ स्तवन स्वाध्याय लिख्यते ॥

धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिणेश्वर

स्वामी ॥ मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सव
भणो सुख गामी ॥ तुं धन ॥१॥ ए आंकड़ी ॥
आवतरीया अचला दे उदरे, माता साता पामी
॥ संत ही साथ जगत बरताई, सर्व कहे सिर-
नामी ॥तुं धन॥२॥तुम प्रसाद जगत सुख पायो
भूले मूढ हरामी ॥ कंचन डार कांच चित देवे,
वांकी बुद्धिमें स्वामी ॥ तुं धन ॥ ३ ॥ अलख
निरंजन मुनि मन रंजन, भय भंजन विसरामी
॥ शिव दायक नायक गुण गायक, पाव
कहै शिवगामी ॥ तुं धन० ॥ ४ ॥ रतनचन्द
प्रभु कछु अन मांगे, सुणतूं अन्तरजामी ॥ तुम
रहेवानी ठोर वताओ, तो हूं सहु भरपामी॥तुं
धन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्ट जिन स्तवन लिख्यते ॥

(श्रीनवकार जपो मनरंगे ॥ एहनी देशी)

पह ऊठी परभाते वंदु, श्री पदम प्रभुजीरा पा-
यरी माई ॥ वासु पूज्यजी तो म्हारे

कर्मीयन राखो कायरी माई ॥ उपजे आनन्द आठ जिन जपता, आठुं कर्म जाय तूटरी माई ॥ १ ॥ सुख संपदनेलीला लाधै, रहे भरिया भण्डार अखूट री माई ॥ उ० ॥ २ ॥ दोनुं जिनवर जोड विराजे, हिंगुल वरण लालरी माई ॥ तीरथ थापीने करमाने कापी, पाप किया पथ माटरी माई ॥ उ० ॥ ३ ॥ चन्दा प्रभुजीने सुबुधि जिनेश्वर, दोय हुवा सुपेतरी माई ॥ मोत्या वरणी देही दीपे, मुज देखण अधीक उम्मेदरी माई॥उ०॥४॥मलियनाथ जिन पारस परभु, ए निला मोरनी पांखरी माई ॥ निरखंतारा नयण न धापें, अमिय ठरे ज्यांरी आंखरी माई ॥ उ० ॥ ५ ॥ मुनियसुव्रत जिन नेमि जिणेश्वर, सांवल वरणा शरीररी माई ॥ इन्द्रासुं वलीइधका दीपे, दीठां हरखे हिवडो हीर री माई ॥ उ० ॥ ६ ॥ रूप अनूपम आ- ॰ विराजे, ज्युं हीरा जडिया हेमरी माई ॥

अक्षर सुं अधिकी कसवाई, मुज कहेता न आवे केम री माई ॥ उ० ॥ ७ ॥ शिवपुर माहि सा-हेब सोवे, हुं नवी जाणुं दूर री माई ॥ मुज चित्त माहे वस्या परमेश्वर, बहु उगंते सूर री माई ॥ उ० ॥ ८ ॥ ए आठुं अरिहंतारे आ-गळ, अरज करूं कर जोड़ी री माई ॥ रिख-रायचन्दजी कहे ज्ञानी म्हारा, पूरोनी सघला कोडरी माई ॥ उ० ॥ ९ ॥ संवत अठाराने बरस छत्तीसे, कियो नागोर सेहेर चौमासरी माई ॥ प्रसाद पूज जेमलजी केरो, कियो ज्ञान तणो अभ्यासरी माई ॥ उ० ॥ १० ॥

॥ अथ सीमंदर स्वामीको स्तवन लिख्यते ॥

(केसरीया उपर वारणाजी ए देशी)

श्री सिमंदरजी सुणजो म्हारी विनंती, तुम छोजी परमदयालोजी ॥ भगत वच्छल भगवन्त छो, करुणा सागर किरपालोजी ॥ श्री० ॥१॥ राज श्रेयांसघर आवतरया, संतकी मान म-

लारोजी ॥ वृषभ लंछन पगतल वसे, सेवकने सुखकारोजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ आडाजी डुंगर वण घणा, देवेन दिधी मुझको पंखो जी॥ कहो जी हुं किण विध आयनमुं, अरज करेछे मोरी आंखोजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एक अलगा पिण हुंकड़ा, वसो तुम जेहने चित्तोजी ॥ अणगमता अलगां रहे, मन पाके किम हुवे प्रीतोजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तुम विना देव अनेरडा, महारे मन ना सुहायजी ॥ सरस मेवा लेई सायबा, कुण लिंबोलडी खायजी ॥ श्री० ॥५॥ राग द्वेष जिणने नहीं, सो परमेश्वर दीठाजी ॥ चाख्या विना किम जाणी ये, केई फल कड़वा केई मीठाजी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ प्रेम निजर भर निरख जो, दीजो दीजो शिवपुरनो बासोजी; ज्ञानी लालचन्द कहे माहारी, सामीजी सों एही अरदासोजी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति

—:o:*:o:—

॥ अथ उपदेशी पद लिख्यते ॥

बटाऊरे बीत गईओ सारी रेण ॥ गुजर गई ओ सारी रेण ॥ ए टेर ॥ दोय घडी तणो तडको रहे गयो, सुण सुण सतगुरुनी वेण ॥ बटा० ॥ १ ॥ राग द्वेष दोय चोर लुटेरा, जाग जाग मन सेण ॥ बटा० ॥ २ ॥ कुटुंब कबीलो नहिं तेरो संगी, खोल देखो दोय नेण ॥ ब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीर स्वामीको छंद लिख्यते ॥

श्री महावीर सासण धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ज्यांरे चरण कमल नित चित धरुंस, प्रणमु सिरनामी ॥ सुरथित नगरी पिता मात, लक्षण अवगेहणा ॥ वरण आउखो कंवर पदे, तपस्या परिमाणा ॥ चारित्र तप प्रभु गुण भणुये; छद्मस्त केवल नाण ॥ तीरथ गणधर केवली, जिन सासण परिमाण ॥१ ॥ देवलोक दसमें वीससागर, पूरण स्थित पाया ॥ कुण्ड-

गपुर नगरी चौवीस, श्री जिनवर आया ॥
पिता सिद्धारथ पुत्र, मात त्रसलादे नंदा ॥
ज्यांरी कुक्षे अवतरया, स्वामी वीर जिणन्दा॥
ज्यांरे चरण लक्षण छे सिंघनोए, अवगेहणा
कर साथ॥ तनु कंचन सम शोभति, ते प्रणमुं
जगनाथ ॥ २ ॥ बोहोत्तर बरसनो आउखो,
पाया सुख कारी॥ तीस बरस प्रभु कुंवर पदे,
रह्या अभिग्रह धारी ॥ सुमेर गिर पर इन्द्र
चौसठ, मिल ओहोच्छव कीनो । अनंतबली
अरिहंत जाणी, नाम प्रभुनो दीनो ॥ ज्यांरी
मात पिता सुरगति ले आये, पछेलीनो संयम
भार ॥ तपस्या कीनी निरमली, प्रभुसाढे वारे
वरस मझार ॥ ३ ॥ नव चौमासी तप कियास,
प्रभु एक छमासी ॥ पांच दिण उणो अभिग्रह,
एक छमास विमासी ॥ एक एक मासी तप
किया, प्रभु द्वादश विरिया ॥ वोहोत्तार पक्ष
दोय दोय मास, छविरिया गिणीया ॥ दोय

अढाई तीन दोय, इम दिडमासी दोय ॥ भद्र महा भद्र शिव भद्र तप तप्या, इम सोले दिन होय ॥ ४ ॥ भिखुनी पडिमा आष्ट भगवतिनी द्वादश कीनी ॥ दोय सोने गुणत्तीस छ्ठम तप गिणती लिनी ॥ इग्यारे बरस छ मास, पचीस दिन तपस्या केरा ॥ इग्यारे मास उगणीस दिवस, पारणा भलेरा ॥ इण विध स्वामीजी तप तप्याए, पछे लीनो केवल नाण ॥ तीस वरस उण विचरिया, ते प्रणमु वर्धमान ॥ ५ ॥ प्रथम अस्ती दुजो चम्पापुरी, पीस्ट चम्पा दोय कहिए ॥ वाणिए विशालापुर, वेहु मिलीस द्वादश लहिए ॥ चतुरदश मालंदोपाड, छ मथुला गिणिए ॥भद्दिलपुरी दोय सब मिली, अणतीस भणिए ॥ एक आलंबिया एक सावथिए, एक आनारज जाण ॥ चरम चोमासो पावापुरी, जठे प्रभु पहुंता निरवाण ॥६॥ मुनिवर चवदे सहेस, सहस छत्रीस अरजका ॥ एक लक्ष गुण सठ स-

हेस श्रावक, तीन लाख श्राविका ॥ अधिक अ-
ठारे सहस, इग्यारे गणधरनी माला ॥ गौतम
स्वामी बड़ा शिष्य, सती चंदनबाला ॥ ज्यांरे
केवल ज्ञानी सात सोए, प्रभु पहुंता निरवाण॥
सासण वरते स्वामीनो, एक बीस सहेंस वर्ष
प्रमाण ॥ ७ ॥ पूरब तिनसो धार, तेरासे आ-
वधि ज्ञानी ॥ मन प्रजव पांचसो जाण, सातसो
केवल नाणी ॥ बेक्रिय लभधिना धार, सातसो
मुनिवर कहिए ॥ वादी चारसो जाण, भिन्न २
चरचा लहिए ॥ एकाएक चारित्र लियोए, प्रभु
एकाएक निरवाण ॥ चौसठ वरस लग चा-
लियो, दरसण केवल नाण ॥ ८ ॥ बारा नर-
बल वृषभ, वृषभ दस एक जिम हैवर ॥ बारा
हैवर महिष, महिष पांचसें एक गैवर ॥ पांच
सो गज हरी एक, सहेंस दोय हरी आष्टापद
दस लाख बलदेव वासदेव,अरुदोय दोय चक्री॥
७ चक्री एक सुर कह्योये, कोड सुरा एक

इन्द्र ॥ इन्द्र अनन्ता सुननमें, चिटी अंगुली अग्र जिनन्द ॥ ९ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनन्त, कोई पार न पावे ॥ लभद प्रभावे कोड़ काय, कोड गुणसिर वणावे ॥ सीर सीर क्रोडा क्रोड़ बदन जस करेसु ज्ञानी॥ जिभ्या जिभ्यासु कोड़ कोड़ गुण करेसु ज्ञानी ॥ कोड़ा कोड़ सागर लगेए, करे ज्ञान गुणसार ॥ आप तणा प्रभु गुण अनन्ता, कहेता न आवेजी पार ॥ १० ॥ चवदेई राजुलोक, भरिया बालुंदा कणीया । सरब जीवना रोमराय, नहि जावै गिणिया ॥ एक एक बालु गुण करेस, प्रभु अणंत अणंता ॥ पूज प्रसादरिख लालचन्दजी, नही आवे कहेता ॥ समत अठारे बालष्टेए, मास मिगसर छन्द ॥ सामपुरे गुण गाइया, धन श्रीवीर जिणंद॥११॥

इति

॥ अथ उपदेशी पद लिख्यते ॥

तेरी फूलसी देह पलकमें पलटे, क्या मगरूरी

हेस श्रावक, तीन लाख श्राविका ॥ अधिक अ-
ठारे सहस, इग्यारे गणधरनी माला ॥ गौतम
स्वामी बड़ा शिष्य, सती चंदनबाला ॥ ज्यांरे
केवल ज्ञानी सात सोए, प्रभु पहुंता निरवाण॥
सासण बरते स्वामीनो, एक बीस सहेंस वर्ष
प्रमाण ॥ ७ ॥ पूरब तिनसौ धार, तेरासे आ-
वधि ज्ञानी ॥ मन प्रजव पांचसौ जाण, सातसौ
केवल नाणी ॥ बेक्रिय लभधिना धार, सातसो
मुनिवर कहिए ॥ वादी चारसो जाण, भिन्न २
चरचा लहिए ॥ एकाएक चारित्र लियोए, प्रभु
एकाएक निरवाण ॥ चौसठ वरस लग चा-
लियो, दरसण केवल नाण ॥ ८ ॥ बारा नर-
बल वृषभ, बृषभ दस एक जिम हैवर ॥ बारा
हैवर महिष, महिष पांचसें एक गैवर ॥ पांच
सो गज हरी एक, सहेंस दोय हरी आष्टापद
दस लाख बलदेव वासदेव,अरुदोय दोय चक्री॥
९ ७ चक्री एक सुर कह्योये, क्रोड सुरा एक

दादो बैठो रहै, पोतो उठ चल जावे ए ॥ तो पिण धेंठा जोवने, धरमरी बात न सुहावेए ॥ इण० ॥ २ ॥ महेल मंदिरने मालिया, नदीय निवाणने नालो ए ॥ सरगने मृत्यु पातालमें, कठियन छोड़े कालोए ॥ इण० ॥ ३ ॥ घर नायक जाणा करी, रिख्या करी मन गमती ए ॥ काल अचानक ले चल्यो, चौक्या रह गई झिलती ए ॥ इण० ॥ ४ ॥ रोगी उपचारण कारणे, वेद विचक्षण आवेए ॥ रोगीने ताजो करे, आपरी खबर न पावे ए ॥ इण० ॥ ५ ॥ सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो ए ॥ पोढ्या ढोलिए प्रेमसुं,जठे आण पहुंतो कालोए ॥ इण० ॥ ६ ॥ राज करे रलियामणो, इन्द्र अनूपम दिसे ए ॥ बैरी पकड़ पछाडियो, टांग पकड़ने घीसे ए ॥ इण० ॥ ७ ॥ वल्लभ बालक देखने, माड़ी मोटी आसो ए, छिनक माहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो ए ॥ इण० ॥८॥

राखेरे ॥ आतम ज्ञान अमीरस तजने, जहर जड़ी किम चाखेरे॥ते०॥१॥काल बैरी तेरे लारे लागो, जिम पीसे जिम फाकेरे ॥ जरा मंजारी छल कर बैठी, जिम मुसाफिर ताकेरे ॥ ते० ॥ ॥ २ ॥ सिर पर पाग लगी कसबोई, तिवड़ा छिनगा राखेरे ॥ निरखे नार पारकी नेणा, बचन विषेरस भाखेरे ॥ ते० ॥ ३ ॥ इन्द्र धनुष ज्युं पलकमें पलटे, देह खेह सम दाखेरे ॥ इणसुं मोह करे सोइ मूरख, इम कह्यो आगम साखेरे ॥ ते० ॥ ४ ॥ रतन चन्दजी जुग देख इथरता, बंधिया कर्म विपाकेरे॥सिव सुख ज्ञान दिया मोय सदगुरु, तिणसुं खरी अविलाखेरे ॥ ते० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कालरी सज्झाय लिख्यते ॥

इण कालरो भरोसो भाईरे को नहीं, ओ किण विरिया माहे आवेए ॥ बाल जवान गिणे नहीं, सर्व भणी गटकावे ए ॥ इण० ॥१॥ बाप

दादो बैठो रहै, पोतो उठ चल जावे ए ॥ तो पिण धेंठा जोवने, धरमरी बात न सुहावेए ॥ इण० ॥ २ ॥ महेल मंदिरने मालिया, नदीय निवाणने नालो ए ॥ सरगने मृत्यु पातालमें, कठियन छोड़े कालोए ॥ इण० ॥ ३ ॥ घर नायक जाणा करी, रिख्या करी मन गमती ए ॥ काल अचानक ले चल्यो, चौक्या रह गई झिलती ए ॥ इण० ॥ ४ ॥ रोगी उपचारण कारणे, वेद विचक्षण आवेए ॥ रोगीने ताजो करे, आपरी खबर न पावे ए ॥ इण० ॥ ५ ॥ सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो ए ॥ पोढ्या ढोलिए प्रेमसुं, जठे आण पहुंतो कालोए ॥ इण० ॥ ६ ॥ राज करे रलियामणो, इन्द्र अनूपम दिसे ए ॥ बैरी पकड़ पछाडियो, टांग पकड़ने घीसे ए ॥ इण० ॥ ७ ॥ वल्लभ वालक देखने, माड़ी मोटी आसो ए, छिनक माहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो ए ॥ इण० ॥८॥

नार निरखने परणियो, अपछरने उणिहारे ए॥ सूल ऊठ चलतो रह्यो,आ ऊभी हेला मारे ए॥ ॥ इण० ॥ ९ ॥ चेजारे चित्त चुंपसुं, करी अंबारत मोटी ए॥ पावडीए चढतो पड्यो, खाय न सकियो रोटी ए ॥ इण० ॥ १०॥ सुर-नर इन्दर किन्नरा, कोई न रहै निशंको ए॥ मुनिवर कालने जीतिया, जीण दिया मुक्त मांहे डङ्को ऐ ॥इण०॥११॥किसन गढ़ माहे सिडसटे आया सेखे कालोए॥ रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो ऐ ॥ इण० ॥ १२ ॥इति॥

॥ अथ धर्म रुचीनी सज्झाय लिख्यते ॥

चम्पानगर निरोपम सुन्दर, जठे धर्म रुचि रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आज्ञा ले, गोचरिया सिधाया हो ॥ मुनिवर धर्म रुची रिख वंदु॥१॥ ए आंकड़ी ॥ भव भव पाप निकाचत संचत दुकृत दूर निकंदू हो॥ सु० ॥ २ ॥ नीची दृष्टि ण सिर सोहे, मुनीश्वर गुण भंडारे ॥ भीक्षा

अटल करता आया, नाग श्रीघर द्वारे हो ॥
मु० ॥ ३ ॥ खारो तुंबो जेहर हलाहल मुनि-
वरने वेहराव्यो ॥ सहेज उखरडी आई अमघर,
कहो बाहेर कुण जावे हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ पूरण
जाणी पाछा वलिया, गुरु आगे आवी धरीयो ॥
कोण दातार मिल्यो रिखतोने, पूरण पातर भ-
रीयो हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ ना ना करतो मोने
वहिराव्यो, भाव उलट मन आणी ॥ चाखीने
गुरु निरणय कीधो, जेहर हलाहल जाणी हो ॥
मु०॥६॥ अखज अभोज कटुक सम खारो, जो
मुनिवर तुं खासी, निरबल कोठे जहेर हलाहल
अकाले मर जासी हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ आज्ञाले
परठणने चाल्या, निरवध ठोर मुनि आया ॥
विन्दु एक परठव्या ऊपर, किडिया बहु मर
जाया हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ अल्प आहार थी,
एहवी हिंसा, सर्व थी अनरथ जाणी॥ परम अ-
भय रस भाव उलट धर, किडियारी करुणा

नार निरखने परणियो, अपछरने उणिहारे ए॥ सूल ऊठ चलतो रह्यो,आ ऊभी हेला मारे ए॥ ॥ इण० ॥ ९ ॥ चेजारे चित्त चुंपसुं, करी अंबारत मोटी ए॥ पावडीए चढतो पड्यो, खाय न सकियो रोटी ए ॥ इण० ॥ १०॥ सुर-नर इन्दर किन्नरा, कोई न रहै निशंको ए॥ मुनिवर कालने जीतिया, जीण दिया मुक्त मांहे डङ्को ऐ ॥इण०॥११॥किसन गढ़ माहे सिडसटे आया सेखे कालोए॥ रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो ऐ॥ इण० ॥ १२ ॥इति॥

॥ अथ धर्म रुचीनी सज्झाय लिख्यते ॥

चम्पानगर निरोपम सुन्दर, जठे धर्म रुचि रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आज्ञा ले, गोचरिया सिधाया हो ॥ मुनिवर धर्म रुची रिख वंदु॥१॥ ए आंकड़ी ॥ भव भव पाप निकाचत संचत दुक्रत दूर निकंदू हो॥ मु० ॥ २ ॥ नीची दृष्टि २ । सिर सोहे, मुनीश्वर गुण भंडारे ॥ भीक्षा

॥ अथ ढंढण मुनिनी सज्झाय लिख्यते ॥

ढंढण रिखजीने बंदणा हूंवारी, उत्कृष्टो अण-
गाररे हूंवारी लाल ॥ अविग्रह किधो एहवो
हूंवारी, लभधे लेशु आहाररे हूंवारी लाल ॥
ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी हूंवारी,
न मिले सुजतो भातरे हूंवारी लाल ॥ मूलन
लीजे असुजतो हूंवारी, पिंजर हुय गया गात
रे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरी पुछे श्रीनेम
ने हूंवारी, मुनिवर सहेंस आठार रे हूंवारी
लाल ॥ उत्कृष्टो कुण एह में हूंवारी, मुजने
कहो किरताररे हूंवारी लाल ॥ ढं०॥३॥ ढंढण
अधीको दाखीयो हूंवारी, श्रीमुख नेम जिणंदरे
हूंवारी लाल ॥ कृष्ण उमायो बांदवा हूंवारी,
धन जादव कुलचंदरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥४॥
गलियारे मुनिवर मिल्या हूंवारी, वांद्या कृष्ण
नरेशरे हूंवारी लाल ॥ कोईक गाथा पति देखने
हूंवारी, उपनो भाव विशेषरे हूंवारी लाल ॥

आणी हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ देह पडंता दया निपजे, तो मोटा उपकारे ॥ खीर खांड समजाणी हो मुनिवर, तत्क्षण कर गया अहारे हो ॥ मु० ॥ १० ॥ प्रवल पीर शरीरमें व्यापी, आवण सक्तज थाकी ॥ पादु गमन कियो संथारो, समता दृढता राखी हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ स्वारथ सिद्ध पहुंता शुभ जोगे, महा रमणीक विमाणे ॥ चउसठ मणरो मोती लटके, करणीर परमाणे हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ खबर करणने मुनिवर आया, रिखजी कालज किधो ॥ धृग धृग इन नागश्रीने, मुनिवरने बिष दीधो हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ हुई फजीती करम बहु बांध्या, पहुंती नरक दुवारे ॥ धन धन इण धर्म रुचीने, कर गया खेवो पारे हो ॥ मु० ॥ १४ ॥ पैंसठ साल जोधाणा माहे, सुखे कियो चोमासो ॥ रत्नचन्दजी कहे एह मुनिवरना, नाम थकी वासो हो ॥ मुनि० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ ढंढण मुनिनी सज्झाय लिख्यते ॥

ढंढण रिखजीने बंदणा हूंवारी, उत्कृष्टो अण-
गाररे हूंवारी लाल ॥ अविग्रह किधो एहवो
हूंवारी, लभधे लेशु आहाररे हूंवारी लाल ॥
ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी हूंवारी,
न मिले सुजतो भातरे हूंवारी लाल ॥ मूलन
लीजे असुजतो हूंवारी, पिंजर हुय गया गात
रे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरी पुछे श्रीनेम
ने हूंवारी, मुनिवर सहेंस आठार रे हूंवारी
लाल ॥ उत्कृष्टो कुण एह में हूंवारी, मुजने
कहो किरताररे हूंवारी लाल ॥ ढं०॥३॥ ढंढण
अधीको दाखीयो हूंवारी, श्रीमुख नेम जिणंदरे
हूंवारी लाल ॥ कृष्ण उमायो बांदवा हूंवारी,
धन जादव कुलचंदरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥४॥
गलियारे मुनिवर मिल्या हूंवारी, वांद्या कृष्ण
नरेशरे हूंवारी लाल ॥ कोईक गाथा पति देखने
हूंवारी, उपनो भाव विशेषरे हूंवारी लाल ॥

ढं० ॥ ५ ॥ मुज घर आवो साधुजी हूंवारी, वहीरो मोदिक अभिलासरे हूंवारी लाल ॥ बेहरीने पाछा फिरचा हूंवारी, आया प्रभुजी ने पासरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लभधे मोदक किम मिल्या हूंवारी, ॥ मुझने कहो किरपालरे हूंवारी लाल ॥ लभधनहीं ओ वच्छ ताह्यारी हूंवारी, श्रीपति लभध निहालरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने कलपे नहीं हूंवारी, चाल्या परठण ठोररे हूंवारी लाल ॥ ईंट निहाले जायने हूंवारी, चुरचा करम कठोररे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥ ८ ॥ आई सुधी भावना हूंवारी, उपनो केवल ज्ञानरे हूंवारी लाल ॥ ढंढण रिख मुक्ते गया हूंवारी, कहे जिन हर्ष सुजाणरे हूंवारी लाल ॥ ढं० ॥९॥

॥ अथ सीता सतीनी सज्झाय लिख्यते ॥

जल चलती मिलती घणीरे लाल, झालो झाल ... ॥ सुजाण सीता ॥ जागे केसु फूलि-

थोरे लाल; राता खेर अंगाररे ॥सुजाणसीता॥ धीज करे मोटी सतीरेलाल ॥ १ ॥ शील तणे परमाणरे सुजाण सीता । लक्षमण राम तिहां खड़ारे लाल, मिलिया राणो राणरे ॥ सुजाण सीता ॥ धी० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलेरे लाल, पावक पासे आयरे ॥सु०॥ उभी-जाणे देवांगनारे लाल, विमणो रूप देखाय रे॥ सु० ॥ धी० ॥ ३ ॥ नरनारी मिलिया घणारे लाल,ऊभा वहु अकुलायरे॥सु०॥भस्म होसी इण आगमेरे लाल,राम करे अन्यायरे॥सु०॥धी०॥४॥ राघव बीन बंछ्यो हुवेरे लाल, सुपनामे नर को-यरे ॥ सु० ॥ तो मुज अग्नि प्रजालजोरे लाल नही तर पाणी होयरे ॥ सु० ॥ धी० ॥ ५ ॥ इम कही पेठी आगमेरे लाल, तुरत थयो अग्नि नीररे ॥ सु० ॥ जाणे द्रह जलसु भरयोरेलाल झिले मन धर धीररे ॥ सु० ॥ धी० ॥ ६ ॥ देव कूसुम वरषा करीरे लाल । यह सती सिर-

दाररे ॥ सु० ॥ सीता धीजे उतरीरे लाल, साख भरे संसाररे ॥ सु० ॥ धी० ॥ ७ ॥ जग में जस जेहनो घणोरे लाल, अविचल शील सुहायरे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणारे लाल, नित नित प्रणमुं पायरे॥सु०॥धी०॥८॥

॥ अथ संतनाथ जीरो स्तवन लिख्यते ॥

संत जिणेसर सोलमारे लाल ॥ शाँति तणो किरताररे ॥ सोभागी ॥ आणंद हरष वधामणारे लाल, सुख संपतरा दातारसे॥ सो० ॥सं० ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ हसतीयणापुर सोभतोरे लाल, जाणे लंका रूपरे ॥ सो० ॥ राज करे रलिया मनोरे लाल, बसु सेणराय तिहां भूपरे॥ सो० ॥ सं० ॥ २ ॥ तस घर राणी दिपतीरे लाल, अचला नाम उदाररे ॥ सो० ॥ सुख सेजा माहे सुता थकारे लाल, सुपना लिया दस चाररे ॥ सो० ॥ सं० ॥ ३ ॥ गजगती अंगमे [illegible] रे लाल, सुन्दर पिवजिरे पासरे ॥

सो० ॥ चउदे सुपना स्वामीमें लियाजी लाल, पामी तन आवाजरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ ४ ॥ हसती वीर कजसी भलारे लाल,श्रीदेवी पुषपरी मालरे ॥सो०॥ चंद सुरज धजा सुंदरुरे लाळ, कुंभ कलश सुरशालरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ ५ ॥ पदम सरोवर कमल छायोरे लाल, सायर थंब्यो गाजरे ॥ सो० ॥ पाणी रतन झीग झीगतारे लाल, द्रुम रतन खांणीथायरे ॥सो०॥सं०॥६॥ राय सुणी मन हरखियारे लाल, पुत्र होसी अति सोररे ॥ सो० ॥ हम कुल शोभा चढ़ावसीरे लाल, तुम कुल तणो आधाररे ॥ सो० ॥ संत ॥ ७ ॥ सर्वार्थ सिद्धसु चवी करीरे लाल, उत्तम जीव पुण्यवन्तरे ॥ सो० ॥ अचलारे कुंखज अवतरयारे लाल। जुगमाहे वरताया संतरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ ८ ॥ हलुकरमी जिनजी अवतरयारे लाल, जेठ वदी तेरस साररे ॥ सो०॥ कंचन वरण सुहामणारे लाल, दिपे तेज

अपाररे ॥ सो० ॥ संत० ॥९॥ छप्पन कुंवरी मिली करीरे लाल, कुंवर करे मन वाररे ॥ सो० ॥ चौसठ इन्द्र पधारयारे लाल, मुख जंपै जै जै काररे ॥ सो० ॥ सं० ॥१०॥ पांच रूप इन्द्र कियारे लाल, लेजावे मेरुरे शृंगरे ॥ सो० ॥ मेरू शिखर न्हवरावीयारे लाल, मुक्या मातरे पासरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ ११ ॥ दुंदुभी वाजे घणीरे लाल, मांदल ढोल कंसालरे ॥सो० ॥ रुणरुण रूणके नेपुरोरे लाल, झव झव झबुके तालरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ १२ ॥ भुंगल भेरी अति भलिरे लाल, वाजे नवनवारंगरे ॥सो०॥ इन्द्र तातज नचावियारे लाल, गावे गीतने ज्ञान रे ॥ सो० ॥ सं० ॥ १३ ॥ आया इन्द्र मोहोच्छव कियारे लाल, मुक्या मातारे पासरे॥ सो० राजाजी महोच्छव मांडियार लाल, मुक्या माता पासरे ॥सो०॥सं० ॥१४॥ राज ऋद्धि पामी घणीरे लाल, भोगवै भोग अपाररे ॥सो०॥मनमेतो ग अणियारे लाल, ओ संसार असाररे॥सो०॥

संत० ॥ १५ ॥ अचलारे कुखज अवतरयारे लाल, जग माहे वरत्यो सत्यरे ॥ सो० ॥ तीण गुण नामज थापीयारे लाल, संत कुंवर सुख काररे ॥ सो० ॥ संत० ॥ १६ ॥ राजाजी संजम आदरयारे लाल, करता उग्र विहाररे ॥ सो० ॥ जप तप अति करीरे लाल, न चले मेरु समानरे ॥ सो० ॥ सं० ॥ १७ ॥ जप तप केवल पामीयारे लाल, दिपे पुनम चन्दरे॥सो०॥ आठ करम खो कियारे लाल, पोहोता मुगति मझाररे ॥ सो० ॥ संत० ॥ १८ ॥ इति

॥ अथ नव घाटीको स्तवन लिख्यते ॥

नव घाटी माहे भटकत आयो, पाम्यो नर भव सार ॥ जेहने वंछे देवता, जीवा ते किम जावो हार ॥ ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो हार ॥ दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार ॥ १ ॥ धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ॥ मोहो माया

माहे झुल रह्यो, जीवा नहीं लिवी सुरत संभाल ॥ नहि लिवी सुरत संभाल, जीवाजी नहिं लिवी सुरत संभाल ॥ दु० ॥ २ ॥ काया तो थांरी कारमो दिसे, दिसे जिन धर्म सार ॥ आऊखो जाता वार न लागे, चेतो क्यांनी गवांर॥ चेतो क्यों नी गवांर, जीवाजी चेतो क्यों नी गवांर ॥दु०॥ ३ ॥ यौवन वय माहे धंदो लागो, लागो हे रमणीरे लार ॥ धन कमायने दौलत जोड़ी, नहिं कीनो धर्म लिगार ॥ नही कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहिं कीनो धर्म लिगार ॥ दु० ॥ ॥ ४ ॥ जरा आवैने यौबन जावे, जावै इन्द्रिया विकार ॥ धर्म किया विना हाथ घसोला, परभव खासो मार ॥ परभव खासो मार, जिवाजी परभव खासो मार ॥ दु० ॥५॥ हाथोंमें कड़ाने कानोंमें मोती, गले सोवनकी माळ ॥ धर्म किया विन एह जीवाजी, अभरण सहुभार ॥ अभरण छे सहु भार जीवाजी,

अभरण छे सहुभार ॥ दु० ॥६॥ ए जग है सब स्वारथ केरा, तेरो नहीरे लिगार ॥ बार बार सतगुरु समझावै, ल्यो तुम संजम भार ॥ ल्यो तुमे संजम भार, जीवाजी ल्यो तुम संजम भार ॥ दु० ॥ ७ ॥ संयम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान ॥ निरमल हुयने मोक्ष सिधाओ ओछे साचोज्ञान । ओछे साचो ज्ञान जीवाजी ओछे साचो ज्ञान ॥ दु० ॥८॥ संमत अठारेने वरस गुण्यासी, हरकेन सिंघजी उल्लास ॥ चैत वदी सातम सायपुरमें, कीनो ज्ञान प्रकाश । कीनो ज्ञान प्रकाश जीवाजी, कीनो ज्ञान प्रकाश ॥ दुलभते० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ धन्नाजीरी सज्झाय लिख्यते ॥

धन्नाजी रिखमन चिंतवै, तप करतां तुटी हम तणी कायके ॥ श्रीवीर जिनंदने पूछने, आज्ञा ले संथारो दियो ठायके ॥ १ ॥ धन करणी हो धनराजरी ॥ ए आंकड़ी ॥ पह उठीने

बांद्या श्रीबीरने, श्रीजी आज्ञा दिवी फुरमायके ॥ विमल गिरी थेवर संगे, चाल्या समसथ साध खमायके ॥ धन० ॥ २ ॥ ठायो संथारो एक मासनो । थैवर आया प्रभुजीरे पासके ॥ भंडउ-पगरण जिन वीरने, गौतम पूछै बेकर जोड़के ॥ ध० ॥ ३ ॥ तप तपीया वहु आकरा, कहो स्वामी वासो किहां लिधके । सागर त्रेतीसारे आउखो, नव महीनामें सर्वारथ सिद्धके ॥ध०॥ ॥ ४ ॥ महा विदेह खेत्र माहे सिद्ध हूशी, विस्तार नवमा अंगरे माह्यके ॥ शिव सुख साध पदवी लही, आसकरणजी मुनिगुण गायके ॥ ध० ॥ ५ ॥ संमत अठारे वरस गुणसठे, बैशाख वद पक्षरे माह्यके ॥ विसलपुरमें गुण गा इया, पुज रायचंदजीरे प्रसादके ॥ ध० ॥ ओछोजो इधकोमें कह्यो तो मुज मिच्छामी दुक्कड़ होयके ॥ वुद्धि अनुसारे गुण गाइया, सूत्रनो ार जायके ॥ ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारम्भ ॥

हीवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जाण
पणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते
मुज मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ अरिहन्तनी साख, जे
में जीव विराधीया, चौराशी लाख ॥ ते मुज०
॥२॥ सात लाख पृथवी तणा, साते अपकाय ॥
सात लाख तेउकायना, साते वलीवाय ॥ते०॥
॥ ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधारण,
बी ती चउरिंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥
ते०॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्र-
काशी ॥ चउदे लाख मनुष्यना, ए लाख चौ-
रासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेविया,
जे में पाप अठार ॥ त्रिविध त्रिविध करी परि-
हरूं, दुर्गतिना दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा
कीधी जीवनो, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता-
दानना, मैथुनने उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परि-
ग्रह मेल्यो कारमो, किधो क्रोध विशेष ॥ मान

माया लोभमें किया, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ॥ ८ ॥ कलहकरी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥ निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाड़ी कीधी चोतरे, किधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खटिकने भवे में किया, जीव नाना विध घात ॥ चिडी मारने भवे चिडकला ॥ मारया दिनने रात ॥ते०॥ ॥११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते०॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, झाल्या जल वास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे जे कीया ॥ आकराकर दंड ॥ बन्दीवान मारावीया, कोरड़ा छड़ी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख ॥ छेदन वेदना ॥ ताडण अतितिख ॥ ते० ॥१५॥

कुंभारने भवेमें किया, नीमाहपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडीया, फाड्या पृथ्वीना पेट ॥ सूडने दान घणा किया, दीधी वदल चपेट ॥ते०॥१७॥ मालीने भवें रोपिया, नाना विध वृक्ष ॥ मूल पत्रफल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अद्धोवाइयाने भवे, भरचा अधिका भार ॥ पोठी पुठे कीडा पड्या, दया नाणी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरचा, कीधा रङ्गण पास ॥ अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ते०॥ ॥ २० ॥ सुरपणे रण झुंझता, मारचा माणस वृन्द ॥ मदिरा मास माखण भख्या, खादा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या ॥ आरम्भ कीया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२
रम अंगार कीया वली, घरने दव दीधा

माया लोभमें किया, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ॥ ८ ॥ कलहकरी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥ निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाड़ी कीधी चोतरे, किधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खटिकने भवे में किया, जीव नाना विध घात ॥ चिडी मारने भवे चिडकला ॥ मारया दिनने रात ॥ते०॥ ॥११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते०॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, जाल्या ज़ल वास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे जे कीया ॥ आकराकर दंड ॥ बन्दीवान मारावीया, कोरड़ा छड़ी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना ॥ ताडण अतितिख ॥ ते० ॥१५॥

कुंभारने भवेमें किया, नीमाहपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडीया, फाड्या पृथ्वीना पेट ॥ सूडने दान घणा किया, दीधी वदल चपेट ॥ते०॥१७॥ मालीने भवे रोपिया, नाना विध वृक्ष ॥ मूल पत्रफल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अद्धोवाइयाने भवे, भरचा अधिका भार ॥ पोठी पुठे कीडा पड्या, दया नाणी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरचा, कीधा रङ्गण पास॥ अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ते०॥ ॥ २० ॥ सुरपणे रण झुंझता, मारचा माणस वृन्द ॥ मदिरा मास माखण भख्या, खादा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या ॥ आरम्भ कीया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ करम अंगार कीया वली, घरने दव दीधा ॥ सम

खाधा वीतरागना, कुडा कोलज कीधा ॥ ते०॥
॥ २३ ॥ बिला भवे उंदर लीया, गिरोली ह-
त्यारी ॥ मूढ़ गवार तणे भवे, में जुवा लीखा
मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भडभुंजा तणे भवे,
एकेंद्री जीव ॥ जुआरी चणा वहु शेकिया, पा-
डंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गा-
रना, आरम्भ अनेक ॥ राधण इंधण अग्निना,
कीधा पाप अनेक ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा
चार कीधावली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट
वियोग पाड्या किया, रूदनने विखवाद ॥ते०॥
॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणा, व्रत लहीनो
भांग्या ॥ मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण
लाग्या ॥ते०॥२८॥ सांप बिच्छु सिंह चीतरा,
सिकराने सामलि॥ हिंसकजीव तणे भवे, हिंसा
कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सुआवड़ी दुषण
घणा, वली गरभ गलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्या
घणी, शीलव्रत भंगाव्या ॥ ते० ॥ ३० ॥ भव

अनन्ता भमता थका, कीधा देह सम्बन्ध ॥ त्रिविध २ करी बोसरू, तिणसु प्रतिबन्ध ॥ ते० ॥३१॥ भवअनन्त भमता थका, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध ॥ त्रिविध त्रिविध करी बोसरू ॥ तिणसुं प्रतिवन्ध ॥ ३२ ॥ इण परे इह भवे पर भवे, कीधापाप अक्षत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करी वो-सरू, करूं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इण विधए आराधना, भावे करसे जेह ॥ स-मय सुन्दर कहे पाप थी, इह भव छुटसे तेह ॥ ते० ॥ ३४ ॥ राग वैराडो जे सुणे, यह त्रिजी ढाल ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, छुटे भव त-त्काल ॥ ते० ॥ ३५ ॥

॥ अथ वीस विहरमानकी लावणी लिख्यते ॥

दीन दयाल कृपाल करुणा भंडारी ॥ क०॥ जय विहर मानजिन वीस, धर्म अधिकारी ॥ श्रीसी मन्धर स्वामी सदा सुखकारी ॥ स० ॥ जय जुगमंधर जसवन्त, चरण बलिहारी। बाहु

कृपाल करुणा भंडारी ॥ क० ॥ श्री सुबाहु जगदीश परम पदधारी ॥ सुजात प्रभु घन घाती, कर्म किया छारी ॥ क० ॥ स्वयं प्रभु बीतराग, ममता विडारी ॥ रिखभानन आनन्द करे नरनारी ॥ क० ॥ जय विहरमान महाराज धर्म अधिकारी ॥ ए टेर ॥ १ ॥ अनन्त वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥ श्रीसूर प्रभू सु विख्यात, करो सुख साता ॥ विशाल प्रभू सुविशाल, त्रिजगके त्राता ॥ त्री० ॥ श्री वज्र धर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चन्द्रानन सुख कन्द, दर्श चित्त चाता ॥ द० ॥ चन्द्रबाहु, कर्म बाहु हटाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, भुजंग प्रभु भारी ॥ भु० ॥ ज० ॥ २ ॥ ईश्वर त्रिजग ईश, मेरे मन भावे ॥ मे० ॥ श्रीनेमीश्वर जिन ध्यान, करता दुख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमरपद पावै ॥ अ० ॥ महाभद्र करे भद्र, विघन कुं हटावै ॥ देव जस करे सेव, रिद्धि सिद्धि

आवै ॥ रि० ॥ अजित वीरज निज पद, देत भज भावे ॥ जघन्य पदे वर्त्तमान, जिणंद उपकारी ॥ जि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ धनुष्य पांचशे प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चौराशी पूरब, आयु फरमाया ॥ थाप्यां है तीरथ चार, भविक मनभाया ॥ भ० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥ मैं अधम उद्धारण विरुद, सुणी हर षाया ॥ सु० ॥ तिलोकरिख युं जाण शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भव पार, अरज अघधारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीवीतरागाय नमः

श्रीसुखविपाक-सूत्रम्

॥ अर्हं ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबु जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवाग

अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? तत्तेणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता । तंजहा-सुबाहू १ भद्दनंदीय २, सुजाएय ३, सुवासवे ४, तहेव जिणदासे ५, धणपतीय ६, महब्बले ७॥ १ ॥ भद्दनंदी ८, महचंदे ९, वरदत्तो १० ॥

जइणं भन्ते ! समणेणं जावसंपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे पण्णत्ते ? ततेणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु-जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं पुप्फ-

करंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो उय० त-
त्थणं कयवण माल पियस्स जक्खस्स जक्खाय-
यणे होत्था दिव्वे० तत्थणं हत्थिसीसे णयरे अदी-
णसत्तू णामं राया होत्था महया० वण्णओ,
तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामुक्खं
देवीसहस्सं ओरोहेयावि होत्था। ततेणं सा धा-
रिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि
वास घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मे-
हस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। सुबाहुकुमारे
जाव अलंभोग समत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता
अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करा-
वेंति, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहामहाबलस्स
रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हंराय
वर कण्णयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हा-
वेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पिं पासाय
वरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विह-
रइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे

महावीरे समोसढे परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहाकूणिओ तहेव निग्गओ सुबाहू त्रि-जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया। तएणं से सुबाहु कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासि-सद्दहामिणं भन्ते! णिग्गंथं पावयणं० जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राइसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहण्णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। ततेणंसे सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवा-

लसत्तिहं गिहिधम्मं पडिवज्जिति पडिवज्जता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णंभंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्स वियणं भन्ते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्सवियणं भन्ते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुवाहुणा भन्ते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? केवा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धित्थिमिय समिद्धे तथणं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे

नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जाति सम्पन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणु गामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अन्तेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाये पोरिसीये सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणेउच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे तएणं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं ए-

ज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे चितमाणंदिया आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभे माणेत्रि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । ततेणं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पड़िगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पड़िलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारा वुट्ठा दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेले

३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४

आगासंसि अहो दाण महोदाणं घुट्ठेय ५।
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-धण्णेणं देवाणुप्पि-
या ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे
सुलद्धेणं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं
धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई। तत्ते-
णंसे सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं
पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थि-
सीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीएदे-
वीए कुच्छिंसि पुत्तताए उववन्ने। ततेणं सा-
धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओही-
रमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं
पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा। सुबा-
हुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता
अभिसमन्नागया। पभूणं भंते ! सुबाहुकुमारे
देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तये ? हंता पभू। तते णं से

रत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिये चिंतीए पत्थीए मणोगए संकप्पे समुप्पने धण्णा णं ते गामागर णगर जाव सन्निवेसा जत्थणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरित, धन्नाणं तेराईसर तलवर० जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति, धन्ना णं ते राईसर तलवर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु पुव्वि चरमाणे गामाणु गामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । ततेणं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव

वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायय‌णे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति परिसा राया नि-ग्गया ततेणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं म-हया जहा पढमं तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया। तते णँ से सुबाहुकु-मारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाते ईरियासमिये जाव वंभयारी, ततेणं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अं-तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अ-हिज्जति २ त्ता वहूहिं चउत्थछट्टम० तवोवि-

हाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं साम-
ण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए
अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए
छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपते कालमा-
से कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने,
से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्ख-
एणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं
विग्गहं लभिहिति २ त्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति
२ त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव
पव्वइस्सति, से णं तत्थ वहूइं वासाइं सामण्णं
परियागं पाउणिहिति आलोइयपडिक्कंते समा-
हिपत्ते कालं करिहिति सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए
उववज्जिहिति, से णं तओ देवलोगाओ माणु-
स्सं पव्वज्जा बंभलोए ततो माणुस्सं महासुक्के
ततो माणुस्सं आणते देवे ततो माणुस्सं ततो
आरणे देवे ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे, से णं
ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव

अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्तं करेहिति एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥१॥

वितियस्स णं उक्खेवो — एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभकरंड उज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं जम्मणं बालत्तणं कलाओ य जुव्वणे पाणिग्गहणं दाओ पासाद० भोगाय जहा सुबाहुस्स, नवरं भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवी पामोक्खा णं पञ्चसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगबाहू तित्थियरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चि-

हिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करे-
हिति ॥ बितियं अज्झयणं समत्तं ॥२॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पञ्चसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिला-
भिए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने जाव महा विदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चि-
हिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्तं करे-
हिति ॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥३॥

चोथस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं णंद-
णवणं (मणोरमं) उज्जाणं असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥४॥

देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पञ्च-सया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥७॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवरमणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणणो राया तत्तवती देवी भद्दनन्दी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पञ्चसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ।८।

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खाणं पञ्चसयाकन्ना जाव पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ।९।

जति णं दसमस्स उक्खेवो–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सारायं नामं नयरं होत्था उत्तरकुरु उज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदी राया सिरिकंता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया तित्थयरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निवद्धे इहं उपन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुयखंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससुचेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥ इति एक्कारसमं अंगं समत्तं ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

इअ सुखविपाकसुत्तं समत्तं ॥

हितोपदेश

चालो २ मुगत गढ़ माहीं, थांने सतगुरु रह्या समझाई रे ॥ टेर ॥ थांने मानवको भव पायो, चिन्तामणि हाथज आयोरे ॥ चा० ॥१॥ काया दीसै रंगी चंगी, दया धर्म करो नवरंगी रे ॥ चा० ॥ २ ॥ मात पिता लाड़ लड़ावे, स्वार्थ विना अलगा जावे रे ॥ चा० ॥३॥ तूं परणीने लायो लाड़ी, वापण नहिं आवे आड़ी रे ॥ चा० ॥४॥ सूरी कंता नारी देखो, सूतर मे चाल्यो ईंको लेखो रे ॥ चा० ॥५॥ धन

दौलत माया जोड़ी, भेली कर मेली कोडी कोडी रे ॥ चा० ॥६॥ सागर सेठ थो धनको लोभी, समुद्र में गयो ते डूबी रे ॥ चा० ॥७॥ मायाजालकी ममता मेटो, सतगुरुजीने लेवो भेटी रे ॥ चा० ॥८॥ दया दान कमाई कीजे, नरभवको लाहो लीजे रे ॥ चा० ॥९॥ उगणीसे वासठ माहीं, रामपुर रह्या सुख पाहिरे॥चा०॥ ॥१०॥ कहै हीरा लाल गुणवन्ता, जिन धर्म करो पुन्यवन्ता रे ॥ चा० ॥११॥इति॥

॥ अथ तेरह ढालकी वड़ी साधु वन्दना ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमतां क्राड कल्याण। साधु तणा गुण गाईशुं, मनमें आनन्द आण ॥ १॥ गुण गाऊं गिरूवा तणा, मन मोटे मंडाण । गिरुआ सहेंजें गुण करे, सिझे वंछित काम ॥२॥ इणहिज अढाई द्वीपमें, जयवंता जगदीस। भाव करी वन्दन करुं, इच्छुक मन अति लीन॥

॥ ३ ॥ भाव प्रधान कह्यो तिसे, सबमें भावज जाण । ते भावें सबकुं नमुं, अनंत चोवीसां नाम ॥ ४ ॥ उठ प्रभात समरुं सदा, साधु वन्दन सार । गुण गाउं मोटा तणा, पाप रोग सब जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहिली चौपाईकी चालमें ॥

पंच भरत पंच ऐरवत जाण, पंच महा विदेह वखाण । जेह अनन्त हुआ अरिहंत, ते प्रणमुं कर जोड़ी संत ॥ १ ॥ जे हिवड़ां विचरे जिन-चन्द, क्षेत्र विदेह सदा सुखकन्द । कर जोड़ी प्रणमुं तस पाय, आरत विघन सहु टली जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनन्ता जे पनरे भेद, ते प्रणमुं मन धरी उमेद। आचारज प्रणमुं गणधार, श्री उवज्झाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सहु प्र-णमुं केवली, काल अनादि अनंतावली । जे हिवड़ां वरते गुणवंत, साधु साधवी सहु भग-वंत ॥ ४ ॥ ते सहु प्रणमुं मन उल्लास, अरि-

हंत सिद्धने साधु प्रकास। (बार अनन्ती अनन्त विचार) साधु वन्दना करसुं हितकार, ते सांभलज्यो सहु नर नार ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

इणहिज जंबूद्वीपवर, भरत नाम यहां क्षेत्र। जिनवर बचन लही करी, निर्मल कीधा नेत्र ॥ ॥ १ ॥ यहां चोवीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर। पूरब भव कहि प्रणमिये, पामीजे भव तीर ॥ २ ॥ पूरब भव चक्री (वर्त्ति) थया, ऋषभदेव निरभीक। अजितादिक तेवीस जिन, राजा सहु मण्ड्लीक ॥ ३ ॥ व्रत लहि पूरब चउदे, ऋषभ भण्या मन रंग। पूरव भव तेवीस जिन, भण्या इगियारे अङ्ग ॥ ४ ॥ वीस स्थानक तिहा सेवियां, वीजे भवे सुरराय। तिहांथी चवी चोवीस जिन, हुवा ते प्रणमुं पाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल दूजी चौपाईनी देशी ॥

चक्रवर्त्ति पूरब भव जाण, वइरनाभ तिहां नाम वखाण । ऋषभदेव प्रणमु जगभाण, गुण गावतां हुवे जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ विमलराय पूरब भव नाम, अजित जिनेसर करु प्रणाम । विमल वाहन पूरब भव राय, श्री संभव जिन प्रणमु पाय ॥ २ ॥ पूरब भव धर्मसिंह राजान, अभिनन्दन प्रणमु शुभ ध्यान । पूरब भव सुमति प्रसीध, सुमति जिनेसर प्रणमु सीध ॥ ३ ॥ पूरब भव राजा धर्म मित्त, पद्मप्रभुजीने वांदु नित्त । पूरब भव जे सुन्दर बाहू, तेह सुपास प्रणमु जगनाहू ॥ ४ ॥ पूरब भव दीहबाहू मुनीस, चंदा प्रभु प्रणमु निशदीस । जुगबाहु पूरब भव जीव, प्रणमु सुविध जिणंद सदीव ॥ ॥ ५ ॥ लट्ठबाहु पूरब भव जास, श्रीशीतल जिन प्रणमु उल्लास । दत्त (दिण्ण) राय कुल तिलक समान, प्रणमु श्री श्रयांस प्रधान

६ ॥ इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त । वास पूज्य
णमुं भगवंत ॥ पूरव भव सुन्दर वड़ भाग,
ंदु विमल धरी मन राग ॥ ७ ॥ पूरव भव
ने राय महिन्द, तेह अनन्तजिन प्रणमुं सुख-
कन्द । साधु शिरोमणि सिंहरथ राय, धर-
मनाथ प्रणमुं चित्त लाय ॥८॥ पूरव भव मेघ-
रथ गुण गाऊं, शांतिनाथ चरणे चित्त लाऊं ॥
पहले भव रूपी मुनि कहियें, कुंथनाथ प्रणम्यां
सुख लहियें ॥ ९ ॥ राय सुदंसण मुनि वि-
ख्यात, वन्दु अरिजिन त्रिभुवन तात । पहले
भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमुं श्रीमल्लि जि-
णंद ॥ १० ॥ सिंहगिरि पूरव भव सार, मुनि-
सुव्रत जिण जगदाधार । अदीण शत्रु मुनिवर
शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमुं नमिनाथ ॥११॥
संख नेरसर साधु सुजाण, अरिट्ठनेमि प्रणमुं
गुणखाण । राय सुदंसण जेह मुनीस, पार्श्व-
नाथ प्रणमुं निशदीस ॥१२॥ छट्ठे भवे पोटिल

मुनि जाण, क्रोड बरस चारित्र प्रमाण, तीजे भवें नंदन राजान, कर जोड़ी प्रणमुं वर्द्धमान ॥१३॥ चोवीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरसण चारित्र अनंत । बार अनंत करूं परणाम, दुष्ट कर्म क्षय करसुं साम ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

मेरु थकी उत्तर दिसें, इणहिज जम्बूद्वीप ऐरवत क्षेत्र सुहामणो, जिणविध मोती सीप ॥१॥ तिहां चोवीसे जिण थया, चंद्रानन वारिषेण । एहिज चोवीसी सही, ते प्रणमुं समश्रेण ॥२॥

॥ ढाल ३ जी राग वेलावली ॥ ए देशी ॥

चन्द्रानन जिण प्रथम जिणेसर, बीजा श्री सुचंद भगवंत के । अग्गिसेण तीजा तीर्थंकर, चोथा श्री नदिसेण अरिहंत के । त्रिकरण शुद्ध सदा जिण प्रणमुं ॥ १ ॥ एरवय क्षेत्र तणा रे चोवीस, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समय जनम्या सुजगीसके ॥त्रि०॥२॥

॥२॥ पंचमा इसिदिण्ण थुणीजे, ववहारी छठा जिणरायके । सामीचन्द सातमा जिन समरु, जुत्तिसेण आठमा सुख सायके ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजिय सेण जिण प्रणमु, दसमा श्री सिवसेण उदारक । देव सम्म इग्यारमा गाउं, बारमा निक्खित्त सत्थ सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ॥४॥ तेरमा असजल जिन तारक, चौदमा श्री जिणनाथ अनंतक । पनरमा उवसंत नमिजे, सोलमा श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सत्तरमा अति पास थुणीजे, प्रणमु अढारमा श्री सुपासक । उगणीसमा मेरुदेव मनोहर, वीसमा श्रीधर प्रणमु हुल्लासक ॥ त्रि० ॥६॥ इक्वीसमा सामीकोट्ठ सुहंकर, वावीसमा प्रणमुं अग्गिसेणक । तेवीसमा अग्गिपुत्त अनोपम, चोवीसमा प्रणमुं वारिषेणक ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ चोथे अंग थकी ए भाख्या, अडतालीस जिणंसर नामक । छठे अंग कह्या मुनिसुव्रत, सुख-

विपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ जिण पचास ए प्रवचने, इम अनंत हूवा अरिहंतक। विहरमान बलि जे जिन बंदु, केवली साधु सहु भगवंतक ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ सिद्ध थवा वलि संप्रति वरते, कर जोड़ी प्रणमुं तस पायक। हवे जे आगम थुणीजे, ते मुनिवर कहिस्युं चित्त-लायक ॥ त्रि० ॥ १० ॥ जिनवर प्रथम जे गणधर समणि, चक्रवर्ति हलधर वली जेहक। पूरब्र भव तसु नाम जे तस गुरु, गाईस्युं चोथा अंगथी तेहक ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ चोवीसे जिन तीर्थ अंतर, क्रोड़ असंख्य हुआ मुनि सिद्धक। कर जोड़ी प्रणमुं ते प्रहसमें, नाम कहुं हवे जे परसिद्धक ॥ त्रि० ॥१२

॥ ढाल चौथी ॥ राग धन्याश्रीनी देशी ॥

प्रहसमे प्रणमुं ऋषभ जिनेसरु, श्री मेरु-देवी सोध सुहंकरु। चौरासी गणधार शीरो-ˆ, उसभसेन मुनिवर प्रणमुं सुखभणी ॥

॥ उलाली ॥ सुखभणी प्रणमुं बाहुबल मुनि सहस चौरासी मुनि, बीस सहस प्रणमुं केवली वली सिद्ध थया त्रिभुवन धणी । तीन लाख श्रमणी धूर नमुं नित्य नमुं ब्राह्मी सुन्दरी, चालीस सहस प्रणमुं केवली नमुं श्रमणी चित्त धरी ॥१॥ घर आरिसा भरत नरेसरु, ध्यानबले करी केवल लहिवरु । सहस दस संघाते नरपति, व्रत लई शिव गया प्रणमुं शुभमति ॥ शुभमति जम्बूद्वीप पन्नती वली बखाणीये, भरतनी परे केवली वली क्षेत्र ऐर-वय जाणीये । बंदीये चक्री एरवयमुनि भावसुं नित मनरली, हवे भरत पाटे आठ अनुक्रमें वंदीये नृप केवली ॥२॥ श्रीआइच्चजस महा-जस केवली, अतिबल महीबल ते जबीरिय वली । कीरतिवीरिय दंदवीरिय ध्याईये, जल-वीरिय मुनि नित्य गुण गाईये ॥ गाईये ठाणांगे मुनिवर एह भाष्या संजति, श्री ऋषभने वली

अजित अंतर हवे कहुं सुणो सुभमति । पचास लाख कोड सागर तिहां असंख्यात केवली, जेह थया मुनिवर तेह प्रणमु असुभ दुरमति निरदली ॥ ३ ॥ अजित जिणेसर नेऊ गणधरू, धुर प्रणमु सिंहसेण सुहंकरू । प्रहसमे प्रणमु फग्गुसाहूणी, हरखसु वंदु सागर महामुनि ॥ महामुनि सागर तीस लाखे कोड अंतरे जे थया, केवली मुनिवर तेह प्रणमु दोयकर जोड़ी सया । श्रीसंभव चारु मुनिवर चित्तसोमा गुण रमु, लाख दस ही कोडसागर अंतरे सिद्ध सहु नमु ॥४॥ श्री अभिनंदन प्रणमु गणपति, वइ-रनाभ मुनि अतिराणी सती । सागर लाखे नव कोड अंतरे, केवली जे थया वंदिये शुभ-परे ॥ शुभपरे सुमति जिणेसर गणधर चमरका-सवि अजीया, नेऊं सहस कोड सागर विचे नमु जे सिद्ध थया । स्वामि पउमपहे सुसीसए नामे सुव्वय वंदिये, साहुणी गुणरती नामे प्रण-

म्यां दुःख दूर निकंदिये ॥ ५ ॥ क्रोड सहस नव सागर वीच वली, प्रणमु मुनिवर जे थया केवली । श्री सुपास विदर्भ गुणदाधि प्रणमु, सोमा समणी गुणनिधि ॥ गुणनिधि नवसे क्रोडसागर अंतरे जे केवली, तेह प्रणमु भाव-स्यु ए दुःख जावे सहु टली । श्रीचन्द्रप्रभु दीनगणधर सती समणा ध्याईये, नेऊं सागर क्रोड अंतरे केवली गुण गाईये ॥ ६ ॥

ढाल ५ मी । सफल संसार अवतार ए हुं गिणूं ॥ ए देशी ॥

सुविधि जिणेसर मुनि वाराहए, वारुणी वंदिये चित्त उच्छाहए । अंतर क्रोड नवसागर सहु जिहां, कालिकसूत्र तणो विरह भाष्यो इहां ॥ १ ॥ स्वामि शितलजिन साधु आणंद ए, सती सुलसा नमुं चित्त आणंदए । एक सागर तणो कोड अंतर कह्यो, एकसो सागर ऊणो करि संग्रह्यो ॥ २ ॥ सहस छवीस लख छांसठ उपरे, कालिकसूत्र तणो छेद इण अंतरे ।

श्री श्रेयांस मुनि गोथुभ ध्याईये, धारिणी साहुणी चरण चित्त लाईये ॥ ३ ॥ पूर्वभव गुरु कहुं साधु संभूत ए, विश्वनंदी वली श्रमण संजुत्तए । अचल मुनिवर नमुं पढम हलधारए, बंधव त्रिपृष्ट केशव सिरदार ए ॥ ४ ॥ चोपन सागर बीच थया केवली, वंदिये सूत्र तणो विरह भाष्यो वली । इम विच्छेद बिच सात जिण अंतरे, जाणिये शांति जिनवर लग इणि परे ॥ ५ ॥ स्वामीवासुपूज्य जिन साधु सुधर्म धरे, साहुणी वली जिहां धरणी आपदा हरे । सुगुरु सुभद्र सुबंधु बखाणिये, विजय मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि जाणिये ॥ ६ ॥ तीस सागर बीच अंतरे जे थया, केवली वंदिये भाव भगते सया । विमलजिन वंदिये साधु मंदर वली, समणी धरणीधरा आगमे सांभली ॥ ७ ॥ गुरु सुदरिसण मुनि सागरदत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिवपत्तए । अंतर सागर नव बीच केवली,

वंदिये जे थया ते सहुवली वली ॥ ८॥ स्वामी अनंत जिन प्रणमिये जसगणी, समणी पउमा नमुं सुगुरु श्रेयांस मुनि । सीस अशोक भव बीये सुप्रभ जति। भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ॥ ९ ॥ सागर चारनो आंतरो भाखिये, केवली वंदि ने शिवसुख चाखिये । जिणवर धर्म अरिष्ठ गणधर कहुं, सती श्रमणी शिवा वांदी शिवसुख लहुं ॥ १० ॥ पूर्बभव कृष्णगुरु ललित सुसी-सए, प्रणमुं राम सुदंसण निसदीसए । बंधव पुरुषसिह केशव थयो, पांच आश्रव सेवी निरय पुढवी गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बीचा आंतर भाखियो, पल्य पऊणे करी ऊणो ते दाखियो । तिहां कणे रायरिसी मघव मुनिवर थयो, तिणे नवनिधि तजी शुद्धसंयम ग्रह्यो ॥ १२ ॥ चोथो चक्रीसर सनतकुमार ए, वंदिये अंतकिरिया अधिकारए । इम इण अंतर मुनि मुक्ति पहूंता जिके, केवली वंदिये भाव भगते तिके ॥१३॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ उत्तम हिव सिवरायऋषि महा सतीय जयन्ती । ए देशी ॥

सोलहमा श्री शांति पउ चक्री जिनराया, चक्रायुधगणि समणी सुई प्रणम्यां सुखपाया । पूर्व भव गंगदत्त गुरु तसु शिष्य वाराह, बंधव पुरुष पुण्डरीक राम आणंद उच्छाह ॥ १ ॥ अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए, सिद्धा बहु भेद, तेह मुनिवर वंदता, नहीं तीरथे छेद । चक्री श्री कुंथ नमु शाम्ब गणधार, अजु अज्जा बंदतां, हुवे जय-जय कार ॥ २ ॥ सागर गुरु धर्मसेन, सिस नंदन हलधार, बंधव केसवदत्त नमूं, समवायांग प्रकार । कोड़ सहस वरसे करी, ऊणो पलिये चौभाग, इण अन्तर हुवा सिद्ध, बहु वांदु धरि राग ॥ ३ ॥ अर्जुन चक्री सातमा ए, कुम्भ गणधर गाउं, रक्खिया समणी वंदता ए, सिव संपत्त पाउं । कोडसहस वर्ष अंतरे ए, सिद्धा मुनि वृन्द, सातमी नरक सुभूम चक्री, पहत्यो मतिमन्द ॥ ४ ॥ मल्लि जिनेसर वंदिये, वले भिसय

मुणिंद, गुरुणी वंदु बंधुमति, चरण कमल सुख-
कन्द । सहस पंचावन साधवी ए, साधु सहस
चालीस, बत्तीस सो मुनि केवली ए, प्रणमुं
निसदीस ॥ ५ ॥ मल्लि जिनेसर पूर्वभव, महा-
बल अणगार, तात वलि तसु वंदिए, बल मुनि
अनवार । अचल जीव पडिबुध थयो ए, धरण
चन्द्रछाय, पूरण जीव ते संख वसु रूपी कहाय
॥ ६ ॥ वेसमण ते अदीनशत्रु, अभिचन्द्र जित-
शत्रु, लहि केवल मुगते गया, पूर्वभव मित्रु ।
मुनिवर नंदने नंदमित्र, सुमित्र वखाणु, बल-
मित्र वली भानुमित्र, अमरपति आणुं ॥ ७ ॥
अमरसेण महासेण, आठे नायकुमार, मिलि सं-
गाते साधु थया, अंग छट्ठे विचार । अन्तर वलि
इहां जाणीये, लाख चोपन्न वास, केवली तिहां
बहु वंदिये, धरी हर्ष उल्लास ॥ ८ ॥ वंदु जिणे-
सर वीसमा, मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्रने
पुप्फमती, प्रणमुं शीरनामी । सुरवर सातमे

कप्प थयो, मुनिवर गंगदत्त, कत्तिय सोहम इन्द्र पणे, सुरश्रीय संपत्त ॥९॥ रायरिसि महापउम चक्री, वांदु कर जोडी, समुद्रगुरु अपराजित ए गाउं मदमोडी । रामऋषीश्वर वंदिये ए, नाम पउम जेह, केसव नारायण तणो ए, बांधव कहुं तेह ॥१०॥ केवल लही मुक्ते गया, आठ बल-देव, नवमो सुरसुख अनुभवी ए, लेहसे शिव हेव । मुनिसुव्रत नमि अन्तरो ए, वर्ष लाख छ होई, केवली सिद्धा ते सहु प्रणमुं सूत्रजोई॥११॥

॥ ढाल ७ मी ॥ नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥

एक वीसमा श्रीनमिजिन वंदु, गणधर कुम्भपर-धान री माई । समणी अनिला ना गुण गावंता॥ सफल हुवे निज ज्ञान री माई ॥ १ ॥
श्रीजिनशासन मुनिवर वंदु, भक्ते निज शिर नामरीमाई ॥ए आं०॥ कर्म हणीने केवल पाम्या, पहुत्या शिवपुर ठामरी माई ॥ २ ॥ नवनिध चौदे रयणरिध त्यागी, चक्री श्रीहरिसेणरी

माई । आश्रव छण्डी संवर मंडी, वेगे वरी शिव जेणरी माई ॥ श्रीजिन० ॥३॥ वरस वलीइहां पण लख अन्तर, तिहां चक्री जयरायरी माई । वली अनेरा मुक्ति पहोत्या, ते वंदु मन लायरी माई ॥श्रीजिन० ॥४॥ ग्रह ऊठी पणमु नेमीश्वर, समण ते सहस अठाररी माई । वरदत्त आदी मुनी पनरेसे, वंदु केवलधाररी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गौतम समुद्रने सागर गाउं, गंभीर थिमित उदाररी माई । अचल कंपिल्ल अक्षोभ पसेणाई, दशमो विष्णुकुमाररी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ६ ॥ अक्षोभ सागर समुद्र वंदु, हिमवंत अचल सुचंगरी माई ॥ धरण पूरण अभिचंद आठमो, भण्या इग्यारे अंगरी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अंधक वृष्णि सुत धारणी अंगज, मुनिवर एह अढाररी माई । आठ आठ अंतेउर छंडी, पाम्या भवजल पाररी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ८ ॥ वसुदेव देवकी अंगज छऊं,

अणीयसे अणंतसेणरी माई । अजितसेणने अणिहतरिपु, देवसेण सत्रुसेणरी माई ॥ ९ ॥ सुलसानाग घेरे सुर जोगे, वधिया रमणी बत्तीसरी माई, छंडी छठ्ठ तप चउदस पूर्वी, संयम वरसे वीसरी माई ॥ श्री० ॥ १० ॥ वसुदेव देवकी अंगज आठमो, मुनिवर गजसुकुमालरी माई । सह उपसर्गने शिवपुर पहोता, वंदु तेः त्रिकालरी माई ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सारण दारुय कुमर अणा हिठ्ठी, चउदे पूरब धाररी माई संयम वच्छर वीस आराधी,कीधो कर्म संहाररी माई ॥ श्री० ॥ १२ ॥ जाली मयालीने उवयाली, पुरिससेण वारिसेणरी माई । बारे अंगी सोला बरसे, पाल्यो संयम तेणरीमाई ॥श्री०॥ ॥ १३ ॥ बसुदेव धारणी अंगज आठे, रमणी तजी पचासरी माई । समता भावे शिवपुर पोहत्या, प्रणमु तेह उल्लासरी माई ॥ श्री० ॥ ॥ १४ ॥ सुमह दुमुहने कूवय ए वंदु, बलदेव

धारणी पुत्ररी माई । वीस बरस संयम धर सीख्या, चउदे पूरव सूत्ररी माई ॥श्री०॥१५॥ रुखमणी कृष्ण कुमर कहुं पज्जुन्न, जंबूवती सुत सांबरी माई । पज्जुन्नसुत अनिरुद्ध अनोपम, जास वेदर्भी अंबरी माई ॥ श्री० ॥ १६ ॥ समद्रविजय शिवादेवीरा नंदन, सत्यनेमी दृढ़-नेमरी माई । बारे अंगी सोला बरसे व्रत, र-मणी पचासे तेमरी माई ॥ श्री० ॥ १७ ॥ समुद्रविजयसुत मुनि रहनेमि, ए सहु राजकु-माररी माई । केवल पामी मुक्ते पहोत्या, ते प्रणामु बहुबाररी माई ॥ श्री० ॥ १८ ॥ आ-रज्यां जक्षणी आददे सिक्षणी, समणी सहस चालीस री माई । साधव्यां सिद्धि तीन सहस ते, वंदु कुमति टालीस री माई ॥ श्री० ॥१९॥ पउमावई गौरी गंधारी, लखमणा सुसीमा ना-मरी माई । जम्बूवती सतभामा रुखमणी, हरि रमणी अभिराम री माई ॥ श्री० ॥२०॥ मूल

सिरी मूलदत्ता बेहुं, संवकुमररी नाररी माई। अन्तगढ़ अंगे ए सहु भाषी, पामी भवजल पार री माई ॥ श्री० ॥ २१ ॥ उत्तराध्ययन राजेमत्ती सती, संयम सील निहाल री माई। प्रतिबोधी रहनेमी पाम्यो, सासता सुख निरवाण री माई ॥ श्री० ॥ २ २॥

॥ढाल ८ मी ॥ गोतमसमुद्र सागरगंभीरा ॥ ए देशी ॥

थावच्चासुत सुक सेलग आद, पंथक प्रमुख मुनि पांचसे ए। मास संलेषणा करी तप अतिघणां, पुंडरीकगिरि शिवपुर वसेए ॥ राय युधिष्टिर भीम अतुलबली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए। रायश्री परिहरी सुध संयम धरी, साधुजी शिवपदवी वरीए ॥ १ ॥ चौद पूरवधरी थीवर धर्मघोष, धर्मरुचि सीस सहु गुण भर्या ए ॥ नागश्री माहणी, दत्त विष जे हणी, तुंवानो मास पारणो करायो ए ॥ सर्वार्थसिद्ध अवतरी तद नरभव करी, क्षेत्रविदेहमें शिवगयो

ए। ते मुनी वंदतां कर्मवली नंदतां, जन्म जीवित सफलो थयो ए ॥२॥ समणी गोवालिया जेण सुकुमालिया, दाखिया तास सहु गुण थुणु ए। तेम वली सुव्रता द्रौपदा संयता, नेमशासन नित गुण भणु ए ॥ विमल अनंतजिन अंतरे राय, महाबल देवी पद्मावती ए। तास ते अंगय कुमर वीरंगय, तरुण बत्तीस तरुणीपती ए ॥ ३ ॥ ताम सिद्धत्थ गुरु पास संयम वरु, ब्रह्मलोके सुर उपनो ए। चवी बलदेव घर रेवती उदरवर, निसढ नाम सुत संपनो ए ॥ नेमपाय अनुसरी अथिरधन परहरी, रमणी पच्चास तजी व्रत ग्रह्यो ए। करी बहु सम दम वरस नव संयम, पाली ने सर्वार्थसिद्ध सुख लह्यो ए ॥ ४ ॥ क्षेत्र विदेहमें केवल संयम, सिद्ध होसी वली ते मुनि ए। इणपरिअनि[१]

१ वारमा उपाङ्ग 'वह्निदशा''के तेरह अध्ययनोंमें 'निसढ' से 'सयधणु' पर्यन्त १३ नाम कहे हैं।

वह वेहप्रगति सहु, जुत्ति कहुं गुण थूणुए। दसरह दढरह महाधनु तेह, सतधनु गुण मुज मन वस्या ए। नवधनु दसधनु सयधनु मुनि एह, भाखिया सूत्र वण्हिदशाए ॥ ५ ॥ पूरब भव हरिगुरु नाम द्रुमसेण, ललित[1] तेराम[2] पूरव भवेए ॥ राम बलदेव वली नवमो हलधर ब्रह्मलोके सुख अनुभवेए। चविजिण तेरमो नाम निकसाय, थायसी जिन सुरतरु समोए। बंधव केशव एक अवतार, अमम होसीं जिन वारमोए ॥ ६ ॥ सहस त्यांसिया सातसे भाषिया, वरस पच्चास इहां अन्तरोए। तिहां किण चित्त मुनि सिद्धसंपत तास, पाय वंदी कीरत करूंए॥ पूर्वभव वंधव चक्री ब्रह्मदत्त सातमी नरक में संचर्याए। इण अन्तरे वली

---

१ नवमा वल्देवका पूर्वभव रायललिय (राजललित) नामसे प्रसिद्ध है.(समयायाङ्ग सूत्र १५८)

२ राम अर्थात् वलराम नामका नवमा वलदेव

नमुं बहु केवली, वेगे शिव सुन्दरी जे वर्याए

॥ ढाल ९ मी ॥ रामचन्द्रके बागमें चम्पो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥

तेवीसमा जिन तारक, पुरिसादाणीय पास। मुनिवर सोले सहस वर गणधर आठ हुल्लास ॥ (अज्जदिन्न[1]) शुभ अज्जघोष, वांदु वसिट्ठ-नाम। वली ब्रह्मचारी सोभने, श्रीधर करुं प्र-णाम ॥ १ ॥ वीरभद्र जस आदि सिद्धा सहस प्रमाण। तेह मुनिवर वंदता, होवे परम कल्याण साध्वी संख्या सहु अड़तीस सहस बखाणुं ॥

१ पार्श्वनाथ स्वामीके प्रथम गणधर "अज्जदिन्न" (आर्यदत्त) थे ऐसा शास्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है परन्तु स्थानाङ्ग-सूत्रमें 'शुभ' से 'जस' पर्यन्त आठ ही गणधरोंके नाम उपलब्ध होते हैं किन्तु इस सूत्र का टीकाकार अपनी टीकामें ऐसा लिखते हैं "आवश्यक सूत्रमें पार्श्व-नाथ स्वामीके गण तथा गणधर दश सुने जाते हैं, यथा "दस[23] न-[24] वगं गणाण माणं जिणिंदाणं" (तेवीसमे जिनके दश और चोवीस मे जिनके नवगुण हुए हैं) किन्तु अल्पायुप आदि कारणोंसे उन दो गणधरोंकी यहां विवक्षा नहीं की गई ऐसी सम्भावना है" ऐसी टीकाका भाव देख कर आठ गणधरोंकी गिनतीमें "अज्जदिन्न"का नाम न मिलने पर भी यहां पुरानी छपी हुई तेरह ढालकी पुस्तकके अनुसार यह नाम कोष्टकमें यथास्थित रक्खा गया है।

पुष्पचूलादिक सहस दो सिद्धि ते मन आणु ॥
॥ २ ॥ समणी सुपासा[1] सीझसीभाषी, धर्म चउजाम । ए अधिकार कह्यो श्रीठाणांग सुठाम ॥ चउदश पूर्वी वली; चौनाणी मुनि केसीकुमार । परदेशी प्रतिबोधियो कीधो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस अढाईसो अंतरो, सिद्धा साधु अनेक । तेह सहु विनयसे वंदिये, आणि चित्त विवेक ॥ मुनिवर चोदे सहस गुरु, प्रणमु श्रीमहावीर । सातसो केवली वंदिये, एकादश गणधर धीर ॥४॥ इन्द्रभूति अग्निभूति, तीजा वांदु वाउभूई । वियत्त सुधर्मा वंदता, मुझ मति निर्मल होई ॥ मंडिय मोरियपुत्त, अकंपित नित सिव्वास । अचलभूई मेतारिय वंदु श्रीप्रभास ॥ ५ ॥ वीरंगय[2] वीरजसनृप, संजय एणेयक

---

१ सुपासाका अधिकार स्थानाङ्ग ठा० ९ मे कहा है ।

२ वीरंगय (वीराङ्गद) प्रमुख आठ राजा श्रीमहावीर स्वामीके पास दीक्षा ली । (स्थानाङ्ग-सूत्र, ठाणा ८)

राय। सेय सिव उदायण, नरपति संख कहाय॥ वीर जिनेसर आठेइ, दीक्षा रायसुजाण। मुनि-वर पोटिल बांध्या गोत्र तीर्थंकरठाण ॥ ६ ॥ पालक श्रावकपुत्र ते, वांदु समुद्रपाल। पुन्यने पाप बिहुंक्षय करी, सिद्धा साधु दयाल ॥ न-यरी सावत्थी बिहुं मिल्या, केशी गौतम स्वामी सिस्स संदेह परिहरी, पंच महाव्रत लिया शिर नामा ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ एदेशी ॥

माहनकुण्ड नयरीनो अधिपति, माहणकुल नभ चंदोजी। वीर जिनेसर तात सुगुण नीलो, ऋषभदत्त मुणींदोजी ॥ नि० ॥१॥ नित नित वांदु मुनिवर ए सहु, त्रिकरण शुद्ध त्रिकालोजी, विधि सुं देई रे तीन प्रदक्षिणा, कर अंजली निज भा-लोजी ॥ नि० ॥ २ ॥ राय उदायण[1] सिंधु सो वी-

---

1 उदायनका अधिकार भगवती. श० ३, उ० ६ में कहा है।

रलो, निर्मल संजम धारोजी । सेठ सुदर्शन मुनि मुगते गया, सुणी महाबल अधिकारोजी ॥नि०॥ ॥३॥ कालासवेसिय[1] गंगेयमुणी पोग्गलने[2] शिवराजोजी । कालोदाई अइमुत्तमुनि, बंदता सीजे काजोजी ॥ नि० ॥४ ॥ मंकाई[3] मुनिवर किंकम वंदीये, अर्जुनमाली हुल्लासोजी । कासव खेमने धृतिहर जाणीये, केवलरूप कैलासोजी ॥नि०।५। मुनि हरिचंदण बारत्तय वली, सुदर्शन पूर्णभद्दो जी । साध सुमणभद्द समता आदरे, सुपइट्ठ समय सवंदो जी ॥ नि० ॥ ६ ॥ मेघमुनीश्वर अइमुत्त मुनि, रायऋषि अलक्खो जी । श्रीजिनसीस ए सहु मुगते गया, सेवे सुरनर सक्खोजी

---

१ कालासवेसियपुत्त (कालास्यवैशिक पुत्र) (भगवती, श० १ उ० ९)

२ पोग्गलका अधिकार (भगवती, श० ११ उ० १२ में कहा हैं।

३ "मंकाई" से "अलक्खो" पर्यन्त १६ मुनियोंका चरित्र-अन्तकृद्दशा वर्ग ६ में कहा है।

॥ नि० ॥ ७ ॥ सहस छत्तीसे समणी चंदणा, आदे चउदसे सिधो जी, देवानंदा जननी वीरनी, केवलज्ञाने संबंधो जी ॥ नि० ॥ ८ ॥ समणी जयवंती पढमसिज्यातरी, सिद्धी केवल पामीजी [१] नंदा नंदवती नंदोत्तरा, वली नंदसेणिया नामो जी ॥ नि० ॥ ९ ॥ मरुता सुमरुता महामरुता नमु, मरुदेवा वली जाणोजी । भद्रा सुभद्रा सुजाया जिनतणी, पाली निर्मल आणोजी ॥नि० ॥ १० ॥ सुमणा समणी भूयदिन्ना नमु, राणी श्रेणिकरायजी । मास संलेषणा तेरे सिद्ध थई, प्रणम्यां पातक जायजी ॥ नि० ॥ ११ ॥ [२] काली सुकाली महाकाली नमु, कण्हा सुकण्हा तेमोजी । महाकण्हा वीरकण्हा साहूणी, राम-

१ "नन्दा" से "भूयदिन्ना" पर्यन्त १३ महासतियोंका चरित्र-अन्त-कृदशा वर्ग ७ में कहा है।

२ "काली" से "महासेणकण्हा" पर्यन्त १० महासतियोंका अन्तकृदशा वर्ग ८ में कहा है।

कण्हा सुद्धनेमोजी ॥ नि० ॥ १२ ॥ पिउसेण-कण्हा महासेणकण्हा, ए दश श्रेणिकनारोजी निज निज नंदन कालसुणे करी, लीधो संजम भारोजी ॥ नि० ॥१३॥ ए दस समणी तप रयणावली, आदे दश प्रकारोजी । लई केवल ए सहु मुगते गई, ते बंदु बहु बारोजी ॥नि०१४॥

ढाल ११ मी ॥ सुखकारण भवियण समरो नित्य नवकार ॥ ऐदेशी ॥

धर्मघोषमुनीश्वर, महाबल गुरु सुतधार । जिण पूछ्यो रोहे, लोकालोकविचार ॥ १ ॥ वेसालियसावय, पिंगल नाम नियंठ । पडिवायक पुछ्या, खंधकसमय पियंठ ॥२॥ कालियपुत्त[1] महेल, आणंदरक्खिय ज्ञानी । वली कासव चोथे, थिवरां पास संतानी ॥ ३ ॥ मुनि तीसग[2] कुरुदत्तपुत्र नियंठीपुत्त[3] । धननारदपुत्र-मुनि,

1 भगवती श० २ उ० ५ । 2 भगवती श० ३ उ० १ ।
3 भगवती श० ५ उ० ७ ।

सामहत्थी संजुत्त ॥ ४ ॥ सुणखत्त[1] सव्वाणुभूई, खपक आणंद[2] । जिन औषध आण्यो, धन धन सिंहमुणिंद ॥ ५ ॥ वली पूछ्या जिनने, लेश्यादिक बहुभेद । गुण गाउं महामुनि, माकंदी पुत्र उमेद ॥ ६ ॥ हवे श्रेणिकसुत कहुं, जाली[3] कुंवर मयाली । उवयाली पुरिससेण, वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ ॥ दीहदंतने लठ्ठदंत, धारणी नंदण होय । बेहलने विहायस, चेलणा अंगज दोय ॥ ८ ॥ ईक नंदा नंदन, मुनिवर अभय महंत । दीहसेणने[4] महासेण, लठ्ठदंतने गूढदंत ॥ ९ ॥ सुधदंत कुमर हल, द्रुमने वली-

---

१—भगवती, श० १५ उ० १ । २ खपकआणंद (क्षपक आनन्द) अर्थात् आनन्द नामका तपस्वी साधु । ३ 'जाली' से 'अभय' पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग१में कहा है । ४ 'दीहसेण' से "पुण्यसेन" पर्यन्त तेरह मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग २ में कहा है ।

द्रुमसेण । गुण गाउं महाद्रुमसेण, सिंहने सिंहसेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेन पुण्यसेन परधान । ए धारणी अंगज, तेजे तरणि समान ॥ ११ ॥ सहु श्रेणिकनंदन, इयदस तेरे कुमार । आठ आठ रमणी तजी, अनुत्तरसुर अवतार ॥ १२ ॥ तिण अवसर नयरी, काकंदी अभिराम । तिहां परिवसे भद्रा, सारथवाही नाम ॥ १३ ॥ तसु नंदन धन्नो[1], सुन्दर रूपनिधान । तिण परणी तरुणी, बत्तीस रंभ समान ॥१४॥ जिनवयण सुणीने, लीधो संजम जोग । मुनि तरुण पणेमें सहु, छण्डचा रसना भोग ॥१५॥ नित छठ तप पारणो, आंबीले उज्झित भात । जस समण वणीमग, कोई न वंछे भात ॥१६॥ अति दुक्कर संयम, आराध्यो नवमास । करी मास संलेखणा, सर्वार्थसिद्ध मांही वास ॥१७॥

---

१ "धन्ना" से "वेहल्ल" पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग ३ में कहा है ।

काकंदी, सुणक्खत्त, राजगृही इसिदास । पेलक ए वेउं, एकण नगर हुल्लास ॥ १८ ॥ राम पुत्रने चन्द्रमा, साकेतपुर बर ठाम । पिट्ठिमाइया पेढाल-पुत्त वाणियाग्राम ॥ १९ ॥ हत्थिणापुर पोट्टिल, सहु ए धन्ना समान । तरुणी तप जननी, संजम वरसी मान ॥ २० ॥ हवे वेहल्ल कुमर कहुं, राजगृही आवास । सर्वार्थसिद्ध पहुंतो, धर संजम छई मास ॥ २१ ॥ ए एक भवे शिव-गामी जिनवर सीस । सहु नवमे अंगे, भाख्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हवे पउम महापउम, भद्र सुभद्र बखाण । पउमभद्दने पउमसेण, पउमगुम्म मन आण ॥ २३ ॥ नलिणीगुम्म आणंद, नंदन एह मुनि जान । कालादिक दस सुत, कप्पवडंसिया[1] ठाण ॥ २४ ॥ मुनि उदये पूच्छया, गौतमने पच्चखाण । चउजाम थकी

[1] कप्पवडंसिया (कलपावतंसिका) अर्थात् नवमा उपाङ्गमें 'पउम' से 'नन्दण' पर्यन्त १० मुनियोंके नाम कहे हैं ।

कीयो, पंचजाम परिमाण ॥ २५ ॥ जिणे जिन-मत मंडी, खंडी कुमत अनेक । ते आर्द्र कुमर मुनि, धन तसु बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गद्दभालि[१]-बोहिय, संजय नृप अणगार । मुनि क्षत्री भाख्या, बहुबिध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महीमंडल विचरे, विगत मोह अनाथ[२] । गुणगावंता अह-नीस, संपजे शिवपुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणिकनंदन, मुनिवर मेघ सुजाण । तजी आठ अंतेउर, उपन्यो विजय विमाण ॥ २९ ॥ अपमानी रयणा[३], आदर्यो संयम जेह । जिनपालित[४] मुनिवर, सोहम सुर थयो तेह ॥ ३० ॥ हरि चोर चीलाती, सुसमा तात ते धन्नो । आराधी संयम सोहम सुर उववन्नो ॥ ३१ ॥ श्री वीर-

१ गर्दभालि मुनिसे प्रतिबोध पाया संजय नृप, उत्तराध्ययन, अ० १८

२ अनाथ मुनि, उत्तराध्ययन अ० २० ।

३ रयणा रत्नद्वीपमें रहनेवाली देवी ।

४ जिनपालितका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० ९ अध्ययनमें कहा है ।

जिनेसर, सासण मुनिवर नाम । नित भक्ते गाउं, तेह तणा गुण ग्राम ॥ ३२ ॥

ढाल १२ ॥ वेसालियसावय पिङ्गल० ॥ एदेशी ॥

धर्मघोष गुरु सीस सुदत्त, मासने पारणे तेह सुपत्त, प्रतिलाभ्यो सुभचित्त । सुमुख थयो भव बिय सुबाहु, सुर थयो संजम ग्रही साहु, गुण तसु गाऊं नित्त ॥१॥ श्रीजुगबाहु जिणवर आवे, बिजयकुमार प्रतिलाभे भावे, बीजे भवे भद्रनंद । भोग तजी थयो साधु मुणींद, करी सलेखणा लह्यो सुखवृन्द, गुण तसु गात आणंद ॥ २ ॥ ऋषभदत्त पहले भव संत, तिण प्रतिलाभ्यो मुनि पुष्पदंत, तिहांथी थयो सुजात । तृण सम जाणी सहु रिद्धिजात, आदरी आठे प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥३॥ पहले भव नृपति धनपाल, वेसमणभद्रने दान रसाल, देई सुवासव थाय । संजम लेई ते मुनिराय, लहि केवल वली शिवपुर जाय, ते वंदु मन लाय ॥४॥

पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म मुनिने देई दान बीजे भव जिनदास । संवर पाली जे थयो सिद्ध, केवल दर्शन ज्ञान समिद्ध, वांदु तेह उल्लास ॥५॥ मित्रराया पूर्वभव जाण, संभूतिविजय मुनि दान वखाण, कुमरते धनपति होई । वीर समीपे संयम लीधो, ततक्षण कर्महणीने सीधो, दिन प्रति वंदु सोई ॥६॥ पूर्वभव नागदत्त धनीसर, प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, महाबल नाम कुमार । संयम लेई कारज सार्या, भवसागरथी आतम तार्या, ते वंदु बहु वार ॥ ७ ॥ गृहपति पहले भव धर्मघोष, तिन प्रतिलाभ्यो अति संतोष, नाम मुनि धर्मसिंह । बीजे भव थयो भद्रनंदी, मुक्ति गयो भव बंधन छंदी, ते वंदु निसदीह ॥८॥ पहले भवजित शत्रु नरेस, प्रतिलाभ्यो धर्मवीर्य सुलेस, वली महचंद नाम कुमार । तिण छंडी बहु राजकुमारी पांचसे अपछराने उणीहारी, ते वंदु केवलधारी ॥ ९ ॥ विमलवाहन राजापूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुण-

स्तववरदत्त हुवो भवबीजे । संयम लेई सुरश्री पामी, कप्पंतरियो जे शिवगामी, कीरति तेहनी कीजे ॥१०॥ पूर्वभव देई दान उदार, बीजे भव थया राजकुमार, त्यां तजी पांच पांचसे नारी। सहु थया वीर जिनेश्वरसीस, सुखविपाके एह मुनीस, पंचमहाव्रत धारी ॥ ११ ॥ नमि[1] मातंगने सो मिल गाऊं, रामगुत्त सुदर्शन ध्याउं, नमु जमाली भगाली । किंकम पेलक फाल यतीजी, अंतगढ़ अंगे वायणा बीजी, ठाणा अंग संभाली ॥१२॥ पूर्व भव महापउम ते बीजे, तेतलीपुत्र[2] मुनि प्रणमीजे, महापउम[3] पुंडरीक तात । वली वन्दु जितशत्रु सुबुद्धी,

१ 'नमि' से 'फाल' (अंबडपुत्र) पर्यन्त दश नाम ठाणांग ठा० १० में कहे हैं ।

२ तेतलीपुत्रका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है।
३ महापउम जो पुंडरीक कंडरीकका पिता था उसका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्ययनमें कहा है ॥

कर्म हणी तिण करी विशुद्धी, ते मुनी वन्दु विख्यात ॥१३॥ मुनि जयघोष विजयघोष वांदु, बलश्री[1] नाम मृगापुत्र वांदु, कमलावती इषुकार[2] पुत्र पुरोहित वली तसु नारी, नाम जसा संवेगे सारी, वंदता नित्य जयजयकार ॥१४॥

ढाल ॥१३ मी ॥ चतुर विचारिये रे । एदेशी ॥

मुनि इसिदास[3] ने धन्नो वली वखाणीये रे, सुणक्खत्त कत्तिय संजुत्त। सट्ठाण शालिभद्र आणंद तेतली रे, दशार्णभद्र अइमुत्त ॥ १ ॥ मुनिगुण गाइये रे, गावंता परमाणंद । शिवसुख साध गुणे करी अहोनिस संपजे रे, भाजे भव

---

१ सुग्रीव नगरके राजा बलभद्र रानी मृगावतीका पुत्र बलश्री जो कि मृगापुत्र इस नामसे प्रसिद्ध था इसका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १९ में कहा है ॥२ इषुकारपुर नगर इषुकार राजा कमलावती रानी भृगुपुरोहित वशिष्टगोत्रवाली जसा नाम भार्या और इनके दो पुत्र यह अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १४ में कहा है ॥ ३ 'इसिदास' से 'अइमुत्त' पर्यन्त दश मुनियोंके नाम ठाणांगसूत्र ठा० १० में कहे हैं ।

भय दंद ॥ मुनि० ॥२॥ अणुत्तर अंग नी एहीज बीजी वाचना रे, ए दश मुनिवर नाम । नन्दी-सूत्रमें साधु सुबुद्धि पणे कह्या रे, नन्दीषेण अ-भिराम ॥ मुनि० ॥३॥ विषम नन्दी फल अधि-कार वली धन्नो मुनि रे, धन्नो देव धन्न तात । सुव्रता[1] समणी गुरुणी शिष्यणी पोटिल्ला रे, पुंड-[2] रीक कुंडरीक भ्रात ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ शिष्यणी सुभद्रा[3] केरी गुरुणी सुव्रतारे, पूर्णभद्र सुचंग । माणिभद्रने दत्त शिव बल मुनिरे, अणाढिय पु-प्फिया उपांग ॥ मु० ॥५॥ धन ते कपिल[4] जति अति निर्मल मति रे, तिण तज्या लोभ संताप । इन्द्रपरीक्षा अवसर उपशम आदरीरे, नमी न-

---

१ सुव्रताका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है ॥ २ पुंडरीक तथा कंडरीकका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्ययन तथा उत्तराध्ययन अध्ययन १० में कहा है ॥ ३ सुव्रताकी शिष्यणी सुभद्रा थी यह अधिकार पुप्फिया उपांग अध्ययन ४ में कहा है ॥ ४ कपिल का अधिकार उत्तराध्ययन ८ में कहा है ॥

भावे आप ॥मु०॥६॥ सुरवरसेवित श्रीहरिकेश[1] बलमुनि रे, संवर धार सुलेस। शक्रने प्रेर्यो परतिख संयम आदर्योरे, दशार्णभद्र[2] नरेस ॥मु० ॥७॥ मुनि करकंडु[3] राजा देश कलिंग नो रे, दुम्मुह पंचाल भूपाल। वली विदेही नामे नमि नरपति रे, नग्गई गंधार रसाल ॥ मु० ॥ ८ ॥ सिव[4] बीजो ने महाबल[5] ए सहु राजवी रे, व्रत लेई थया अणगार। काम कषाय निवारी शीतल आतमा रे, थिवर गंगेयो गणधार ॥मु०॥ ॥९॥ हवे श्रीवीर जिनेश्वर सीस सुहम्म गणी

---

१ हरिकेश नामसे प्रसिद्ध ऐसा बल नामका मुनि है, यह अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १२ में कहा है।

२ दशार्णभद्रका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४४ में कहा है। ३ करकंडु आदि चार मुनियोंका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४५ में कहा है॥ ४ शिवराजर्षिका अधिकार भगवती श० ११ उ० ९ में कहा है॥ ५ महाबलका अधिकार भगवती शतक ११ उ० ११ में कहा है।

रे, तास परंपर एह । जंबू प्रभवने वली शय्यंभव जाणिये रे, मनगपिया मुनि तेह ॥ मु० ॥ ॥१०॥ श्रीयशोभद्र ने मुनि संभूति विजय वली रे, भद्रबाहु थूलभद्र एम । अनेरा जिणवर आणा मांही जो हुवा रे, ते मुनि गाऊं सवंद ॥ मु० ॥ ॥११॥ सूयगडांग में साधु दोय कह्या रे, ठाणा अंग मांही चालीस । एकसोगुणंतर चोथे अंगे कह्या रे, भगवती दोय तीस ॥मु० ॥१२॥ पचास मुनि ज्ञाता मध्ये रे, अंतगड नेऊ होय । तेतीस साधु नवमे अंगे कह्या रे, एकवीस विपाकमें जोय ॥ मु० ॥ १३ ॥ रायपसेणी केसी समण वली रे, जंबूदीवपन्नत्ति रे माय । एरवयक्षेत्र तणा चक्री साधु सुहामणा रे, ते बंदू मनलाय ॥ मु० ॥ १४ ॥ दस साधु कप्पवडंसिया रे, पुप्फिया मांही सात । चवदे भिक्खू वह्निदशा रे, हूं वंदु दिनरात ॥ मु० ॥१५॥ बयालीस साधु उत्तराध्ययनमें रे, नन्दीसूत्रमें एक । आठ पाट

चोवीस मा रे, हूं गाऊं धरिय विवेक ॥ मु०
॥१६॥ सर्वे साधु मिलने थया रे, पांचसो इक-
वीस । पन्नरे सूत्रमें जो कह्या रे, ते वंदू निस-
दीस ॥ मु० ॥१७॥ काल अनंते मुनिवर मुक्ते
गया रे, संप्रति वरते जेह । नाण दंसण ने च-
रण कारण धुरंधरा रे, श्री देव वंदे तेह ॥मु०॥
॥१८॥

॥ कलश ॥

चोवीस जिणवर प्रथम गणधर चक्री हल-
धर जे हुआ। संसार तारक केवली वली समण
समणी संथुआ। संवेग श्रुतधर साधु सुखकर
आगम वचने जे सुण्या, दीपचन्द्र गुरु सुपसाये
देवचंद्रे संथुण्या ॥१॥

देवचन्द्रजीके गुरु दीपचन्द्रजी इनके गुरु ज्ञानधर्म गणि हुए यथा
ज्ञा-पाठक ज्ञानधर्म गणि पाठक श्रीदीपचन्द। तास सीस देवचन्द्र
; भगता परमाणंद ॥२०॥ यह दोहा प्रकरण रत्नाकर भाग प्रथमगत
चक्र विवरणका प्रशस्ति का है।

—०※०—

मंगलचन्द मालू

बीकानेर ।

पूज्य श्री श्री आचाय मुनिराजोंका स्तवन

॥ दोहा ॥

श्री पूज्य गुण वर्णन करूं, सुणो सभी चितलाय । छऊं पाटकी लावणी, जोडी चित्त लगाय ॥

श्रीहुकुममुनी महाराज हुवे अवतारी । म-हाराज ॥ जैनका धर्म दिपायाजी । जाने भोग छोड़ लिया जोग रोग करमोंका मिटायाजी ॥टेर॥ फिर दुतिय पाट शिवलाल मुनीको थाप्या ॥म०॥ क्रिया उद्धार करायाजी । कियो ज्ञान तणो उद्योत सभी कुं खोल सुणायाजी । फिर तृतिय पाट उदेसागरजी सोहे ॥म०॥ सभीको लागे प्याराजी । ज्याने चतुर्थ पाट मुनि चोथ-मल कुं दिया बिठाईजी ॥श्री०॥१॥ फिर पंचम पाट मुनि श्रीलाल तपधारी ॥म०॥ तेज सूर्य सम भारीजी । हुवे महा बड़े मुनिराज जिन्हों की जाऊं बलिहारीजी ॥ संवत उनीसे साल पिचंतर माहीं ॥म०॥ चेत वदी नम सुखकारी

जी । रतनपुरी मंजार पूजने चादर ओढाईजी ॥श्री०॥२॥ चतुर विध संग मिलाने महोत्सव कीनो ॥म०॥ सभीके आनन्द छायाजी । देश २ के आय जातरी उत्सव गावेजी ॥ फिर छठे पाट मुनी जवाहिरलालजी दीपे ॥म०॥ जैनमें वल्लभ लागेजो । ज्याने किया बहुत उद्योत भवी जीवन कूं तार्‌याजी ॥श्री०॥३॥ पंचमहाव्रतधारी परम उपकारी ॥म०॥ दोष बयालीस टालो जी । मुनि लावे सुजतो आहार । जाणे सब ही नर नारी जी। कल्पबृक्ष साक्षात महा मुनिराया ॥म०॥ चिन्तामणि चिन्ता चूरेजी। ये कामधेनु सम जाण जगतमें हैं सुखकारीजी ॥श्री०॥ ४ ॥ गुरू भाई मोतीलालजी जारी ॥म०॥ तपस्या माहे भारी जी । लालचन्दजी सन्त सभीमें हिमतधारीजी राधालालजी महाराज बहु उपकारी ॥म०॥ सताईस गुणके धारीजी । सिरदारमल श्रीचन्द उनोंका गुण कथ गाउंजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

चांदमलजी मुनी बेया बचधारी ॥म०॥ सुरज-
मल है सन्तोषीजी । करे ज्ञान ध्यान उद्योत रात
दिन सीखण तांईजी । शहर बीकाणे मांही आप
विराजो ॥म०॥ सभीका पुन्य सवायाजी । जो
नित करे आपकी सेव उसीका बेड़ा पारीजी
॥श्री०॥६॥ श्री रतनचन्दजी सन्त साथमें लाये
॥म०॥ सुरती मोहन गारीजी । सिरेमलजी ।
सन्त ज्ञानमें हैं भण्डारीजी । सिमरथमलजी महा-
राज बड़े हैं ज्ञाता ॥म०॥ सुत्रके हैं वे धारीजी
हैं पुनमचन्दजी शीश जिनोंकी महिमा न्यारीजी
॥श्री०॥७॥ ठाण दस तीजोजी महाराज विराजे
॥म०॥ जुमाजी हैं ब्रह्मचारीजी । सिलेकंवर
जी और जेठाजी सब गुणधारीजी । इन्द्रकंवर
जी पांनकंवरजी जाणो ॥ म० ॥ ज्ञानमें हैं ले
लीनाजी । ज्याने किया ज्ञानका थोक उनोंकी
महिमा भारीजी॥श्री०॥८॥कालकंवरजी फकी-
रकंवरजी जुं जे ॥म०॥ तपमें जोर लगावेजी

ज्याने कीवी तपस्या बहुत आतमा कूंय सुधारीजी । अणचकंवर महाराज बड़े जसधारी ॥ ॥म०॥ छोटाजी हैं गुणवन्ताजी । वाने दीवी रिद्ध छिटकाय ध्यान प्रभुसे लगायाजी ॥श्री०॥ ॥९॥ संवत उनीसे साल सीतंतर मांही ॥म०॥ आपने किया चोमासाजी । हुआ धर्म तणा उद्योत सभो जीवों हितकारीजी ॥ भायां बायांकी अरज आप सुण लीजो ॥म०॥ अरज कूं आन गुजारीजी । कल्पे सो चौमास आप बीकाणे कीजोजी ॥श्री०॥१०॥ पहले श्रावण सुदी मासके मांई ॥म०॥ चतुरदसी तिथने गाईजी । या करी जोड सुध भाव आपका गुणमें गावोंजी । मालु मङ्गलचन्द अरज करे सुण लीजो ॥म०॥ त्रिविधे शीश नमाइजी । जो भूल चूक इस मांय हुवे तो माफ करावोजी ॥ श्री० ॥११॥ इति ॥

रज़ा । कर दिया महाराज श्री, जिन धर्मका डंका बजा । वैसा नहीं कर पर सका, जिन धर्मका झंडा सजा ॥४॥ ऐ भविक संसारमें दुख के सिवा सुख है नहीं । जिस जगह देखो भरा सुख दुःख सागर है वहीं ॥ कर्मण्य या भवपार की, जिन धर्म बिन होती नहीं । पूज्य धर्मकी भक्ती विना, नर पतित होता सब कहीं ॥५॥ चारित्र में तप नियम संयम, कर सदा ये मुक्त हैं । पतित पावन जग उधारन, सलिल सम उपयुक्त हैं ॥ त्यागी तपस्वी निश्चयी, दृढ़ संयमी अभियुक्त हैं । जैन दर्शनके अलौकिक, ध्यानमें अनुरक्त हैं ॥६॥ महिमा अमित कहिको सकै, इस श्रेष्ट संत समाज़की । शान्ति यदि चाहे जगत, तो ले शरण महाराजकी ॥ मालू मंगल यूं कहै, जै घोष हो जिनराज़की, दया धर्मका झंडा उड़े, जै हो श्री महाराजकी ॥७॥ इति ॥

पूज्य श्री श्री जवाहिरलालजी महाराजका

स्तवन ।

धन्य वंदो पूज्य जवाहिरको, जिनकी कृपा भव तरना है। उनके गुण गौरव गरिमाकी, वर्णन करके को पार लहै ॥१॥ ये जीव चराचर पालक है, उपदेशक सद्गुण ग्राहक हैं। सद्-ग्रन्थोंके ये ज्ञाता हैं, जैनागमके व्याख्याता हैं ॥२॥ इनकी महिमा जग ज़ाहिर है, थलियोंमें आप विचरते हैं। नित नेम त्याग वैराग भरे, जिन धर्मके तत्व प्रकाशक हैं ॥३॥ जिन्हें धर्म दयाका ज्ञान नहीं, उन्हें करुणा करि समझावत हैं। मंगल गुरु महिमा गावत हैं, चरणोंमें शीश नमावत हैं ॥४॥

पूज्य श्री श्री जवाहिरलालजी महाराजका स्तवन।

राग माड़ ।

पूजराज तुम्हारी सूरत प्यारी। मोहन-गारी महाराज ॥ लीजो विनती म्हारी, आप

स्वीकारी । छो गुणधारी महाराज ॥ टेर ॥ देश मालवे मायनेरे । थानल शहर गुलजार ॥ ओस बंसमें उपनारे । जात कुवाड सिरेकार हो ॥पू०॥१॥ उगणीसे बत्तीस मेंरे । लीयो जन्म प्रमाण ॥ उगणीसे अड़तालीस बरसे । दिक्षा लीनी जाण हो ॥पू०॥२॥ पिता आपके जीवराजजी । नाथी बाई मात ॥ नाम आपका जवाहिरलालजी । सर्व भणी सुखदाय हो॥पू०॥ ॥३॥ साल पिचन्तरे मायनेरे । रतनपुरी मजार ॥ चेत बदी तिथ नम भलीरे । हुवा पूज पद धार हो ॥पू०॥४॥ च्यार खूंटमें बिचरता रे । करता उग्र बिहार ॥ घणा जीवाने तारता कांई । दयाधर्मकी जहाज हो ॥पू०॥५॥ गुरू भाई मोतीलालजी रे । सन्तो मांहे धीर ॥ शिष्य आपका बहु गुणवन्ता । है गहेरा गंभीर हो ॥पू०॥६॥ बाणी आपकी सुणनेरे । नर नारी हुंलसाय ॥ कीरती आपकी कहां तक केहुं

कहताने आवे पार हो ॥पू०॥७॥ सद्ध बीकाणो की बिनती रे । सुण जो गरीब निवाज ॥ जैसी कृपा है आपकी रे । वैसी सदा चित्त चाथ हो ॥ पू० ॥ ८ ॥ गुरू देवा प्रसादथी रे । साल सतन्तरजाण ॥ पटले श्रावण बदी दूजने रे । मंगलचन्द्र गुण गाय हो ॥ ९ ॥ इति ।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराजका स्तवन । पनजी मुढे बोल ।

प्यारा लागेजी २ ।

श्रीजवाहिरलालजी मुझ मन बसिया जी॥टेर॥ आप निकलिया थांदल शहरसुं । छती रिद्ध छिटकाईजी॥ धन २ हो महाराज पूज्यकी । जाउं बलिहारीजी ॥प्यारा०॥१॥ पिता आपका जीवराज़जी, माता नाथी बाईजी । थारी कूखमें जन्म लियो थे। हो अवतारीजी॥ प्यारा०॥२॥ समत अड़चासे गांव लीबड़ी । दिक्षा लीनी धारीजी, मगन मुनीपे संजम लेयने । कारज सारयाजी, प्यारा० ॥ ३ ॥ इस दुखियारे पञ्चम कालमें ।

स्वीकारी । छो गुणधारी महाराज ॥ टेर ॥ देश मालवे मायनेरे । थानल शहर गुलजार ॥ ओस बंसमें उपनारे । जात कुवाड सिरेकार हो ॥पू०॥१॥ उगणीसे बत्तीस मेंरे । लीयो जन्म प्रमाण ॥ उगणीसे अड़तालीस बरसे । दिक्षा लीनी जाण हो ॥पू०॥२॥ पिता आपके जीवराजजी । नाथी बाई मात ॥ नाम आपका जवाहिरलालजी । सर्व भणी सुखदाय हो॥पू०॥ ॥३॥ साल पिचन्तरे मायनेरे । रतनपुरी मजार ॥ चेत बदी तिथ नम भलीरे । हुवा पूज पद धार हो ॥पू०॥४॥ च्यार खूंटमें बिचरता रे । करता उग्र बिहार ॥ घणा जीवाने तारता कांई । दयाधर्मकी जहाज हो ॥पू०॥५॥ गुरू भाई मोतीलालजी रे । सन्तो मांहे धीर ॥ शिष्य आपका बहु गुणवन्ता । है गहेरा गंभीर हो ॥पू०॥६॥ वाणी आपकी सुणनेरे । नर नारी ८ साय ॥ कीरती आपकी कहां तक केहुं

कहताने आवे पार हो ॥पू०॥७॥ सङ्घ बीकाणो की बिनती रे । सुण जो गरीब निवाज ॥ जैसी कृपा है आपकी रे । वैसी सदा चित्त चाय हो ॥ पू० ॥ ८ ॥ गुरू देवा प्रसादथी रे । साल सतन्तरजाण ॥ पटले श्रावण बदी दूजने रे । मंगलचन्द्र गुण गाय हो ॥ ९ ॥ इति ।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराजका स्तवन । पनजी मुढे बोल ।

प्यारा लागेजी २ ।

श्रीजवाहिरलालजी मुझ मन बसिया जी॥टेर॥ आप निकलिया थांदल शहरसुं । छती रिद्ध छिटकाईजी॥ धन २ हो महाराज पूज्यकी । जाउं बलिहारीजी ॥प्यारा०॥१॥ पिता आपका जीवराज़जी, माता नाथी बाईजी । वारी कूखमें जन्म लियो थे। हो अवतारीजी॥ प्यारा०॥२॥ समत अड़चासे गांव लीबड़ी । दिक्षा लीनी धारीजी, मगन मुनीपे संजम लेयने । कारज सारयाजी, प्यारा० ॥ ३ ॥ इस दुखियारे पञ्चम कालमें ।

प्रगटे हो अवतारी जी ॥ तरन तारनकी जहाज पूज्यजी । हो गुणधारीजी ॥ प्यारा० ॥ ४ ॥ त्रीस छव गुण पूरण भरिया । घणा गुणोंकी खानोजी ॥ सब जीवोंने वल्लभ लागो । छो हितकारीजी ॥ प्यारा० ॥ ५ ॥ पूज्य नाम सरे सगला कारज । रोग सोग मिट जावेजी ॥ चरण कमल पड़ता ही घरमें । आनन्द थावेजी ॥ प्यारा० ॥ ६ ॥ मोतीलालजी गुरुभाई हैं । तपस्या माहें जारीजी । और सन्त रतनोंकी माला, हैं उपकारी जी ॥ प्यारा० ॥ ७ ॥ अजमेर शहर सुं आप पधारया । बीकानेरके माई जी ॥ दरशन करके श्रावक श्राविका । बहु हरखावेजी ॥प्यारा० ॥ ८ ॥ श्री पूज्यका दरशन चाहुं । नाम जपूं मन मांही जी ॥ मङ्गलचन्द दरशन को प्यासो । घणो हुलसाईजी ॥ प्यारा० ॥९॥

इति ।

श्रीश्री पूज्यश्री जवाहिरलालजी महाराजाका स्तवन

पूज्य चरण चित रम गयो, हो रम गयो रम गयो, रम गयो हो॥ श्री वीर प्रभूके पुत्र कही जै, नाम लिये भवसागर तरिये। प्रेम दया व्रत लै लियो हो ॥पूज्य०॥ १ ॥ शीतल चन्द्र समान शोभते, देखत भविजन हिय हरखाते। जैन धरम चित चाय गयो हो ॥पू०॥२॥ ज्ञान गंभीर सदा रंग-राते, मोह माया दुख देख भगाते। शंशय भीर हटा दियो हो॥ पू० ॥३॥ ज्वाहिर जाहिर जो जन वंदे, मन वांछित फलको वे पाते। सत्य जैन धरम, फैला दियो हो ॥ पू० ॥ ४ ॥ जैन धरम के ज्ञाता कहीजै, प्रेम मगन होय ज्ञानको दीजै। जिससे मान निकन्दन होय जावे हो ॥ ॥ पू० ॥ ५ ॥ पूज्य चरणको नित नित ध्याते, लुललुल उनको शीश नमाते। प्रेम मगन चित होय गयो हो ॥ पू० ॥६॥ मालू मङ्गल निश दिन तुम्हें नमते, तव मंगल जस नित २ गाते। मुझे आतम ज्ञान सिखा देवो हो ॥ पू० ॥७॥

पूज्य श्रीश्री जवाहिर लालजी महाराजका स्तवन ।

॥ राग माड ॥

पूज्य जवाहिरलालजी स्वामी, अन्तरयामी, शिव सुखगामी, तारो दीनानाथ ॥ टेर ॥ अरज करूं मैं थानें पुज्यजी । हरख हुवो है अपार ॥ समत बत्तीसमें, जन्म लीयो थे । शहर थांदले माय हो ॥ पू० ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत सोहे पुज्यजी । करता उग्र बिहार ॥ दोष बयालीस टाल मुनीश्वर । लावो सुजतो आहार हो पू० ॥२॥ काम धेनु सम आप पुज्यजी । सर्व भणी सुखदाय ॥ दरशन करके प्रसन होवे । सारालोक संसार हो ॥ पू० ॥ ३ ॥ ठाणा बारे सुं सोव्रो पुज्यजी । गुण रतनोकी माल ॥ महिमा आपकी कहां तक केहूं । कहेताने आवे पार हो ॥ पू० ॥४॥ प्रशन पूछे थांने पुज्यजी, स्वमती अन्यमति कोय ॥ शान्ति पणे सुं जवाब देवो थे । सामलो शीतळ थाय हो ॥ पू० ॥५॥

समत ऊगनीसे मांय पूज्यजी । साल सतीन्तर थाय ॥ दूजा श्रावण वदी दशमी कांई । मंगल चन्द्र जस गाय हो ॥ पू० ॥ ६ ॥ इति ।

पूज्य श्रीश्रीजवाहिरलालजी महाराजका स्तवन

देशी ॥ बटवा गुंथण देरे मिजाजीडा
बटवा गुंथण दे ॥

दरशन करवादे रे पूजका दरशन करवा दे । आज मारे आनन्द उत्सवको दिन पूजका दरशन करवा दे ॥ टेर ॥

सागर जिम गम्भीर पूज्यजी । शीतल चन्द्र समान ॥ कलपवृक्ष सम आप सोवता । महा गुणोंकी खान ॥ पू० ॥ १ ॥ सूरज सम उद्योत धर्मको । करता वरतो आप ॥ ज्ञान ध्यान बैराग तपस्या । करता प्रभूको जाप ॥ पू०॥ २ ॥ मीठी वाणी आपकी सरे । जैसे इमरत धार ॥ सुणता रिद्धि सिद्धि सम्पदा पामे । बर चार ॥ पु० ॥ ३ ॥ पञ्च महाव्रत प

पाचु मेरु समान। दोष बयालीस टाल मुनीश्वर। निरमळ जाको ज्ञान ॥ पु० ॥ ४ ॥ पांच प्रमादमें गूमीयो सरे। रात दिवसके मांय ॥ तेरे काठीया चित्त बल्लभ सा। क्यों कर दरशन पाय ॥ पु० ॥ ५ ॥ काम क्रोध मद लोभमें सरे। करता जै जैकार ॥ धर्म रतन पल्ले नहीं बांध्यो। क्यों कर उतरे पार ॥ पू० ॥६॥ विषे भोगमें भम रयोसरे। खान पान सुखकार बेटा बेटी कुटम्ब कबीलो। इणसे इधको प्यार ॥ पू० ॥ ७ ॥ राग द्वेष मोह जालमें सरे। भम रयो जीव अपार ॥ माया ममता मांही राच्यो। याको बड़ो विचार ॥ पू० ॥ ८ ॥ म्हारा ओगण गावता सरे। कहताने आवे पार। सब ओगुणमें पहलो नम्बर। खुले न मोक्ष दुवार ॥ पू० ॥ ९ ॥पूज २ श्री जवाहिरलालजी जग वच्छल महाराज। राधालाल चरणोंका चाकर, भव २ सारो काज ॥ पू० ॥ १० ॥

उनीसे सीतन्तर सालमें । बीकानेर चोमास ॥ चार तीरथमें नित सुख बरते । पूरो मनको आश ॥ पू० ॥ ११ ॥ इति ।

देशी ॥ सीया राम बुलालो, अयोध्या मुझे ॥

प्यारे प्रभुका ध्यान लगा तो सही ॥ इन पापों को दूर भगा तो सही ॥ टेर ॥ सो रहा किस नींदमें । जिसका न तुझको ज्ञान है ॥ आया था यहां पर किस लिये ॥ क्या कर रहा नादान है ॥ ऐसी नींदको वेग उड़ा तो सही ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ चार दिनकी चांदनी है । फिर अंधेरी आयगा ॥ साथ कुछ चलता नहीं । दौलत पड़ी रह जायगी ॥ ऐसी ममताको दूर हटा तो सही ॥ प्यारे० ॥२॥ मतलबके साथी हैं सभी । नहीं साथ तेरे जायंगे ॥ जब मोत तेरी आयगी । जंगलमें घर कर आयंगे ॥ जिन धर्मसे प्रेम बढ़ा तो सही ॥ प्या० ॥३॥ फिक्रको अब त्याग दे । दिलको लगाले ज्ञान

में ॥ आनंद चित्त हो जायगा । ऐसा मजा है ध्यानमें शिव रमणीसे नेह लगा तो सही ॥ प्यारे०॥४॥ हंसका कहाना यही । नित पापसे डरते रहो । फिरते रहो शुभ काममें, उपकार भी करते रहो । ऐसी बातोंका दिलमें जमा तो सही ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

अक्षरपद हीणो अधिक, भूलचूक कहीं होय ।
अरिहंत आतम साखसे, मिच्छा मि दुक्कडं मोय ॥

॥ अन्तिम मङ्गलम् ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥१॥ मर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैन जयतु शासनम् ॥२॥

दोहा—पोथी जतने राख जो, तेल अग्नि सु दूर ।
मूर्ख हाथ मत दीजिये, जोखम खाय जरूर ॥

* इति सम्पूर्णम् *